सम्पादक :

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक :

मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी

मु० हसन अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :

मासिक सच्चा राही!

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो० बॉ० नं० 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 787250

फैक्स : 787310

e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	25 US डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा कासमेरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

मार्च 2002 वर्ष 1 अंक 1

जो हाथ इन्सानियत की ख़िदमत के लिये नहीं बढ़ता वह मफ़लूज है, अगर इन्सान का काम काटना था तो कुदरत उसको बजाय हाथों के तलवार दे देती, अगर इन्सान का मक़सद ज़िन्दगी में सिर्फ माल जमा करना था तो उसके सीने में धड़कते हुये दिल के बजाय एक तिजोरी रख दी जाती।

(मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०)

☆ ☆ ☆

विषय एक नज़र में

✦ अपनी बात	*मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी*	3
✦ कुर्आन आपसे क्या कहता है	*मौलाना मु० मंज़ूर नुअ़मानी (रह०)*	4
✦ प्यारे नबी का प्यारी बातें	*मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी*	5
✦ रसूले अकरम	*अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी*	6
✦ नवीनीकरण व सुधार की आवश्यकता और इस्लामी इतिहास में उसकी निरंतरता	*हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)*	9
✦ एक बात	*सम्पादक*	10
✦ लेखक हज़रात से	*सम्पादक*	10
✦ प्रिय पाठकों से !	*सम्पादक*	10
✦ आज की इन्सानियत मोहताज है उसी दर की	*मौलाना मुहम्मदुल हसनी*	11
✦ तैबा में बरस्ती है घटा और तरह की	*सय्यद सलमान गैलानी*	13
✦ इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं न तुच्छ		13
✦ ईदुल अज़हा (बक़रईद की महानता)	*मौलाना मोहम्मद ख़ालिद नदवी*	14
✦ नअ़ूत शरीफ़		15
✦ बात प्रेम और भाईचारे की	*मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी*	16
✦ जहेज़	*अब्दुल करीम पारीख*	21
✦ हिन्दुस्तानी मुसलमानों का ख़मीर	*शमशुल हक़ नदवी*	23
✦ अध्यापिकाएँ और छात्राएँ	*अशरफ़ सुलताना एम.ए., बी.एड.*	25
✦ काश हम अब भी जाग जायें	*मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी*	26
✦ रिश्वत की लानत और हमारा इस्लामी समाज	*अबू अब्दुल्लाह*	27
✦ समाजी बुराईयों के कारण और समाज सुधार के तक़ाज़े	*नूरुलहुदा*	28
✦ विधवा का दूसरा विवाह		29
✦ शिक्षा और हुनर की उन्नति में इस्लाम की भागीदारी	*शैख़ अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ आले मुबारक*	30
✦ ईदुल अज़हा का सन्देश	*मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी*	33
✦ सुब्हानल्लाह	*मौ० मु० सानी हसनी*	34
✦ आपकी समस्याएँ और उनका हल	*मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी*	35
✦ बचपन से ही दाँतों की देखभाल ज़रूरी	*डॉ० राकेश अग्रवाल*	36
✦ क़ुदरत का इनआ़म गुलाब का फल		38
✦ मछली वाले नबी	*अफ़ज़ल हुसैन*	39
✦ दुआ़	*ज़फ़र अली ख़ाँ*	39

❐❐❐

अपनी बात

— मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम!

शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला है और बहुत मेहरबान है, अल्लाह नाम सबसे बुन्यादी और बड़ा है, इसके अलावा अल्लाह के 99 नाम हैं, उन नामों में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई का, अल्लाह की रहमत का और अल्लाह तआ़ला की उन सिफ़ात का ज़िक्र है जिनसे सारी मख़्लूक़ का फ़ाइदा जुड़ा हुआ है, जिनसे सारी मख़्लूक़ात की बक़ा व ज़िन्दगी है, और जिनसे यह दुन्या और यह सारा आलम क़ाइम है, अल्लाह तआ़ला की यह वह सिफ़ात हैं, जिनको अगर अल्लाह तआ़ला हमसे हटा ले तो न हम ज़िन्दा रहें और न हमारा कोई काम हो सकेगा, बल्कि यह दुन्या सारी सब ख़त्म हो जायेगी, कुछ बाक़ी न रहेगा, यह सब कुछ जो कायनात में है यह अल्लाह तआ़ला की उन ही सिफ़ात के असर से है जो उसके 99 नामों में बताई गई हैं।

अल्लाह तआ़ला इस सारी दुन्या को थामे हुए हैं और इसी से हमको सब कुछ हासिल है, लिहाज़ा हमारे लिये ज़रूरी है कि हम उसको याद करें, उसका नाम लें और उसके नाम से ही अपने सब काम शुरू करें, और कहें शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला और बहुत मेहरबान है। यह उसकी मेहरबानी ही है कि उसने हमको पैदा किया फिर हमारे माँ बाप के दिलों में वह महब्बत डाली जिससे उन्होंने दिन रात मेहनत करके और फ़िक्र करके हमको पाला, हमको तकलीफ़ों से बचाया, अगर उनमें अल्लाह तआ़ला ने यह महब्बत न डाली होती उनके दिलों में बाप वाली शफ़क़त और माँ वाली महब्बत न पैदा की होती तो वह हमको कहीं पड़ा हुआ छोड़ जाते फिर कोई जानवर आता और हमको मार डालता, हममें उसको ढकेलने और रोकने की भी ताक़त नहीं थी, फिर हम बड़े हुये और वह हमारी बराबर फ़िक्र करते रहे और जब हममें ताक़त आ गई और काम करना आ गया तो हम पानी की ज़रूरत उस पानी से पूरी करते रहे जो अल्लाह ने बादलों से उतारा, और ज़मीन के अन्दर पहुँचाया ताकि हम कुंए या हैन्डपम्प से निकाल कर अपनी पानी की ज़रूरत पूरी करें और हम अपने खाने की ज़रूरत उस ग़ल्ले और ग़िज़ा से पूरी करते रहे जिसके निकलने की सलाहियत अल्लाह ने ज़मीन में रखी अगर यह ज़मीन शोर हो जाती, ऊसर हो जाती, रेगिस्तानी हो जाती तो हम को कहाँ से ग़ल्ला मिलता, कहाँ से तरकारी सब्ज़ी मिलती, फिर अल्लाह ने हमारी गर्मी सर्दी का इन्तिज़ाम न किया होता तो क्या उसके बग़ैर हम ज़िन्दा रह सकते थे इनमें से कौन चीज़ है जिसको हम पैदा कर सकते हों हम जो कुछ भी हासिल करते हैं उन ही चीज़ों से हासिल करते हैं जो अल्लाह न इस ज़मीन में इन फ़ज़ाओं में हमारे लिये रखी हैं, यह चीज़ें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से न रखी गई होतीं तो हम न एक लुकमा खाना पाते न एक कतरा पानी, यह सब अल्लाह का दिया हुआ है, उसने यह सब हमको दिया है कि मेहनत करके तुम अपनी ज़रूरत के लिहाज़ से यह सब निकालो और इस्तेमाल करो लेकिन हम को मानो और यह न भूलो कि यह सब हमने तुमको दिया है, हमने तुम्हारे लिये पैदा किया है, बनाया है, हमारा नाम लो और समझो कि हमारे नाम के सिवा किसी और के नाम से तुमको कुछ नहीं मिलेगा, और अगर तुम यह समझोगे कि किसी और से या किसी और के नाम से मिलता है या मिल सकता है तो यहाँ दुन्या की ज़िन्दगी में तो हम तुम से यह चीज़ें नहीं छीनेंगे लेकिन मरने के बाद फिर जब तुम ज़िन्दा होगे और तुमको ज़रूरत पड़ेगी तो तुमको कुछ न मिलेगा, बल्कि दुन्या की ज़िन्दगी में तुमने जो हमको भुलाया है, उसका जवाब देना होगा और उसकी सज़ा और सख़्त सज़ा मिलेगी और अगर दुन्या की ज़िन्दगी में तुमने हमारे एहसान को माना था और हमारा नाम लिया था तो फिर तुम्हारी इस दूसरी ज़िन्दगी में तुमको हम और ज़ियादा और मज़ीद अच्छा सामान देंगे और आराम देंगे, तो लो नाम अल्लाह का जो रहम करने वाला है, और बहुत मेहरबान है और इसी बोल के साथ अपना काम शुरू करो तो बरकत होगी और फ़ायदा होगा। आज हम उसी नाम से यह हिन्दी परचा "सच्चा राही" शुरू कर रहे हैं जिसका मक़सद अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की याद दिलाना है और उसकी बन्दगी कराना है और उसकी रहमत व करम का मुस्तहिक़ बनने की तरफ़ तवज्जुह दिलाना है, अल्लाह तआ़ला हमारे इस अ़मल को क़बूल फ़रमाये और मुफ़ीद बनाये। आमीन!

●●●

कुर्आन आप से क्या कहता है

— मौलाना मु० मंज़ूर नुअ़मानी (रह०)

ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ (9:15 कुर्आन)

पवित्र कुर्आन में जगह-जगह पर तमाम इंसानों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक़्म है उसमें से एक सच्चाई भी है परन्तु कुर्आन सच्चाई का मतलब केवल यही नहीं मानता कि ज़बान से ग़लत बात न की जाए और सच बोला जाए। बल्कि इससे बढ़कर इसमें दिल की सच्चई और अमल की सच्चाई भी शामिल है, दिल की सच्चाई का मतलब यह है कि उसमें किसी प्रकार की धोखा धड़ी या कोई गलत बात न छुपी हो और अमल की सच्चाई यह है कि जो अक़ीदा (विश्वास) और सच बात हो उसी के अनुकूल अमल भी हो और दिल व ज़बान में पूरी समानता हो, जिन लोगों का यह हाल हो वही कुर्आन के अनुसार सादिक़ (सच्चे) हैं इस लिए कुर्आन कहता है कि इन्सान को ऐसा ही होना चाहिए और ऐसे ही लोगों के साथ रहना चाहिए।

इसी प्रकार सूर-ए-बकरः की आयत नम्बर 22 में सच्चाई की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि अल्लाह के नेक बन्दे वह हैं और असली नेकी उन्हीं की है जिन के दिलों में अल्लाह तआ़ला और अख़िरत के दिन और दूसरी ईमानी हक़ीक़तों पर ईमान हो और इस ईमान की वजह से वह अपना कमाया हुआ माल अल्लाह तआला के जरूरत मंद बन्दों, यतीमों, मिस्कीनों आदि पर ख़र्च करते हों और वादा पूरा करने वाले हों। इससे यह भी मालूम हुआ कि जिन लोगों को ईमान के साथ सच्चाई की विशेषता का गुण मिल जाए वह अल्लाह के नेक बन्दे हैं इसी लिए कुर्आन में जहाँ ईमान वालों के उन लोगों का जिक्र किया है जिनको अल्लाह तआला की निकटता मिलेंगी और जिन पर अल्लाह तआला का विशेष इनआम होगा उनमें नबियों के बाद सच्चे लोगों का ही जिक्र किया गया है।

सच्चाई की एक शक़्ल वादे को पूरा करना भी है इसी तरह अमानत भी एक शक़्ल है जिसे उर्दू मुहावरें में तो इसका मतलब केवल इतना ही समझा जाता है कि किसी ने जो चीज़ किसी के पास रख दी हो उसमें कोई ख़यानत और कोई बदनियती न की जाय और उस व्यक्ति की मांग पर यूंही उसे उसी तरह वापस कर दी जाय। और यह भी एक नेकी है लेकिन अरबी ज़बान और विशेष रूप से कुर्आनी मुहावरे में अमानत का मतलब इससे बहुत विचित्र है और तमाम तरह के हुक़ूक़ व फरायज़ का दयानतदारी के साथ अदा करना और हर बात को उसके मुनासिब रखना जिसे अल्लाह तआला इस प्रकार फर्माता है।

"बेशक अल्लाह तआ़ला तुमको हुक़्म देता है कि (तुम्हारे पास) जिनकी अमानतें हैं उनको वह अमानतें अदा करो।

इस आयत से मालूम होता है कि हर मुसलमान का फर्ज है कि यदि उसके पास किसी व्यक्ति की कोई भी अमानत हो या किसी का माली हक़ हो तो उसको पूरी दयानतदारी के साथ अदा करे और उसके अदा करनें में कोई कोताही और ख़्यानत न करे, यहां तक कि अगर कोई किसी मामले में उससे मश्वरह ले तो पूरी हमदर्दी के साथ मश्वरह दे, इसी तरह अगर किसी का कोई राज़ मालूम हो जाए तो उसको भी अमानत ही समझे और उसको जाहिर न करे।

इसी प्रकार कुर्आन में इस अमानत को अल्लाह के रसूलों और हज़रत जिब्रईल (अलै०) का विशेष गुण बताया गया है।

अतः अल्लाह के जिन बन्दों की यह चाहत और आरजू हो कि अल्लाह के नबियों और रसूलों और फरिश्तो जैसे गुण हो जायँ तो उन्हें चाहिए कि वह अमानत के गुण को अपनाएं और जिसका जो हक़ उनके जिम्मे हो और जो उनकी डियूटी हो उसको पूरी अमानतदारी और दयानतदारी के साथ अदा करें।

इसी प्रकार न्याय भी सच्चाई की एक किस्म है जिसका मतलब होता है कि हर व्यक्ति के साथ इंसाफ की बात कही जाए। जिस क़ौम या जिस समाज़ में इंसाफ न हो वह अल्लाह की रहमत से महरूम रहेगी और दुनिया में भी उसका अंजाम बहुत बुरा होगा। जिसे कुर्आन में इस प्रकार बयान किया गया है।

हमने अपने रसूल भेजे (जो) खुले-खुले अहकाम लेकर आए और उतारी हमने उनके साथ किताबें इंसाफ करने वाली ताकि लोग अपने मामले में इंसाफ से काम ले।

(सूरः हदीद-25)

इस आयत का मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों के साथ जिस तरह विभिन्न किताबें उतारी उसी तरह इंसाफ करने के कानून भी उतारे ताकि उसके बन्दे इन किताबों की रोशनी में उसकी रहनुमाई में आपस में इंसाफ से काम लें।

एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया है कि इंसाफ करो चाहे तुम्हारा कोई करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो जैसे-***"ऐ ईमान वालों हो जाओ खूब इंसाफ करने वाले और इंसाफ के मददगार और अल्लाह के लिए सच्ची गवाही देने वाले चाहे तुम्हारे ही ख़िलाफ़ पड़े या तुम्हारे माँ बाप और दूसरे रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ पड़े।'***

अतः ऊपर दी गई तमाम बातो का निचोड़ यह है कि सच्चाई का दामन हमें किसी भी मौके पर हाथ से न जाने देना चाहिए।

●●●

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनुवादक मुहम्मद सरवर फारुक़ी नदवी

1- हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया :-

सब से बड़ा झूठ यह है कि आदमी ने जिस चीज़ को देखा न हो उस के विषय में कहे कि मैंने इस को देखा है। (बुखारी)

2- हज़रत इब्ने असअ़द हज़रमी राज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को फ़रमाते हुए सुना है कि ***सबसे बुरी ख़यानत यह है कि तुम अपने भाई से ऐसी बात करो जिस में वह तुम को सच्चा समझ रहा हो जबकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो।***

3- हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी को झूठा होने के लिए बस इतना काफ़ी है कि वह सुनी हुई बात को बयान कर दे। (मुस्लिम)

4- हज़रत हसन बिन अ़ली (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि पुझे हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहिवसल्लम की यह बात याद है कि आप (सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ***जिस चीज़ में तुम को शक हो उस को छोड़ दो और उस चीज़ को अपनाओ जिसमें तुम को शक न हो। सच्चाई में इत्मीनान है और झूठ में बेइत्मीनानी है।*** (तिर्मिज़ी)

5- हज़रत बहज़ बन हकीम रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद और दादा के माध्यम से ज़िक्र करते हैं कि उन्होंने कहा मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है ***कि वह व्यक्ति बर्बाद हो जो लोगों को हंसाने के लिए झूठ बात करता है। उस की बर्बादी हो, उसकी बर्बादी हो।*** (अबूदाऊद)

6- हज़रत अब्दुल्लाह बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि ***एक दिन मुझ को मेरी वालिदा ने बुलाया उस समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरे घर में मौजूद थे, वालिदा ने फ़रमाया आओ मैं तुम्हें कुछ दूँ। तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरी वालिदा से फ़रमाया तुमने क्या देने के लिए बुलाया था। फ़रमाया अगर बुला कर कुछ न देतीं तो यह झूठ माना जाता।*** (अबूदाऊद)

7- हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ***बेचने और ख़रीदने वाले को उस समय तक वापरा करने का अधिकार है जब तक कि वह उस जगह से हठ न जाएं और वह सच बोले और बेचने वाली चीज़ का ऐब और उस का गुण बयान कर दे तो उन दोनों के लेन देन में बरकत होगी और अगर झूठ बोले और ऐब को छुपाए तो उन के लेन देन में बरकत ख़त्म कर दी जाएगी।***

(बुखारी, मुस्लिम)

8- हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया - ***जो व्यक्ति किसी को बदनाम करने के लिए उस में ऐसी बुराई बयान करे जो उस में न हो तो अल्लाहतआ़ला उसे दोज़ख की आग में क़ैद रखेगा यहाँ तक कि वह उस बुराई को साबित कर दे।*** (तबरानी)

9- हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया - ***क्या तुम जानते हो कि ग़रीब किसे कहते हैं*** सहाबा रज़ियल्लाहुअन्हुम ने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ***अपने भाई (की ग़ैर मौजूदगी में उस) के विषय में ऐसी बात कहना जो उसे नागवार हो।*** किसी ने पूछा अगर मैं अपने भाई की कोई ऐसी बुराई ज़िक्र करुँ जो हक़ीकत में उस के अन्दर हो (तो क्या यह चुग़ुल खोरी है) ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया! ***अगर वह बुराई जो तुम बयान कर रहे हो उसमें मौजूद हो तो तुम ने उसकी ग़ीबत की, और अगर वह बुराई उसमें मौजूद ही न हो फिर तुम ने उस पर आरोप लगाया।***

(मुस्लिम)

●●●

रसूले अकरम (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम)

– अल्लामा सय्यद सुलेमान नदवी

अरब देश में लाल सागर (Red Sea) के निकट लम्बाई में जो प्रदेश फैला हुआ है उसको हिजाज़ कहते हैं। हिजाज़ में दो बड़े नगर हैं, मक्का तथा मदीना। मक्का हमारे रसूल हजरत मुहम्मद (स्व० अ०) की जन्म भूमि, और मदीना उनके देहान्त का स्थान है।

मक्का में हज़रत इब्राहीम अलहिस्सलाम की बनायी हुई संसार की वह सबसे प्राचीन मस्जिद है जिसको लोग काबा कहते हैं। हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का व्यक्तित्व वह व्यक्तित्व है जिस पर यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम, संसार के तीन बड़े धर्मों का सिलसिला आकर समाप्त होता है। कुर्आन ने बताया कि मक्का का यह काबा संसार में खुदा की इबादत का सबसे पहला स्थान है, क्योंकि इससे पहले अरब, मिस्र, शाम, ईराक़, यूनान तथा यूरोप में जो इबादत गाहें थीं वह सितारों के नामों पर बनी थीं। भारत के मन्दिर देवताओं एवं देवियों के घर थे और ईरान की जमीन में अग्नि की ज्वाला थी।

मक्का में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान आबाद थीं जो पूर्वजों के धर्म से हटकर ईश्वर को भूल गई थीं। उनमें से एक प्रसिद्ध गोत्र (वंश) कुरैश का था। कुरैश वंश में हाशिम बड़े मशहूर हुए हैं। उनके पुत्र अब्दुल मुत्तलिब थे और उनके सुपुत्र अब्दुल्लाह थे। अब्दुल्लाह का विवाह कुरैश की एक प्रतिष्ठित महिला आमिना से हुआ उन्हीं से हमारे रसूल मुहम्मद (स०अ०) जिन पर खुदा के लाखों सलाम व दरूद हो) अरबी मास रबी-उल-अव्वल में सोमवार के दिन हजरत ईसा अलहिस्सलाम से 575 वर्ष बाद पैदा हुए। अभी माता के पेट ही में थे कि पिता स्वर्ग सिधार गये। सात वर्ष के हुए कि माता भी चल बसीं। असहाय बालक को दादा ने हृदय से लगाया। अभी कुछ ही वर्ष इस प्रकार व्यतीत हुए थे कि दादा भी चल बसे, और अब चाचा ने उनको अपनी गोद में लिया। यूँ आप (स०अ०) का बचपन व्यतीत हुआ। जवान हुए तो कारोबार की चिन्ता हुई। चचा का पेशा व्यापार था। आपने भी उनके साथ व्यापार का कार्य प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आपने सच्चाई, अमानत और दयानतदारी द्वारा बड़ी ख्याति अर्जित की। जिसको जो कुछ अपना माल रखना होता वह आपके पास रखवाता।

कुरैश में खदीजा नाम की एक धनवान विधवा थीं। जो योग्य एवं विश्वसनीय लोगों को व्यापार के लिए पूंजी देकर दूसरे देशों को भेजती थीं, तथा उससे जो लाभ होता था उसमें से कुछ स्वयं लेती थीं और कुछ उनको देती थीं। उनको जब आप (स०अ०) की दयानतदारी व ईमानदारी का पता लगा तो आप को व्यापार के लिए बहुत सी पूँजी देकर शाम देश में, जहाँ शामियों का राज्य था, भेजा। इस देशाटन में बड़ा लाभ हुआ। ख़दीजा बीबी आपकी दयानतदारी एवं इमानदारी से प्रभावित होकर आप पर न्योछावर हो गयीं और अरब की रीति-रिवाज के अनुसार विवाह का संदेश भेजा जो स्वीकार हुआ। उस समय आपकी आयु कुछ पच्चीस वर्ष थी। इसके बाद पन्द्रह वर्ष तक व्यापार के लिए भ्रमण करते रहे। शाम तथा यमन के नगरों में आते जाते रहे।

अब समय आया कि आप अल्लाह के रसूल बनकर संसार में प्रकट हों। मक्का के समीप पहाड़ में हिरा नाम का ग़ार था। आप उसमें कई-कई दिन तक अल्लाह से लौ लगाये अकेले बैठे रहते और ध्यान मग्न रहते। आख़िर वह घड़ी आयी कि ग़ार के अन्धकार में प्रकाश फैल गया तथा अल्लाह का फ़रिश्ता अल्लाह का संदेश लेकर उनके सामने प्रकट हुआ और शुभ संदेश दिया कि अल्लाह ने आपको अपना अन्तिम नबी बनाकर संसार में भेजा है, अल्लाह का नाम लेकर कार्य प्रारम्भ कीजिए। उस समय आपकी आयु चालीस वर्ष की थी।

यह अनोखा दृश्य देखकर आप घबराये और सीधे अपनी धर्म पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि० अन्हा) के पास आये और यह अचरज भरी घटना कह सुनायी। समझदार पत्नी सुनते ही सत्य बात पर ईमान ले आयी। वर्सवर्थ स्मिथ ने लिखा है कि "सच्चा हीरो वह है, जिसको उसके घर के लोग, जिनके सामने वह 24 घन्टे रहता है, हीरो मान लें। मुहम्मद रसूलुल्लाह जिन पर अल्लाह का सलाम व दरूद हो, संसार के सबसे बड़े हीरो थे। उन पर सबसे पहले ईमान लाने वाली, आपकी वह पत्नी थीं जिनकी दृष्टि में आप का कोई काम छुपा न था। उन्होनें कहा कि हे मेरे पति आप दुखियों का सहारा, बेघरों के स्वामी तथा निर्धनों के सेवक हैं। खुदा आपको यूँ बरबाद न करेगा।

आपके व्यवसायिक मित्र अबूबक्र (रज़ि० अनहो) दूसरे व्यक्ति हैं जो आपकी सच्चाई पर ईमान लाये। व्यवहार में मनुष्य की सच्चाई व्यवसायिक जीवन में बड़ी मुश्किल से जम सकती है। यह उन्हीं का साहसी हृदय है जो व्यवहार की कसौटी पर पूरे-पूरे उतरे। चूँकि हमारे हुजूर (स०अ०) इस कसौटी पर पूरे उतरे थे इसलिए आपकी सच्चाई की गवाही आपके जन्म के साथी ने दी।

ऐसे ही एक-एक दो-दो करके लोग इस जत्थे में आते गए जिसमें अधिकतर निर्धन, प्रपीड़ित, निःसहाय, दास तथा सरल स्वभाव के लोग थे। तीन वर्ष तक यह कार्यक्रम यूँ ही चुपके चुपके चलता रहा। तीन वर्ष के बाद अल्लाह का संदेश आया, कि अब समय आ गया है कि तौहीद (अल्लाह एक है) की आवाज को खुल्लम खुल्ला जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए, तथा गोपनीयता का पर्दा उठा दिया जाए। अब तक जो बात चुपके-चुपके कानों में कही जा रही थी वह पहाड़ियों पर चढ़कर, चट्टानों पर खड़े होकर तथा काबा के आँगन में बैठकर बड़े-बड़े लोगों के सामने भी धड़ल्ले से कही जाने लगी। मज़लूमों की सुरक्षा, दासों का पक्ष तथा निर्धनों की सेवा की पुकार हुई। पूँजीपति तथा महाजनों के अत्याचार, सम्राटों की तानाशाही और शक्तिशालों की कठोरता के विरुद्ध आवाज़ उठायी गई। सबसे बढ़कर यह कि आकाश तथा पृथ्वी हर दूसरी अनदेखी शक्तियों से इनकार करके केवल एक वास्तविक अल्लाह पर विश्वास, इस कार्यक्रम का मूल आधार ठहरा। पत्थर की मूर्तियाँ घरों से

निकाली जाने लगीं और मन्दिर पुजारियों से खाली होने लगे। जो दास थे वह बराबरी का दम भरने लगे जो शक्तिहीन थे, वह दैवी शक्ति के बल से वीर और जो कमज़ोर थे वह शेर बनने लगे एवं जो निर्धन थे वह उन्नति करने लगे।

कुछ ही समय बीता था कि मक्का के पूँजीपतियों एवं साहूकारों ने मिलकर अपना एक दल बनाया और सत्य के सेनानियों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार ढाने लगे। किसी के गले में रस्सी का फन्दा डाला। किसी को अरब की तपती हुई रेत पर लिटा दिया। किसी की छाती पर भारी पत्थर रक्खा। किसी को जलते हुए कोयलों पर लिटाया। किसी को मार-मार कर अधमरा किया। मगर सत्य का नशा ऐसा छाया था कि सब मुसलमानों ने इन कष्टों को प्रसन्नता पूर्वक सहन किया और मस्तक पर बल तक न आने दिया।

अन्त में एक दिन मक्का के सारे अमीरों ने मिलकर आप (स०अ०) के चचा अबूतालिव से कहा कि या तो आप अपने भतीजे को हमारे देवताओं और देवियों के विरोध में भाषण देने से रोकिए अन्यथा हम आपका सम्मान न करेंगे और हम जो भी कर पायेंगे कर गुज़रेंगे। हज़रत अबूतालिब ने भतीजे को बुलाकर लोगों की शिकायत सुनायी। हुज़ूर (स०अ०) ने उसको सुनकर जो उत्तर दिया उसकी ज्योति उस समय तक कम न होगी जब तक आकाश में सूर्य की चमक और चाँद की झलक बाक़ी है। कहा, "चचाजान यदि क़ुरैश के सरदार मेरे दाहिने हाथ पर सूरज एवं बायें हाथ पर चन्द्रमा रख दें तब भी मैं इस सत्य कार्य से अपना हाथ और इस संदेश से अपनी ज़बान कभी न रोकूँगा। चचा ने कहा, जाओ और सत्य का संदेश सुनाओ, जब तक मेरी जान में जान है कोई तुम्हारा बाल भी बीका नहीं कर सकता।

क़ुरैश यद्यपि आपके संदेश को सुनना नहीं चाहते थे मगर आप की सच्चाई को हृदय से मानते थे। एक दिन आपने 'सफ़ा' नामक पहाड़ पर चढ़कर अपनी क़ौम को आवाज़ दी और अरब की रीति के अनुसार एकत्रित किया। अपकी आवाज़ सुनकर सब लोग जमा हो गये। आपने कहा, "भाइयों ! अगर मैं यह कहुँ कि इस पहाड़ी के पीछे तुम पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना खड़ी है तो क्या तुम इस को सच मानोगे ? सबने एक आवाज़ होकर कहा हाँ, सच मानेंगे क्योंकि हमने अब तक तुम्हारी कोई बात झूठी नहीं देखी कहा, तो मैं तुमसे कहता हूँ कि अल्लाह के अज़ाब का बड़ा लश्कर तुम्हारे पीछे आ रहा है, अगर तुमने मेरी बात पर ध्यान न दिया तो वह अज़ाब (प्रकोप) एक दिन तुमको तबाह व बरबाद कर देगा। यह सनकर सब उठ गए।

क़ुरैश के रईसों ने अब अत्याचार करने की ठानी। सबने मिलकर तय किया कि मुहम्मद (स०अ०) को उनके वंशजों सहित किसी एक स्थान पर बन्दी कर दिया जाए उनसे कोई व्यापार न किया जाए, न लेन देन किया जाए, न आना जाना रखा जाए। इस प्रकार आप एक पहाड़ी की घाटी में कई वर्ष तक बन्दी रहे। बच्चे भूख से बिलकते रोते तो कठोर दिल रईस और पूँजीपति प्रसन्न होते। इन कष्ट के दिनों में पत्ते चबाकर एवं घास चूस चूस कर दिन व्यतीत किए। अन्त में एक दिन इन निर्दयी लोगों को अपनी निर्दयता पर स्वयं दया आ गई और हुज़ूर (स०अ०) को इस नज़रबन्दी से छुटकारा मिला।

चन्द रोज़ के बाद अबूतालिब आपके चचा जो आपके प्रत्यक्ष सहायक थे एवं आपकी पत्नी जो कष्टों में आप की सच्ची साथी थीं, उनकी मृत्यु हो गयी। अब क़ुरैश के सरदारों को कोई रोकने वाला न रहा। अरब के समीप हबशा अर्थात् अबीसीनिया का देश था। जहाँ का राजा जो नज्जाशी कहलाता था, वह एक नेक दिल ईसाई था। हुज़ूर (स०अ०) ने मुसलमानों को आज्ञा दे दी कि तुम में से जिसका जी चाहे वह हिजाज़ को छोड़कर हबशा चला जाये। इस प्रकार कुछ मुसलमान हब्शा चले गये। अरब से हब्शा के देश को जहाज जद्दा से जाते थे या यमन के किसी बन्दरगाह से। इस आने जाने का परिणाम यह हुआ कि इस्लाम धर्म का प्रचार यमन और हबशा तक पहुँच गया।

अब क़ुरैश के सरदारों ने आपको और भी कष्ट देना प्रारम्भ किया। मार्गों पर कांटे बिछाते, नमाज में जब झुकते तो पीठ पर गन्दगी का बोझ डाल देते कि उठ न सके। एक बार गले में फन्दा डालकर खींच रहे थे कि हज़रत अबूबक्र रज़िअल्लाह अनहो ने आकर आपको बचाया।

अब मक्का से निराश होकर आप मक्का के समीप के नगर ताएफ़ चले गये और वहाँ के सरदारों को अल्लाह की वास्तविकता का संदेश सुनाया। उन्होंने जनता को उकसाया कि आप पर पत्थराव करें। आपके दोनों पाँव रक्त से भीग गये और सड़क पर आप बैठ गए। एक सज्जन पुरुष ने आपको अपने बाग में आश्रय दिया तत्पश्चात् आप मक्का लौट आए।

मक्का में जहाँ काबा (अल्लाह का घर) है वहाँ वर्ष में एक बार मेला लगता था। अरब के कोने कोने से लोग इसमें आते थे। अब आपने यह नीति अपनायी कि इस अवसर पर एक एक क़बीले के पास आप जाते और अल्लाह की वास्तविकता सुनाते। कोई मानता कोई न मानता। इस प्रकार यह हुआ कि मक्का से बाहर अरब के दूसरे नगरों में भी इस्लाम पहुँच गया।

आपके नबी होने का बारहवाँ साल आया। अरब के नगर मदीना के कुछ रहने वाले हज को आये। मदीना में यहूदियों की बड़ी संख्या निवास करती थी तथा उनका बड़ा प्रभाव था। इन लोगों को यहूदियों के बीच आने वाले एक पैग़म्बर की भविष्यवाणी का हाल ज्ञात था। जैसे ही रसूलुल्लाह (स०अ०) का संदेश उन्होंने सुना वे विश्वास ले आये। दूसरे वर्ष के हज में वह और अधिक संख्या में आये और इस्लाम के प्रकाश से प्रकाशित हुए तथा यह बल दिया कि इस्लाम का केन्द्र मक्का से मदीना कर दिया जाए। आपने इसको स्वीकार किया एवं मुसलमानों को निर्देशित किया कि वह एक-एक दो-दो करके मदीना को प्रकाशवान कर जायें। अतः प्रत्येक ओर से मुसलमानों ने मदीना आना प्रारम्भ कर दिया। जो मुसलमान हबशा में थे वह भी वहीं आ गये।

क़ुरैश के सरदारों को जब ज्ञात हुआ तो उन्होंने एकत्र होकर यह फ़ैसला किया कि हर कबीले का एक-एक व्यक्ति जाए और एक साथ मुहम्मद (स०अ०) पर तलवारें चला कर उनका अन्त कर दें। यह सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुँची तो आपने हजरत अली रज़ी अल्लाह अनहोको अपनी शैय्या पर लिटा कर स्वयं अबूबक्र रज़ी अल्लाह अनहो को साथ लेकर मक्का से चल दिये। मक्का के समीप सौर नाम का एक गार था। उसमें कुछ दिन छुपे रहे। अगरचे क़ुरैश के जासूस हर

तरफ फैले हुए थे, परंतु अल्लाह पर भरोसा करके आप मदीना की ओर चल पड़े। इस प्रकार इस्लाम के इतिहास का एक नया अध्याय खुल गया।

कुरैश वालों ने जल कर यह किया कि मक्का में मुसलमानों के घरों तथा सम्पत्तियों को अपने अधिकार में ले लिया, और जो बूढ़े, बच्चे और औरतें मदीना न जा सकी थीं उनको मदीना जाने से रोक दिया तथा जो मुसलमान मदीना जा चुके थे उनको मक्का आकर काबा की ज़ियारत और हज करने से रोक दिया। कुरैश के लोग व्यापार करते थे। शामी देश के व्यापार का मार्ग मदीना के निकठ होकर गुज़रता था। मदीना के मुसलमानों ने इसके उत्तर में यह किया कि उनके व्यापारिक मार्ग को उनके लिए खतरनाक बना दिया। उनके दल जब आते जाते तो दस बीस आदमी जाकर उनको सताते। अन्त में दूसरे वर्ष बद्र की घटना घटी जिसमें मदीना के तीन सौ तेरह (313) मुसलमानों ने एक हज़ार कुरैशियों के बहादुर सैनिकों को युद्ध क्षेत्र में परास्त कर दिया। अब कुरैश और आम अरब के लोगों ने मदीना पर प्रत्येक ओर से हमला करना प्रारम्भ कर दिया तथा मदीना के मुसलमानों ने उनका उत्तर दिया। 6 वर्ष के बाद कुरैश ने अपनी व्यवसायिक परिस्थिति से आतंकित होकर मुसलमानों को पूरे अरब में इस्लामी आंदोलन चलाने की छूट मिल गयी। अब वह सारे अरब में फैल गये और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स०अ०) ने मिस्र, रोम, ईरान तथा हबशा के राजाओं एवं बहरैन के सरदारों को संदेश पत्र भेजे, और कुछ ही वर्ष बाद इस्लाम अरब के एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गया। दो वर्ष बाद सन् आठ हिजरी में दस हज़ार मुसलमानों ने मक्का की ओर प्रस्थान किया।

कुरैश का यतीम, मक्का का अशक्त एवं असहाय, जो मक्का से अकेला निकला था, उसने आठ वर्ष के बाद इस शान के साथ मक्का में प्रवेश किया कि दस हज़ार सैनिक उनके साथ थे। आप (स०अ०) काबा में प्रवेश करके धन्यवाद स्वरूप नतमस्तक हुए और अब कुरैश के कुछ सरदार आपके सामने थे, जिन्होंने आपको और मुसलमानों को हर प्रकार से कष्ट एवं क्लेष पहुंचाये थे तथा इस्लाम के मार्ग मे बाधायें डाली थीं। आपने उन सबसे पूछा 'बताओं आज आपके साथ क्या बर्ताव किया जाए। सबने कहा कि आप सज्जन आदमी हैं और हमारे सज्जन भाई के पुत्र हैं। आपने कहा, जाओ आज तुम सब स्वतंत्र हो मैं तुम को वैसे ही क्षमा करता हूँ जैसे हज़रत युसुफ़ (अ०स०) ने अपने निर्दयी भाइयों को क्षमा किया था।

अब आप जिस संदेश को लेकर आये थे वह पूरा हो चुका था। अरब के अंध विश्वास तथा धार्मिक आडम्बरों का सम्पूर्ण जाल टूट गया। बुतख़ाने सुनसान हो गये, पत्थर की मूर्तिया टूट फूट गयीं तथा ऐकेश्वरवाद का विश्वास अरब के कण कण में फैल गया। अरब का सम्पूर्ण पुराना विधान समाप्त कर दिया गया। ऊँच नीच का भेद भाव समाप्त हो गया। अच्छाई के अलावा प्राचीन अरब के घमन्ड को चकना चूर कर दिया गया। लड़ाइयों का अन्त हो गया खून का बदला लेने की भावना भी समाप्त कर दी गयी। स्त्रियों तथा बालकों पर अत्याचार रुक गये। विधवाओं को विवाह करने का अधिकार प्राप्त हो गया। बालिकाओं को बालकों के साथ सम्पत्ति में भागीदार ठहराया गया। शराब पीना, जुआ खेलना, सूद खाना, बदकारी जैसी बुराइयाँ समाप्त हो गयीं। लोग चन्द्र, सूर्य, तारे, पहाड़ एवं तालाब को अल्लाह का रूप समझते थे, इन सबका अन्त हो गया, तथा ऐसी क्रांति आयी कि जो अरब निवासी देवी, देवताओं, भूत-प्रेत आदि के अंध विश्वास में पड़े हुए थे, उन्होंने इन सबको अपने दिमाग से अलग कर दिया। रंग, भाषा, जाति, धन आदि का लोभ भी समाप्त हो गया और मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे, और एक ऐसे दल का रूप धारण कर लिया जो इस संदेश को लेकर अरब के कोने-कोने में पहुँचाने लगे।

आपने (स०अ०) अरब को 23 वर्ष के समय में आत्म शक्ति, व्यवहारिक जीवन, सत्य-आत्मा, तौहीद की वास्तविकता का बोध कराया। दासों को मालिक और चरवाहों को बादशाह बना दिया, जिन्होंने पूरे एक हज़ार वर्ष तक संसार में राज्य किया तथा अब भी संसार के बहुत भागों पर राज्य कर रहे हैं और वह वास्तविकता जो 1470 वर्ष पहले अरब के एक यतीम बच्चे के सीने में छुपी थी आज 40 करोड़ मनुष्यों के हृदय में वास कर रही है। अल्लाह के लाखों रहमतें उस महान पुरुष पर हों, जिसने मनुष्यों को मनुष्यों की दासता से निकाल कर केवल ऐकेश्वर की पूजा करना बताया, जिसने संसार को विश्वास के प्रकाश से भर दिया, जिसने सच्चाई एवं सत्य-मार्ग का ऐलान किया और हजारों कष्टों के बावजूद वास्तविकता की पताका को नीचा न होने दिया। अल्लाह-हो-अकबर।

❐❐❐

रसूल अकरम

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया-

"लोगो ! तुम्हारा परवर दिगार एक है, और तुम्हारा बाप भी एक है, तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से बने थे। अल्लाह के नज़दीक तुम में से सबसे अधिक सम्मान का पात्र वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा पाक बाज़ है। किसी अरबी को अजमी (गैर अरब) पर फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़वा (खुदा से डरना) की बिना पर।"

(नबी-ए-रहमत ४६६)

नवीनीकरण व सुधार की आवश्यकता और इस्लामी इतिहास में उसकी निरंतरता

- हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

ज़िन्दगी गतिशील और परिवर्तनशील है :

इस्लाम अल्लाहतआला का आख़िरी पैग़ाम है और वह सम्पूर्ण रूप में दुनियाँ के सामने आ चुका है और एलान किया जा चुका है कि-

"आज के दिन मैने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और दीन की हैसियत से इस्लाम को तुम्हारे लिए पसन्द कर चुका।"

5 : 3 कुरआन :

एक ओर तो अल्लाह का दीन मुकम्मल है, दूसरी ओर यह हक़ीक़त है कि ज़िन्दगी परिवर्तनशील है और उसका शबाब हर वक्त क़ाइम है।

इस रवाँ दवाँ ज़िन्दगी का साथ देने उसकी रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला ने आख़िरी तौर पर जिसदीन को भेजा है उसकी बुनयाद भले ही "सदैव के अक़ीदे और हक़ीकत पर आधारित है परंतु वह वास्तविक ज़िन्दगी से परिपूर्ण और गतिशील है इसमें अल्लाहतआला ने यह योग्यता रखी है कि वह हर परिस्थिति में दुनियाँ की रहनुमाई कर सके और हर मन्जिल पर साथ दे सके यह कोई विशेष काल या जमाने की संस्कृति या किसी विशेष दौर के यादगारों की ज़ीनत हो और अपनी निर्माण का हुनर नहीं जो उसी दौर की ज़िन्दगी खो चुका हो बल्कि यह एक ज़िन्दा दीन है जो अलीम व हकीम (सब कुछ जानने वाले, हिकमत वाले अल्लाह) मालिक की कुदरत का भरपूर नमूना है।

यह दीन चूँकि आखिरी और विश्व व्यायी दीन है, और यह उम्मत आखिरी और आलमी उम्मत है इसलिए यह बिल्कुल कुदरती बात है कि दुनियाँ के विभिन्न ज़माने के इन्सानों से इस उम्मत का वास्ता पड़ेगा जो किसी दूसरी उम्मत को दुनियाँ के इतिहास में पेश नहीं आया। इस उम्मत को जो जमाना दिया गया वह सबसे ज़ियादा परिवर्तनशील और इन्किलाबी है।

इस्लाम की रक्षा के ग़ैबी इन्तिज़ामात :

माहौल के प्रभाव का सामना करने के लिए अल्लाहतआला ने इस उम्मत के लिए दो इन्तजामात किए हैं। एक तो यह कि इसने जनाब रसूलुल्लाहि को ऐसी पूर्ण मुक्म्मल और जिन्दा शिक्षा दी जो हर ज़माने के उठने वाले फ़ितनें का मुक़ाबला कर सकती है और इस में हर जमाने के मसाइल को हल करने की पूरी योग्यता मौजूद हैं दूसरे उसने इस का ज़िम्मा लिया है (और उस समय का इतिहास इसका साक्षी है) कि वह इस दीन को हर दौर में ऐसे जिन्दा व्यक्ति प्रदान करना रहेगा जो इस शिक्षा को ज़िन्दगी में उतारते रहेंगे और व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से इस दीन को ताज़ह करते और इस उम्मत को अमल पर उभारते रहेंगे। इस दीन में ऐसे व्यक्ति के पैदा करने की जो योग्यता व ताकत है उस का इससे पहले किसी दीन से इज़हार नहीं हुआ और इस उम्मत ने दुनियाँ के इतिहास में अपना जो स्थान बनाया है वह दुनियाँ की किसी कौम या उम्मत का नहीं है और यह कोई अचानक ऐसा नहीं हुआ बल्कि यह अल्लाह का इन्तिज़ाम है कि जिस दौर में जिस योग्य व्यक्ति की जरूरत थी और ज़हर को जिस "तिर्याक" की इचछा थी वह इस उम्मत का प्रदान हुआ।

इस्लाम के दिल वा जिगर पर हमले :

शुरू ही से इस्लाम के दिल व जिगर पर ऐसे हमले हुए है कि दूसरा मज़हब इनकी ताब नहीं ला सकता, दुनियाँ के दूसरे धर्मों जिन्होंने अपने-अपने वक्त में पूरी दुनियाँ मे विजय प्राप्त की। इससे कम दर्जे के हमलों को संहार न सके, और उन्होंने अपनी हस्ती कतो गुम कर दिया, लेकिन इस्लाम ने अपने उन मुखलिफों को पराजय किया और कुफ्र और उस की शाखें, इस्लामी रुह, और उसके अकीदे (आस्था) के लिए बहुत बड़ा खतरा थी दूसरी ओर मुसलमानों को ज़िन्दगी से दूर करने के लिए सलीबियों का फ़ितना और तातरियों का हमला बिल्कुल काफ़ी था दुनियाँ का कोई दूसरा मज़हब होता तो वह इस अवसर पर अपनी तमाम योग्यता को खो बैठता और एक ऐतिहासिक घटना बन कर रह जाता लेकिन इस्लाम इन सब भीतरी और बाहरी हमलों को झेल गया, और उसने न केवल अपनी हस्ती काइम रखी, बल्कि ज़िन्दगी के मैदान में नई विजय हासिल की, अकीदे में तब्दीली के साथ घटाव; बढ़ाव का मर्ज़, दूसरे मज़हब का प्रभाव मूश्रिकाना आमाल, रुसूम, भौतिक वाद, स्वार्थ प्रता, ऐश परस्ती और सिकुलिरिज्म कानारा, आदि के इस्लाम पर बराबर हमले हुए और कभी-कभी ऐसा महसूस होने लगा कि शायद इस्लाम इन मामलों की ताब न ला सके और उनके सामने झुक जाए। लेकिन उम्मते मुस्लिमा के दिल व दिमाग़ ने सुलह करने से इन्कार कर दिया, और इस्लाम की रुह ने हार नहीं मानी हर दौर में ऐसे लोग पैदा हुए जिन्होंने संशोधन और खुराफात का परदा चाक कर दिया और हक़ीकी इस्लाम और "वास्तविक दीन" को उजागर किया, बिदआत और बाहरी प्रभाव के खिलाफ आवाज़ बुलन्द की, सुन्नत पर भरपूर जारे दिया और ग़लत अक़ीदे का हिम्मत के साथ

रद किया और मुश्रिकाना आमाल व रुसूम के खिलाफ एलानिया जिहाद किया वस्तु वाद और स्वार्थ परता के खिलाफ आवाज़ उठाई, ऐश परस्ती और अपने जमाने के घमण्डियों की जोर दार अन्दाज़ में निन्दा की और बड़े-बड़े बादशाहों के सामने हक़ का कलिमा बुलन्द किया अकल परस्ती को चूर-चूर करके इस्लाम में नई कूव्वत और मुसलमानों में नया ईमान, और नई ज़िन्दगी पैदा करदी, यह लोग दिमागी, इलमी अखलाकी और रुहानी तौर से अपने जमाने के गुणवान व्यक्ति थे और ताकतवर दिलवाले लोग थे। जिहालत और गुमराही के हर नये अन्धकार को दूर करने के लिए उन के पास कोई न कोई इलाज था जिससे उन्होंने अन्धकार को छाँट दिया और हक़ रोशन हो गया इससे साफ मालूम होता है कि अल्लाहतआला को इस दीन की हिफ़ाजत मन्जूर है और दुनियाँ की रहनुमाई का काम इसी दीन और दुनियाँ की रहनुमाई का काम इसी दीन और इसी उम्मत से लेना है और जो काम वह पहले ताज़ह नुबूवत और नबियों से लेता था, अब रसूलुल्लाहि के नाइबों (उत्तराधिकारियों) और उम्मत के नये-नये सुधारकों से लेगा।

मज़हब के प्रयत्नशील व्यक्तियों की आवश्यकता :

हक़ीकत में कोई भी मज़हब उस वक्त तक जिन्दा नहीं रह सकता उन विशेषताओं को जियादा दिनों तक बाक़ी नहीं रख सकता और बदलती हुई ज़िन्दगी परे असर नहीं डाल सकता, जब तक कभी न कभी उसमें ऐसे लोग न पैदा होते रहें जो अपने भरपूर यक़ीन रुहानियत, (अध्यात्मिकता) बे लौस हमदर्दी और अपनी बुलन्द दिमाग़ी तथा श्रेष्ठ योग्यताओं से शरीर में ज़िन्दगी की नई रुह फूंक दें और उस के मानने वालों में एक नये विश्वास और जोश व खरोश के साथ अमल करने की इच्छा उत्पन्न कर दें, जिन्दगी की कामनाएँ हर वक्त जवाँ है, स्वार्थ परता का वृक्ष सदा बहार है, फिर भी इसका इतिहास इसके प्रयत्नशील दाईयों और कामियाब सुधारकों से कभी खाली नहीं रही, जिन्होंने इस की जवानी को काइम और इसकी दावत को इस वक्त तक जिन्दा रखा है।

हर नेय फ़ित्ने और नये खतरे के लिए नए प्रभावी व्यक्ति व ताकत :

इस हक़ीकत से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस्लाम के इस विशाल इतिहास में कोई ऐसा जमाना नहीं पाया गया कि कभी भी इस्लाम की दअ़तव बिल्कुल बन्द हो गई हो, और इस्लाम की हक़ीकत परदह में छुप गई हो, उम्मते इस्लामिया का दिल मुर्दा हो गया हो और तमाम इस्लामी इतिहास पर अन्धेरा छा गया हो यह ऐतिहासिक वास्तविकता है कि जब कभी इस्लाम के लिए कोई फ़ित्ना उठा, उस को बदलने और अस्ली रूप से हटाने का प्रयास किया गया। या उसके गलत तरीके से पेश किया गया, पूँजीवाद का कोई हमला हुआ, तो कोई ताकतवर व्यक्ति ऐसा जरूर मैदान में आ गया जिसने इस फ़ित्ने का पूरी ताकत से मुकाबला किया और उसको मैदान से हटा दिया बहुत से लोग और आन्दोलन ऐसे है जो अपने वक्त में बड़े ताकतवर थे लेकिन आज उनका नाम व निशान केवल किताबों में ही सीमित है उनकी हक़ीकत का समझना भी आज मुश्किल है, कितने आदमी हैं जो 'एतिज़ाल', खल्के कुर्आन, वहदतुल बुदूद और अकबर के दीने इलाही की हक़ीकत से वाकिफ परिचित है जबकि यह अपने-अपने जमाने के बड़े अकल वाले समझे जाते थे लेकिन इस्लाम ने उन सब पर विजय प्राप्त की और कुछ दिनों के बाद यह आन्दोलन केवल सरकारी मज़हब बनकर रह गये जो केवल मालूमात और इतिहास की किताबों में ही सुरक्षित है। दीन की कोशिश और सुधार का यह काम उतना ही पुराना है जितना इस्लामी इतिहास और ऐसा ही है जैसे मुसलमानों की जिन्दगी।

●●●

एक बात

हिन्दी ज़बान में यह पत्रिका निकाल कर एक बड़ी दीनी और क़ौमी आवश्यकता पूरी करने की चेष्टा की गई है, अतः अपने पाठकों से अनुरोध है कि वह कोशिश करें कि यह आवाज़ हर उस घर तक पहुँच सके जो केवल हिन्दी भाषा जानता है, यह एक ऐसी आवश्यकता है जो मिल्ली व क़ौमी ज़िन्दगी के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

लेखक हज़रात से !

लेखक हज़रात से अनुरोध है कि वह अपने लेख काग़ज के एक ओर साफ़ साफ़ लिखें, लेखों की फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार न होगी तथा छपे हुये लेख भेजने का कष्ट न करें।

प्रिय पाठकों से !

मासिक पत्र "सच्चा राही" का पहला अंक आपके सामने है इसको लाभकारी बनाने में हम कितना सफल हैं इस विषय में अपनी राय अवश्य लिखें।

-(सम्पादक)

आज की इन्सानियत मुहताज है उसी दर्द की

- मौलाना मुहम्मदुल हसनी

इन्सानी तारीख़ में कोई शख़्सियत ऐसी नहीं है, जिसकी ज़िन्दगी दुन्या के तमाम इन्सानों के लिये हर जगह, कर काल और हर दशा में अनुकर्णीय हो, इस दुन्या में बहुत बड़े बड़े आदमी पैदा हुए, किसी ने मुल्कों को प्राजित किया, किसी ने अपने देश को स्वतंत्र कराया, और उसे उन्नति के उच्च स्थान पर पहुँचाया, इस सूची में बड़े बड़े फ़ल्सफ़ी, वैज्ञानिक, समाज सुधारक, रिफ़ारमर, राजनीतिज्ञ नेता, साहित्यकार और कवि सम्मिलित हैं, परन्तु सारा संसार जानता है कि इन में से हर एक का घेरा सीमित था, किसी का केवल अपने देश तक, किसी का केवल अपने अपने राज्य तथा प्रान्त तक, किसी का एक विशेष समाज तक, या विशेष काल तक, फिर इन में से किसी का जीवन ऐसा न था, जो सदैव के लिये और दुन्या के समस्त इन्सानों के लिये आदर्श बन सके और उसमें हर व्यक्ति के लिये मार्ग दर्शन तथा उपदेश की सामग्री हो और हर काल में कार्य योग्य हो।

यदि कोई बहुत अच्छा विजयी था तो उसका जीवन अत्याचार रहित न था, यदि कोई अच्छा सुधारक तथा नीतिज्ञ था तो नेतृत्व की योग्यता से ख़ाली था, यदि दार्शनिक था तो नैतिकताहीन तथा न्याय रहित था, अध्यातिमिकता प्रेमी था तो कर्मी जीवन से अपरिचित तथा ससांर के ऊँच नीच से बे ख़बर।

परन्तु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाह् अ़लैहिवस्सलम के पवित्र जीवन के अध्ययन से हम को दो वस्तुएँ विशेष रूप से दिखाई देती हैं, एक यह कि सामान्य सामाजिक जीवन से लेकर निजी ज़िन्दगी की छोटी छोटी बातों में भी हर कार्य के लिये मार्ग दर्शन पाया जाता है और ऐसा मार्ग दर्शन जो कियामत तक के लिये पर्याप्त है।

दूसरे यह कि इस पथ प्रदर्शन तथा मार्ग दर्शन का हर शीर्षक और आप की हर शिक्षा तथा निर्देश एक ऐसी जीवित अद्भुत लीला है कि यदि दूसरी चीज़ें न भी होतीं तो आप की अबदी रिसालत (सर्वकालिक ईश्वदैत्व) सत्यता तथा वास्तविकता के लिये वही एक चीज़ पर्याप्त थी।

वमा अरसल्नाक इल्ला रह़मतल्लिलआ़लमीन (नहीं भेजा हमने आपको मगर रहमत बना कर सारे जहानों के लिये।) का तक़ाज़ा भी यह था कि आप का जीवन हर प्रकार से परिपूर्ण, अमिट, व्यापी, सम्पूर्ण, क्रयात्मक तथा जीवन के हर विभाग में अद्वितीय और अनुपम हो।

संसार में सब से अधिक संख्या ईसाइयों की बताई जाती है लेकिन हज़रत मसीह के ज़ियादा से ज़ियादा पचीस दिन के हालात हमें मिलते हैं और वह भी छोड़ छोड़ कर अधूरे वह भी अप्रामाणित, यही दशा दूसरे धर्मों या नवीन राजनीतिक तथा आर्थिक सिद्धांतों और विचारों की भी है, अगरचि दूसरे मज़ाहिब का, कर्मी जीवन की वास्तविकताओं से कुछ अधिक सम्बन्ध नहीं दिखता और उनका बड़ा भाग सांग्रामिक कथाओं, मानवी प्रथाओं या देवमालाई व्याख्यानों तथा मूर्ति ज्ञान से भरा दिखाई देता है, और अर्थशास्त्र व राजनीत की रुचि इसी संसार में सीमित मालूम होती है, वह भी एक विशेष आर्थिक व्यवस्था या पार्टी सिस्टम बहाने से या बल से लोगों पर लादा रखा जाए, या उन के पेट भरने तथा काम भावनाओं को पूरा करने का अधिक से अधिक प्रबन्ध कर दिया जाए। इनमें से किसी के पास मनुष्य चलते फिरते, फेर बदल वाले, व्यापी, बहुमूल्य, कोमल, लचीले, रंग बिरंगे जीवन के लिये कोई विस्तृत लिखित अथवा मौखिक शिक्षा और उस शिक्षा का सम्पूर्ण उदाहरण प्राप्त नहीं, इस के समक्ष हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम के जीवन में आश्चर्यजनक हद तक जीवन की घटी बड़ी हर प्रकार की बातों और समस्याओं के लिये स्पष्ट, सम्पूर्ण तथा विस्तृत आदेश मिलते हैं जिन से साफ पता चलता है कि आपकी नुबूवत आख़िरी नुबूवत है और दुन्या की आइन्दा तारीख़ के लिये इसके सिवा अब और कोई प्रकाश पथ प्रदर्शन नहीं, जितनी विस्तारपूर्वक शिक्षायें और आदेश हमको कुर्आन हदीस और सीरत की किताबों में नज़र आती है, अगर उनके साथ कोई व्यावहारिक उदाहरण ना भी होता तब भी इनकी महत्व में कोई कमी न आती लेकिन इसके साथ न केवल हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम का क्रियात्मक उदाहरण मौजूद है, बल्कि, अ़श्र-ए-मुबश्शरः, अह़ले बद्र, ह़ज्जतुलवदाअ़ में सम्मिलित लोग, तथा दूसरे सहाबा के जीवन के उदाहरण भी मौजूद हैं जो सामूहिक रूप में आपकी शिक्षा और आपके आदेशों पर चल चुके हैं और एक ऐसे आदर्श समाज का उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं जिस की मिसाल तारीख़ के किसी ज़माने में और दुन्या के किसी धर्म के मानने वालों में नहीं मिलती।

कुर्आन मजीद की वह घोषणा जो ह़ज्जतुल वदाअ़ के अवसर पर की गई वह इस वास्तविकता का दर्पण है "आज के दिन तुम्हारे लिये तुम्हारे

दीन को कामिल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इनआ़म पूरा कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारे दीन बनने के लिये पसन्द कर लिया।''

लेकिन यह तालीम व हिदायत यह नमूना और जीवन प्रणाली और नुबूवत की यह दावत इस बात के लिये नहीं थी कि दुन्या की भौतिक चहल पहल में कुछ बढ़ोतरी हो, ईरानियों और रूसियों ने अगर इसमें कुछ क़सर छोड़ी हो तो वह पूरी हो जाय, नागरिकता की श्रेणियों और सांसारिक रंगरलियों में कुछ और उन्नति हो, दुन्या की यह ज़िन्दगी और सुख़ चैन से बीते, वह इसके लिये भी नहीं थी कि ग़रनाता, क़ुरतबा, इश्बीलिया और ताज महल का निर्माण हो, या युनानी फ़लसफ़ों के मोमी दीपों और कविता तथा साहित्य का कल्पनाओं से इस्लामी सभ्यता का कोई शीश महल तैयार किया जाय, अगर यह बात थी तो रूसी व ईरानी कुछ बुरे न थे और और यह अमीरीकी और रूसी भी कुछ ज़ियादा बुरे नहीं।

यह नबी का जीवन चरित्र इस बात के लिये था कि ऐसे अज्ञाकारी दास की भांति जीवन बना दिया जाए जो अपने वास्तविक मालिक का भक्त हो, उसका चाहने वाला हो, और उससे डरने वाला हो, उस का जीवन भय और आशा के बीच में हो, उस की कृपा पर उस का पूर्ण विश्वास हो और उस प्रकोप का पूरा भय हो, और जब कियामत में वह अपने अल्लाह के समक्ष खड़ा हो तो प्रसन्नता और मुतमइन्ना नफ़्स के साथ खड़ा हो।

''ऐ संतोषी आत्मा अपने पालहार की कृपा के स्थान की ओर चल और इस प्रकार कि तू उस से ख़ुश और वह तुझ से प्रसन्न तू मेरे संतोषी भक्तों में सम्मिलित हो जा।''

इस्लामी फ़ुतूहात (विजयों) इस्लामी शासनों की प्रबन्ध व्यवस्था, वैज्ञानिक उन्नतें सब इसी उपदेश और नबी जी की शिक्षाओं के प्रकाश में थी और मुसलमानों के समक्ष यह सन्तुलित माप सदैव रहता था। क़ुर्आन मजीद में एक स्थान पर यह आता है कि जब हम ने उन को शक्ति और सत्ता दी तो उन्हों ने नमाज़ काइम की, ज़कात दी, भलाइयों के आदेश देने और बुराइयों से रोकने का प्रबन्ध किया, दूसरी जगह है कि जो लोग ईमान और अच्छे काम अपनायेंगे उनको हम ज़मीन पर शक्ति भी देंगे और सत्ता भी प्रदान करेंगे, और उन को भय को शान्ति से बदल देंगे। इस दृष्टिकोण से यह दोनों बातें एक दूसरे के साथ अनिवार्य हैं।

इस बात को सामने रखते हुए जब हम आप की शिक्षा व रहनुमाई और अमली ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि शायद हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम की ज़िन्दगी का सबसे मुख्य भाग यही है, ग़ज़वात व सराया अर्थात जंगों पर नजर डालते हैं तो मालूम होता है कि आप का वास्तविक कमाल तो उसी के अन्दर है इन्सानी गुण देखते हैं तो आभास होता है कि शायद आप का सबसे बड़ा गुण यही है। घरेलू ज़िन्दगी पर नजर डालते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेम, मुहब्बत का हमदर्दी का नमूना यही है सहाबा के साथ आप का व्यवहार देखते हैं तो मालूम होता है कि आप की महबूबियत का राज़ यहीं छिपा हुआ है यहाँ उन तमाम गुणों की व्याख्या करना मुश्किल है। सीरत निगारों ने आप की ज़िन्दगी के हर क्षेत्र से सम्बन्धित जो व्याख्या की है उस में से केवल हज्जतुलवदा के विषय में लिखा है उससे यह सिद्ध होता है कि आपकी नुबूवत तमाम इन्सानियत के लिये है। जिसका मकसद यही है कि इन्सानी गिरोह का कोई भी भाग इससे महरूम न रह सके।

दूसरी चीज इन नबवी हिदायतों और शिक्षाओं की विशेषता है बात केवल इतनी ही नहीं कि हर मौके और हर हालत और मसले के लिए कोई न कोई शिक्षा या हिदायत जरूर दी गई हो चाहे उस की जरूरत हो या न हो, बल्कि अस्ल पहलू यह है कि आप की हर तालीम और हर सुन्नत और हर क़ौल व फेल (कर्म) इतना व्यापी सम्पूर्ण, प्रभावी, और लाभ दायक है कि यह किसी इन्सान के बस की बात न थी, क़ुर्आन मजीद ने इस भेद से परदा उठाते हुए यह कहा है :-

अनुवाद - और न आप अपनी खाहिशे नफसानी से बात बताते हैं उनका इरशाद निरी वही है जो उन पर भेजी जाती है। आपकी तमाम तालीमात और आमाल व अक़्वाल ऐसे हैं कि वही आसमानी और तलकीन रब्बानी के सिवा इसकी कोई तौजीह मुमकिन नहीं और साफ नजर आता है कि इतनी गहरी नजर इतना मुहीत व बे पायाँ इल्म इतनी बेकराँ शफकत किसी इन्सानी मखलूक का हरगिज हिस्सा नही हो सकती रसूलुल्लाह स० को मुखातब करते हुए क़ुरान पाक में इसी बात की तरफ इशारा किया गया है।

अनुवाद - इसलिये आपकी तालीम व हिदायत और आपका उसव-ए-हसनः खुद आप की सदाक़त की सबसे बड़ी दलील है और दीन की तकमील जामईयत और खत्मे नुबूवत और आपके पैगाम व दावत की अबदीयत व उमूमियत की सबसे खुली हुई और साफ अलामत है।

अगर कुछ लोग मगरिब की ज़ाहिरी रफ्तार- और दुन्या की बदलती हुई जरूरतों को देख कर यह समझने लगे हैं कि मौजूदा दौर में इस्लाम की दावत शायद अब ज़्यादा कारगर नहीं और अब इन्सानियत की चारासाज़ी उसकी क़ूवत से बाहर है तो उसका सबब सिर्फ मगरबीयत की मरऊबियत और इस चश्मये नूर से मुसलमानों की बे ताअल्लुकी और बे ऐतमादी है इसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे कोई डाकटर से नुस्खा लिखवाकर लाये लेकिन उसकी दवा खरीदने की कोशिश न करे या थोड़ा सा रुपया और मेहनत खर्च करके दवायें भी खरीद ले लेकिन घर आकर उसको ताक में रख दे बद परहेज़ी करता रहे और जो दवा दिन में पांच बार पीने के लिये बताई गई हो और उसके साथ बहुत सी हिदायत दी गई हों उसको एक बार भी न पिये या सिर्फ जुमा या ईद के रोज पी लिया करे और अगर पी भी ले तो इसके साथ बद परहेजी करता रहे फिर इसके बाद इसकी शिकायत करे कि यह नुस्खा फायदा नहीं करता।

हम में से बहुत से भाइयों का यह हाल है कि सीरत नबवी और सहाबा कराम के हालात का मुताअला किये बगैर वह अपने तहतश्शऊर में यह समझ रहे हैं कि जदीद दुन्या के मसायल में इसके पास कोई रहनुमाई नहीं है।

सीरत नबवी ऐसे तमाम लोगों को यह चैलन्ज करती है कि वह बतायें कि उनको ज़िन्दगी के किस शोबा में रहनुमाई दरकार है या वह कोन सा शोबा है जहाँ उनको कुर्आन व हदीस और सुन्नते रसूल से रोशनी नहीं मिल रही है और तहज़ीब का वह कौन सा हिस्सा और अख़लाक़ आलिया की वह कौन सी किस्म है जो नुबूवत की ममनूने एहसान नहीं।

मुसलमान अगर मज़लूम है पस्माँदा है मगरिब के मुक़ल्लिद है कमज़ोर व बेबस हैं तो यह कुसूर इसलाम का शरीअ़त का और सीरत नबवी का नहीं - यह कुसूर इन्सानियत के इस तबीब और रुहानी मुआलिज का नहीं है जिसने एक एक बात खोलकर बयान कर दी है और इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि अपने अमल से और अपने हज़ारों लाखों साथियों और जाँनिसारों के अमल से इसको बरत कर दिखाया और फ़तह व नाकामी अमन और जंग अक़लियत व अकसरियत तंगी व खुशहाली ख़लवत व जलवत हर हालत में इस पर चलने का तरीक़ा मुसलमानों को समझा दिया - हुज़ूर स० जिस सूसाइटी में तशरीफ रखते थे वह फरिश्तों की जमाअत न थी गोश्त पोस्त के उन इन्सानों की जमाअत थी जो दिल व दिमाग रखते थे, जज़्बात रखते थे उनको मुल्कों का इन्तिज़ाम करना पड़ता था सरहदों की हिफाज़त करनी होती थी तालीम की फ़िक्र करनी पड़ती थी हुदूद का इजरा करना पड़ता था नाज़ुक फ़ैसले करने होते थे - उनके अन्दर हर तरह के मसायल पैदा होते थे लेकिन हममें और उनमें जो अस्ल फर्क था वह इस नुस्खा के इस्तेमाल का था और हिदायत पर अमल के साथ इस नुस्खा के इस्तेमाल ने उनको उस मरतबा तक पहुंचा दिया कि फरिश्ते भी उन पर रश्क करें -

इस रोशनी में अगर हम सीरते नबवी का फिर से मुताला करें और यह देखें कि फतेह के वक्त आपको क्या कैपियत थी और दुआ के वक्त आप का क्या हाल होता था तायफ की वादी में आप पर क्या गुज़री और फत्हे मक्का में आपने अपने दुशमनों से क्या सुलूक किया इक़्तिदार से पहले आप का क्या रवय्या था इक़्तदार के बाद आपकी क्या रविश थी अंसार के साथ आप का क्या सुलूक था मुहाजिरीन के साथ क्या मामला था व फूद के साथ आप किस तरह पेश आते थे और सुल्ह व मुआहदा में आप का मसलक क्या था तो हम खुद इस नतीजे पर पहुंच जायेंगे कि इन्सानियत जिस तरह इस जमाने में आपकी हिदायत की मुहताज थी आज भी इसी तरह मुहताज है और जब तक यह दुन्या क़ायम है यह इहतियाज भी क़ायम रहेगी।

□□□

तैबा में बरसती है घटा और तरह की

-सय्यद सलमान गैलानी

चलती है मदीने में हवा और तरह की।
गुल और तरह के हैं सबा और तरह की।।

तेज़ी से फलें क्यों न निहालने मदीना।
होती है यहाँ नश्वुनमा और तरह की।।

हर आन यहाँ रहता है ईमाँ तरो ताज़ा।
पाती है यहाँ रूह ग़िज़ और तरह की।।

शादाब जो रखती है सदा दिल के चमन को।
तैबा में बरसती है घटा और तरह की।।

रखे अगर कोई यहाँ दोश दिलो जाँ।
हर सुबह ख़बर लाए सबा और तरह की।।

हर हर्फ़ को तू पाएगा आग़ोशे असर में।
होती है यहाँ तर्ज़े दुआ और तरह की।।

दो नफ़्ल पे एक उम्रे का मिलता है यहाँ अज्र।
देखी है मसाजिद में क़बा और तरह की।।

सर देने की हिम्मत है तो आ वर्ना पलट जा।
ज़ाहिद है रहे इश्क ज़रा और तरह की।।

कहने को तो यूँ लाखों वफ़ादार हैं सलमान।
सिद्दीक़ो उमर की है वफ़ा और तरह की।।

□□□

इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं न तुच्छ

इस्लाम में पेशे और सेवाएँ स्थायी हैसीयत नहीं रखती हैं कि उन्हें बदला न जा सके, न ही उनकी बुनयाद पर कौमों और तबकों का गठन होता है। लोगों ने विभिन्न समयों में ज़रूरत और सुहूलत के अनुसार कोई पेशा अपना लिया। कभी-कभी वह एक अवधि तक सीमित रहा और कभी कभी कई पीढ़ी तक चला। अब भी कुछ बिरादरियों में एक ही तरह का काम होता है। लेकिन न तो इसकी कोई मज़बही हैसीयत है और न वह मुस्लिम समाज का अटल क़ानून है। इन बिरादरियों में जो व्यक्ति जब चाहता है अपना पेशा और व्यवसाय बदल लेता है। और इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती और न इस्लाम में कोई पेशा घटिया दृष्टि से देखा जाता है।

मक्का-मदीना और अ़रब देशों में बड़े महान विद्वानों और प्रतिष्ठित मुसलमानों के नाम के साथ उस पेशा का नाम लगा हुआ है जो उनके पूर्वजों ने किसी ज़माने में इख़्तियार किया था, और इसमें न उनको कोई लज्जा महसूस होती है और न किसी दूसरे की निगाह में वह तुच्छ होते हैं।

□□□

ईदुल अज़्हा

(बक़्रईद की महानता)

- मौलाना मोहम्मद ख़ालिद नदवी

इस्लामी कलेन्डर का अंतिम महीना इदुलअज़्हा है जिसको आम तौर पर बक़्रईद भी कहते हैं। इस महीने के आने पर कुर्बानियों का महान विचार पैदा होता है जो अल्लाह तआला के नेक बन्दों का तरीका है। इंसानी बड़ाई की महानता इस महीने की महान कुर्बानियों से सम्बन्धित है। यूं तो पूरा महीना खुदा की शक्तियों और हिक्मतों को उजागर करने वाला है लेकिन प्रारम्भ के दस दिन की महानता का क्या पूछना। अल्लाह की दयालुता और अनुकम्पा उसके सेवकों पर किस-किस अन्दाज़ में प्रकट होती हैं और उसकी मेहरबानियां किस-किस प्रकार से उसके दामन को भरती हैं अहादीसे नबवी (नबी के कथनों) के आईने में उनकी झलकियां देखी जा सकती हैं।

यूं तो शुरू के दस दिन न केवल बरकतों और वरदानों से भरे हुए हैं बल्कि उसके साथ एक ऐसे महान संदेशवाहक (पैग़म्बर) हज़रत ईब्राहीम अलैहिस्सलाम के जोश, उनके समर्पण और कुर्बानी के इतिहास से जुड़े हुए है। उन्हें अपनी स्वाभाविक शिक्षा और अपने सन्देश के सर्वमान्य होने के कारण मुसलमानों को ही नहीं दुनिया की दूसरी कौमों का भी मार्गदर्शक समझा गया है। जहां तक इन दिनों की ग़ैर मामूली ख़ूबियों का सम्बन्ध है इस्लामी शिक्षा में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे व सल्ललम के कथनानुसार आईये इन बरकतों को प्राप्त करने की कोशिश करे। एक हदीस में कहा गया है "अच्छे कामों के लिए अल्लाहतआला (परम परमेश्वर) को कोई दिन इन दिनों से अधिक पसंदीदा नहीं (तिरमिज़ी) एक दूसरे अवसर पर हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने फ़र्माया "जिलहिज्जा के दस दिन अल्लाह ताआला के नज़दीक सबदिनों से उत्तम हैं, इन दिनों में इबादत (उपासना) अल्लाहतआला को सब से अधिक पसन्द है। अतः तुम इन दिनों में अधिक से अधिक ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहुअकबर कहते रहो, अल्लाह के नाम का जाप बहुत करते रहो और इन दिनों में एक रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर है और नेकियों का सवाब सात सौ नेकियों तक है। इस अशरे (दस दिन) में नवीं तारीख़ जिसे अर्फ़ा कहा जाता है एक महत्वपूर्ण दिन है। इस ख़ास दिन के कर्मो की बड़ाई बहुत ही प्रभावशाली रूप से बयान की गई है। रसूले मक़बूल सल्ल० ने फ़र्माया "अर्फ़ा के दिन अल्लाहतआला की रहमत (कृपा) अपने बन्दों से बहुत क़रीब हो जाती है। अल्लाहतआला अपने बन्दों और उन के बरकत वाले कर्मों को फ़रिश्तों के सामने रखते हैं और कहते है, फ़रिश्तो देखों यह हैं मेरे बन्दे" इस दिन के रोज़े के सम्बंध में कहा गया है "जो व्यक्ति अर्फ़ा के दिन (अर्थात नवीं ज़िल हिज्जा) रोज़ा रखेगा अल्लाह तआला उस रोज़े की बरकत से एक साल पहले और एक साल बाद के गुनाहों का कफ़्फ़ारा (बदला) बना देगा।" (मुस्लिम)

"ईद तो यह है कि इंसान में कुबूलियत, ताबेदारी और अल्लाह की इबादत के चिन्ह पाये जाएं और गुनाहों के कफ़्फ़ारा के लिए कोशिश की जाए। बुराईयों को नेकियों से बदलने के लिए कोशिश हो, दिल में (ख़ुशी के तेहवार) ईमान और यक़ीन की शक्ति हो।"

इस्लाम का महान रुक्न हज़ को अदा करने के लिए लाखों इंसान इसी तारीख़ में अरफ़ात के मैदान में अपने मालिक (अल्लाह) के सामने जमा होते हैं तो दिल की गहराइयों से अपने मालिक को याद करते हैं, कभी रहमत पर्वत को देखते हैं और इसी ख़्याल में खो जाते हैं कि इस तारीख़ में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम ने इसी पहाड़ी के दामन मे अपने एक लाख से अधिक जान निछावर करने वालों के साथ क़ियाम फ़रमाया था, अल्लाह के हुज़ूर में गिड़गिड़ा कर दुआएं की थीं अतः हाजी लोग नंगे सिर चिलचिलाती धूप में अल्लाह के हुज़ूर (सामने) खड़े होकर दुआओं में लीन रहते हैं। जो हज में नहीं गए हैं उनको इस दिन रोज़े रखने के लिए उत्साहित किया गया है। अतः इस दिन ख़ास तौर पर रोज़ा रखना चाहिये। अलबत्ता इस महीने का 10,11,12,13, इन चारों तारीख़ों में रोज़ा रखने की मनाही की गई है। इन दिनों में रोज़ा रखना हराम है। जिलहिज्जा के अशरा (दशम) की इन महानताओं का ध्यान कीजिए और तिलावत कीजिये (क़ुर्आन मजीद पढ़िये) अल्लाह का कथन है अनुवाद - क़सम है फ़ज्र की और दस रातों की अधिकांश व्याख्या करने वालों ने इससे अर्थ ज़िल हिज्जा की इन्हीं दस रातों से लिया है। तो जिस अशरा (दशम) की पैदा करने वाले ने क़सम खाई हो उसकी बड़ाई का क्या पूछना लेकिन अफ़सोस यह पूरा अशरा हमारी ग़फ़लतों का शिकार हो जाता है। कुर्बानी के जानवरों की ख़रीदारी, पुलाव, ज़र्दा बिरयानी, क़ोरमा और दूसरी चीज़ों को जुटाने में हमारा सारा समय व्यतीत हो जाता है और इस ओर ध्यान नहीं दे पाते हालांकि क़ुर्बानी करने से पहले आवश्यक था कि अपनी वासनाओं और इच्छाओं की क़ुर्बानी पेश करते क्योंकि ईदुलअज़्हा की क़ुर्बानी आज्ञापालन, स्वीकर्ता निहित है।

अल्लाह तआला का कथन है हरगिज़ अल्लाहतआला को कुर्बानी को जानवर का गोशत और ख़ून नहीं पहुंचता तक़वा (परहेज़गारी) ख़ुदा के यहां पहुंचता है अर्थात अल्लाह के दरबार में यही स्वीकार होता है और रोज़ा इसी आज्ञा पालन और ताबेदारी का नाम है। रोज़ा के इसी ताबेदारी की व्याख्या और प्रभावशलिता को बयान किया गया है और कुर्बानी से पहले क़बूल हो जाता है। इस्लामी ईद का अर्थ भी यही है ताकि अधिक से अधिक आज्ञापालन और बन्दगी का विचार क़ायम हो, अपने गुनाहों को याद किया जाए और अपने मालिक की अनुकम्पा का शुक्रिया अदा किया जाए उसके शुक्र का तरीक़ा अपना बनाया हुआ नहीं है बल्कि उसने स्वयं कहा - **अनुवाद** - और यह इसलिए है ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो"

यही कारण है कि ज़िलजिज्जा के अशरे में अधिक से अधिक अल्लाहुअकबर और लाइलाह इल्लल्लाह कहने का हुक्म दिया गया है बल्कि नवीं तारीख़ की सुबह की नमाज़ से तेरहवीं तारीख़ की अस्र की नमाज़ तक तकबीर कहना वाजिब (अनिवार्य) क़रार दिया गया है चुनानचे हर फर्ज नमाज़ के बाद नमाज़ी/मुक़्तदी चाहे अकेला क्यों न हो बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहेंगे :-

"अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इलाह इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर अल्लाहुअकबर वलिल्लाहिल हम्द"-अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है, और अल्लाह ही के लिए सारी तारीफ़ है मर्दो को बुलन्द आवाज़ से और औरतों को नीची आवाज़ से तकबीर कहना वाजिब (अनिवार्य) है यदि अकेले नमाज़ पढ़ रहा है तो भी तकबीर कहेगा। शेख़ अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक गुनयतुत्तालिबीन में लिखा है:-

"ईद तो यह है कि इंसान में क़ुबूलियत, ताबेदारी और अल्लाह की इबादत के चिन्ह पाये जाएं और गुनाहों के कफ़्फ़ारा के लिए कोशिश की जाए। बुराईयों को नेकियों से बदलने के लिए कोशिश हो, दिल में (ख़ुशी के तेहवार) ईमान और यक़ीन की शक्ति हो।" ज़ुहदुस्सालिकीन में लिखा है" ईदैन में मोमिन और काफ़िर दोनों शरीक होते है और हर एक के लिए अपनी अलग-अलग ईद है। मोमिन की ईद तो अल्लाह को राज़ी रखना है और काफ़िर की ईद खेल तमाशा बेहंगम खुशी है। मोमिन तो अपनी ईदगाह की तरफ़ जाता है और उसके सिर पर हिदायत का ताज होता है और उसकी आंखों में सीख और ध्यान का चिन्ह होता है और उसके हृदय में मोक्ष का प्रकाश होता है।

वास्तव में ईदुल अज़हा इन्हीं जज़्बों को तीव्र करने का साधन है लेकिन कुछ लापरवाही, जिहालत और कुछ देश के अन्य भागों की नक़्क़ाली और साथ ने इस जज़्बे को सिरे से समाप्त कर दिया है। हमारे लिए ज़रूरी है कि इस जज़्बे को उजागर करते रहा करें और ईदुल अज़हा के आने से पहले इस विचार को जुमे के ख़ुतबों (उपदेशों) के द्वारा आम करने की कोशिश की जाए। इस सिलसिले में मस्जिद के इमामों को ध्यान देना चाहिये और मुख्यतः इस अवसर पर भी सादगी का ख़्याल रखना चाहिये और नाम व दिखावे से बचना चाहिये। बकरे की ख़रीदारी में बाज़ जगहों पर धनी लोगों में जो एक दूसरे से बढ़ जाने की होड़ पाई जाती है कि फ़ुलां का बकरा पांच हज़ार का है तो हमारा बकरा दस हज़ार का होगा और उसमें बेजा ख़र्च की हद तक अपना धन लगाकर बरबाद किया जाता है। वर्तमान परिस्थित में इससे बचना चाहिये। जानवर एक हज़ार में अच्छे मिल जाएंगे अगर बाक़ी पैसे से किसी यतीम की सहायता हो जाए किसी बेवा की मदद हो जाए तो यह बड़ा महान काम होगा। दुनिया की निगाह में इसकी वाह-वाह शायद न हो सके लेकिन अल्लाह की नज़र में इस का बड़ा ऊँचा स्थान है।

अनुवादक :- हबीब उल्लाह आज़मी

□□□

नअ़त शरीफ़

ख़ातिमुल अँबिया ख़ातिमुल मुर्सलीं,
अशरफ़ुल अँबिया सय्यदुल मुर्सलीं
जिन का तक्या हुआ रब का अर्शे बरीं
इस जहाँ में जो हैं आज तैबा मकीं

वह हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उनपे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

जिसने मेराज में रब से की गुफ़्तुगू
जिस को उम्मत की वाँ भी रही जुस्तुजू
ऐसा मुश्फ़िक़ जहाँ में न देखा कभू
देखो क़ुदरत ख़ुदा की कहो अल्ला हू

वह हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उनपे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

तुहफ़ा मेराज का पँजगाना नमाज़
हो अदा दिल से बस वालिहाना नमाज़
बस पढ़ो फ़र्ज़ो नफ़्ल आ़बिदाना नमाज़
उ़स्र में युस्र में ज़ाहिदाना नमाज़

वह हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उनपे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

जो कि कहते हैं बस ऐ नबी ऐ नबी
उनके रस्ते पे चलते नहीं हैं कभी
करते अल्लाह से हैं ख़ुली दिल लगी
ख़ुश नहीं उनसे होंगे कभी भी नबी

वह हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उनपे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

छोड़ दीं बाप दादा की रस्में सभी
ताकि सुन्नत पे साबित रहूँ ऐ नबी
छोड़ दूँ आपको ये तो मुम्किन नहीं
जान जाये जो इसमें तो परवा नहीं

वह हैं ख़ैरुल बशर और ख़ैरुल अनाम
उनपे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

●●●

बात प्रेम और भाईचारे की

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

अनुवादक :- हबीबुल्लाह आज़मी

मैं अध्यक्ष महोदय और आप सब लोगों के प्रति आभारी हूँ कि आपने मुझे इससे पहले कभी देखा नहीं, शायद सुना भी न हो, फिर भी आपने मुझे जो सम्मान दिया और मेरे बारे में जो उत्साहवर्द्धक शब्द कहे उससे मैं अपने अन्दर एक खुशी महसूस करता हूँ और इससे मेरा हौसला बढ़ा है इन्सान सिर्फ खाने का, कपड़े का और पैसे का मुहताज नहीं है। उसकी भूख और प्यास सिर्फ पैसे और खाने पीने की चीज़ों से नहीं जाती। वह सबसे ज़ियादा भूखा प्रेम का है अगर इन्सान को इस दुनिया में यह न मिले और सब कुछ मिल जाये तो यह दुनिया ऐसी मालूम होगी जैसे कोई म्यूज़ियम में गया हो जहाँ सब कुछ देखते हैं और हाथ कुछ भी नहीं लगता। वहाँ से खाली हाथ आते हैं। मुहब्बत से इन्सान अपनी थकान भूल जाता है। गुस्सा भूल जाता है दुख दर्द भूल जाता है मुहब्बत ऐसी चीज़ है जिससे आदमी अपनी बीमारी भूल जाता है। इन्सान असल में मुहब्बत और प्रेम का भूखा है। मैं आप सब भाइयों के प्रति आभारी हूँ कि आपने मुझ पर विश्वास करते हुए ऐतबार किया।

इस ज़माने की बहुत बड़ी बीमारी यह है कि आदमी को आदमी का ऐतबार नहीं रहा, और हमारे राजनीतिज्ञों ने (खुदा इनको माफ़ करे और इनसे अच्छे काम ले) ऐतबार खो दिया है। अपना ऐतबार तो खोया ही दूसरों का ऐतबार भी इन्होंने कमज़ोर कर दिया। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा। आदमी डरता है कि मालूम नहीं कौन सी मतलब की बात कही जायेगी और अब तो लोगों का यह हाल हो गया कि लोग यह मानने के लिए तैयार नहीं कि बेमतलब की कोई बात कही जा सकती है। या दुनिया में कोई एक आदमी भी ऐसा निकल सकता है जो अपने मतलब (स्वार्थ) की बात न कहे। जो अनुभवी लोग हैं वह कहते हैं कि मतलब की बात ज़रूर आती है। फ़र्क सिर्फ समय का है। कोई फूँहड़ होता है जल्दबाज़ होता है वह जल्दी मतलब की बात कह देता और कोई ज़रा समझदार और सयाना होता है, वह देर में मतलब की बात कहता है। कोई अभी कह देगा, कोई शाम को कहेगा, कोई कल कहेगा, कोई छः महीने बाद कहेगा। मगर कहेगा ज़रूर। अब दुनियाँ को ऐतबार जाता रहा। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा। तो मैं आपके प्रति आभारी हूँ कि यहाँ पहली बार आया आप मुझे जानते नहीं फिर भी आपने अपने भाई का ऐतबार किया। उन्होंने कहा कि एक भाई आने वाले हैं वह कुछ अच्छी बातें कहेंगे। आप अपना काम-काज छोड़कर यहाँ इतनी बड़ी संख्या में जमा हो गये। यह बात हौसला बढ़ाती है, और यह दुनियाँ हौसला हिम्मत पर ही चल रही है वरना दुनियाँ का हाल तो यह है कि आदमी कपड़े फाड़कर जंगल को निकल जाय। पागल हो जाय और इन्सान अब किसी काम का रहा नहीं। आपने सुना होगा कि दुनियाँ उम्मीद पर कायम है और इन्हीं बातों से उम्मीद बँधती है कि

> बिजली चमकती है दो चार बूंदें पड़ती है और गरज होती है तो आदमी यह कहता है पानी बरसने वाला है। इसमें कोई पैगम्बरी की बात नहीं है यह रोज़ का अनुभव है। इसी तरह आज हमारे सामने वाली घटनायें यह बतला रही हैं कि अगर यही हाल रहा, इस देश में यही सब होता रहा और हमने इसको नही रोका तो हमारे देश और समाज की खैर नहीं यह दुर्भावना यह नफ़रत व बदगुमानी जो हमारे अन्दर पल रही है। और हमारा लिट्रेचर हमारे एजूकेशन का सिस्टम, हमारी फिलासफी और सबसे बढ़कर राजनीति वह इस नफ़रत को बढ़ा रही है।

भला इन भाईयों से हमारा क्या रिश्ता। इन्होंने हमें देखा नहीं, हमने इन्हें देखा नहीं। यह अखबार और रिसाले भी (पत्र-पत्रिकायें) अधिक नहीं पढ़ते। कुछ किताबें भी न पहुँची होंगी और अगर पहुँची भी होगी तो मदरसे में पहुँची होंगी। फिर भी इन्होंने मुझ पर ऐतबार किया और अभी यह इन्सानियत से निराश नहीं है।

मैं एक सन्त का किस्सा सुनाता हूँ। इसी से अपनी तक़रीर शुरू करता हूँ और इसी पर खत्म करूंगा। दिल्ली में एक बड़े सन्त थे। दिल्ली में उनको दिल्ली वाले सुल्तान जी कहते थे कोई हज़रत महबूब इलाही कहता है और कोई सुल्तानुलमशायख़ कहता है। शायद आपने सुना हो कि दिल्ली में निज़ामुद्दीन एक मुहल्ला है। यह उन्ही बुजुर्ग के नाम पर है। उनका नाम था निजामद्दीन औलिया (रह०)। उनके पास कोई भाई उनके कोई अक़ीदत मन्द (श्रद्धा रखने वाले) कैंची लाये। उन्होंने कहा मुझे कैंची की जरूरत नहीं है।। मेरा काम काटना और फाड़ना नहीं है। मैं दिलों को सीता और जोड़ता हूँ। मैं दिलों को फाड़ता और काटता नहीं हूँ कैंची तो काटने और फाड़ने की चीज़ है। यह तो किसी और को दो। मुझे तो कोई सूई लाकर के दो जिससे मैं अपना काम कर सकूँ मेरा काम है मिलाना मेरा काम

जुदा करना नहीं है।

इस समय कैंचियाँ तो बहुत चल रही हैं और बड़ी सस्ती हो गई है। मेरे ख्याल में तो बहुत से लोग यूँ ही लिये-लिये फिरते होंगे और किसी चीज़ को आप क्या कहें, ज़बान कैंची बन गई है। अख़लाक़ (आचरण) कैंची बन गये हैं और सब से बड़ी कैंची क्या है ? आप मुझे क्षमा करें। मैं पढ़ता लिखता रहता हूँ। लोगों से मिलता भी हूँ। मैं तो यह देख रहा हूँ कि सबसे बड़ी कैंची राजनीति है। यह बहुत बड़ी कैंची है। बड़ी धारदार और बहुत लम्बी। एक कैंची ऐसी होती है जिसकी मार या जिसकी पहुँच बीता भर या इससे भी कम होती है। किन्तु राजनीति की कैंची ऐसी है कि यहाँ हाथ में लीजिए और लखनऊ तक काम कर जाए। दिल्ली में कैचियाँ हैं जो सारे हिन्दुस्तान में आपना काम कर रही है। राजधानी और हर राजनीतिक पार्टी कैंची बनी हुई है। हर राजनीतिक नेता और हर पत्रकार हर लिखने वाला यही काम कर रहा है। क़लम कैंची बन गया है। यह क़लम जो मिलाने के लिए था और वह ज़बान जो मिलाने के लिए थी जो प्रेम के फूल बरसाने के लिए थी, कहते हैं कि अमुक आदमी के मुँह से तो फूल झड़ते हैं, यह शायद पुराने ज़माने की बातें थीं। आज इन होंठों से काँटे बरस रहे हैं। जुबानें क़ौमों से क़ौमों को जुदा करने वाली बन गई है। क़लम गला कटवाने वाला बन गया है।

एक बार लखनऊ में एडीटर कान्फ्रेंस थी और उसमें हमारी प्राइम मिनिस्टर भी आई थीं उन्होंने उसका उद्घाटन किया था तो हमारे कुछ कान्फ्रेंस वालों को नदवे में, जिसका मैं सेवक हूँ, बुला लाये। उनमें अख़बारों के एडीटर साहिबान भी थे। हमारे कुछ हिन्दू भाई भी थे। बड़ा अच्छा सम्मेलन था, मुझसे कहा गया कि मैं उनको एड्रेस करूँ मैंने उनसे कहा कि फारसी का एक पुराना शेर है। जो गज़ल के इश्क व महब्बत का शेर है जिसे किसी ने अपने प्रियतम के लिए कहा है, आज मैं आपके सामने पढ़ता हूँ:

आहिस्ता ख़राम बल्कि मख़राम,
ज़ेरे क़दमत हजार जान अस्त

कहने वाले शायर ने अपने महबूब को संबोधित करते हुए कहा है कि तुम्हारे क़दम के नीचे हजार जानें हैं, आहिस्ता चलिएगा बल्कि न चलिए तो बेहतर है और मैं आपसे कहता हूँ कि "जेरे क़लमत हजार जान अस्त" कि आपके क़लम के नीचे हजार जानें हैं। महबूब के कदम के नीचे हों न हों लेकिन हम गवाही देते हैं और दिन रात तमाशा देखते हैं कि आपके क़लम के नीचे हजारों नहीं लाखों जाने हैं। बेचारे शायर की पहुँच तो हजार तक थी, और एक आदमी से महब्बत करने वाले कितने लोग होंगे। लेकिन अख़बार वालों का खुदा भला करे आज पत्रकारिता इतनी तरक़्क़ी कर गई है और इसके प्रभाव इतने बढ़ गये हैं कि लोग इसे "मेजेस्टी" कहते हैं और यह बात सही भी है। जैसे किसी ज़माने के बादशाहों को संबोधित किया करते थे। आजकल इसको "हर मजेस्टी" कहना चाहिए। इसकी पहुँच कहाँ नहीं है। इसका कार्यक्षेत्र और प्रभाव क्षेत्र किसी बादशाह के इख़्तियार से कम नहीं है। अगर यह कलम कैंची बन जाये तो इतनी बड़ी इतनी दूर तक असर करने वाली क्या दुनियाँ में कोई कैंची होगी ?

मैंने उनसे कहा कि वह ज़माना गया जब महबूब से कहते थे कि हुज़ूर आपके क़दमों के नीचे हजारों जाने हैं। आप न चलें तो अच्छा है और चलें तो बहुत ध्यान देकर चलें कि कोई मारा न जाये। मैं आपसे कहता हूँ एडीटर साहिबान से मैंने कहा कि ज़ेरे कलमत हजार जान अस्त आपके क़लम के नीचे हज़ारों जानें हैं और आज दुनियाँ में क़लम कैंची का काम कर रहा है।

ऐसे अल्लाह के बन्दे हमारे देश में बहुत हुए हैं जिन्होंने जोड़ने और दिलों को मिलाने के काम किये हैं। मैं बहुत दुनियाँ फिरा हूँ। मैं दुनियाँ के बहुत दूर-दूर हिस्सों में गया हूँ और मैंने बहुत से मुल्क भी देखे हैं। लेकिन यह प्रेम की बांसुरी बजाने वाले, मुहब्बत की सुरीली आवाज़ सुनाने वाले, मुहब्बत के गीत गाने वाले हमारे मुल्क में जितने हुए दूसरे मुल्कों में कम मिलते हैं। मैं थोड़ा सा इतिहास का विद्यार्थी भी हूँ मुझे इसका थोड़ा सा शौक भी है बल्कि एक तरह की हॉबी है जैसे किसी को कोई लत होती है। मुझे इतिहास की लत हैं मैंने इतिहास पढ़ा है और इतिहास हमें बताता है कि हमारे इस देश में ऐसे खुदा के बन्दे बाहर से आये और यहाँ भी पैदा हुए जिन्होंने वही काम किया जो सुई करती है। जैसा कि मैंने हज़रत महबूब इलाही की बात सुनाई। उनका नाम तो महबूब इलाही है लेकिन वह असल में इन्सान से मुहब्बत करने वाले थे। आप हमारे बुजुर्गों, सूफी संतों के किस्से पढ़ें तो मालूम होगा कि मुहब्बत क्या चीज़ है और इन्सान की क्या इज्ज़त उनकी नज़र में थी। आदमी कोई ग़लती करता है तो उसको मज़हब के सर थोपते हैं और मज़हब को उसका जिम्मेदार बनाते हैं। हालांकि ग़लती एक व्यक्ति की होती है। उस ग़लती का संबंध न पूरे गिरोह से होता है न मज़हब से। असल बात यह है कि हमारे मन में ज़हर आ गया है, और उसने हमारी पूरी व्यवस्था को, हमारे माहौल को हमारी सोसाइटी और समाज को ज़हरीला करके रख

ऐसे अल्लाह के बन्दे हमारे देश में बहुत हुए हैं जिन्होंने जोड़ने और दिलों को मिलाने के काम किये हैं। मैं बहुत दुनियाँ फिरा हूँ। मैं दुनियाँ के बहुत दूर-दूर हिस्सों में गया हूँ और मैंने बहुत से मुल्क भी देखे हैं। लेकिन यह प्रेम की बांसुरी बजाने वाले, मुहब्बत की सुरीली आवाज़ सुनाने वाले, मुहब्बत के गीत गाने वाले हमारे मुल्क में जितने हुए दूसरे मुल्कों में कम मिलते हैं। मैं थोड़ा सा इतिहास का विद्यार्थी भी हूँ मुझे इसका थोड़ा सा शौक भी है बल्कि एक तरह की हॉबी है जैसे किसी को कोई लत होती है। मुझे इतिहास की लत हैं मैंने इतिहास पढ़ा है और इतिहास हमें बताता है कि हमारे इस देश में ऐसे खुदा के बन्दे बाहर से आये और यहाँ भी पैदा हुए जिन्होंने वही काम किया जो सुई करती है।

दिया है। इस ज़हर को दिल से निकालने की ज़रूरत है। अगर ऐसा न किया गया तो आदमी का अपने घर से निकलना मुश्किल हो जायेगा। मैं कोई पहुँचा हुआ पीर नहीं हूँ मामूली इन्सान हूँ। मगर आदमी को अल्लाह ने यह ताक़त दी है कि सामने की चीज़ों को देखकर अन्दाज़ा लगाये। बिजली चमकती है दो चार बूंदें पड़ती है और गरज होती है तो आदमी यह कहता है पानी बरसने वाला है। इसमें कोई पैगम्बरी की बात नहीं है यह रोज़ का अनुभव है। इसी तरह आज हमारे सामने वाली घटनायें यह बतला रही हैं कि अगर यही हाल रहा, इस देश में यही सब होता रहा और हमने इसको नही रोका तो हमारे देश और समाज की ख़ैर नहीं यह दुर्भावना यह नफ़रत व बदगुमानी जो हमारे अन्दर पल रही है। और हमारा लिट्रेचर हमारे एजूकेशन का सिस्टम, हमारी फिलासफी और सबसे बढ़कर राजनीति वह इस नफ़रत को बढ़ा रही है।

किसी बड़े योरोपियान फिलास्फर ने कहा है कि अगर तुम किसी कौम को अपने काबू में रखना चाहो तो दो बातों का ध्यान रखो। इनको खत्म ने होने दो-एक नफ़रत दूसरे खौफ और भय बस यह दो चीज़ें क़ायम रखो- किसी को डराते रहो और किसी से लड़ाते रहो, तुम लीडर बने रहोगे और तुम्हारी गद्दी सुरक्षित रहेगी। उस फिलास्फर का नाम सी०ई०एम० जोड है और उसकी दो बहुत प्रसिद्ध किताबें हैं-

मार्डन फिलास्फी तथा गाइड टू मार्डर्न विकेडनेस। अभी कुछ साल पहले वह लन्दन यूनीवर्सिटी में दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष थे। प्रोफेसर जोड ने लिखा है कि अगर नफ़रत (घृणा) और भय के लिए तुम्हें अपने यहाँ की कोई कम्यूनिटी न मिले तो कहीं ऊपर से ले आओ, आसमान से ले आओ। कोई ऐसा विचार जिसका अस्तित्व न हो, कहीं वह चीज़ पाई न जाती हो, किसी सितारे को सूरज को, चांद को, मछली या दरिया को, किसी को इस प्रकार प्रस्तुत करो कि तुम्हारे जो मानने वाले हैं उससे नफ़रत करने लगे और डरने लगें बस तुम्हारा काम बन गया। तुम आराम से घर बैठे रहो। तुम्हारा काम स्वतः बनता जायेगा। लोग लड़ते रहेंगे या डरते रहेंगे और तुम्हारा उल्लू सीधा होता रहेगा। मुसीबत यह है कि यह राजनीतिक लोग यह नहीं देखते कि इस समय तो काम निकल गया मगर आगे क्या होगा। देश अगर डूबा तो हम कहाँ बचेंगे हमने माना कि इस समय हमारा काम निकल जायेगा चुनाव जीत लेंगे और किसी जगह के चेयरमैन बन कर हम पापुलर हो जायेंगे। हमको लोग सर पर बिठायेंगे आँखों में जगह देंगे। लेकिन इसके बाद फिर समय आयेगा। सम्भव है वह हमारी ज़िन्दगी ही में आ जाये और हमारी ज़िन्दगी में न आये तो यह जो आगे आने वाली पीढ़ी के बच्चे हैं इनके जमाने में आयेगा।

आदमी अपने बच्चों का भी ख़याल करता है। उसी के लिए मेहनत करता है ज़मीन ख़रीदता है। बाग़ लगाता हैं। कोई कहे कि यह बाग़ लगाता हैं। कोई कहे कि यह बाग़ आपकी ज़िन्दगी में कब फल लायेगा तो हम उससे कहेंगे-यह हम अपने लिए नहीं बच्चों के लिए लगा रहे हैं। यह मानव स्वभाव है कि वह अपने बच्चों के लिए सामान करता है। आप आपने बच्चों को नहीं सोंचते कि अगर देश मे नफ़रत और डर इसी तरह से रहा तो आज से साठ सत्तर साल बाद हम दुनियाँ में नहीं होंगे उस समय इस देश की क्या हालत होगी ? हमारे बच्चे किस माहौल में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे ?

जिस तरह से किसान बीज डालता है तो खेती उगती है फिर काटता है। ऐसे ही नफ़रत और भय की खेती सबसे अधिक फलने वाली है। नफ़रत के बीज आप डाल दीजिए, भय के बीज आप बिखेर दीजिए इसके बाद फिर वह ऐसी फसल इतनी पैदावार होगी कि न आपके गेहूँ की इतनी पैदावार होती है न धान की होती है। किसी की भी नहीं होती है। आज हमारे देश में यही खेती बोई जा रही है। नफ़रत और खौफ़ की। एक कम्यूनिटी दूसरी कम्यूनिटी से डरती भी है, और अपने डर को छिपाती भी है। मैं आपको बता दूँ यह भी एक काम्पलेक्स है। कभी-कभी एक इन्सान को देखते हैं तो मालूम होता है कि बड़ा शेर मर्द है, बहादुर है लेकिन अन्दर भय बैठा हुआ है मैं साफ़ कहता हूँ कि मुसलमान हिन्दू भाई से डरता है और हिन्दू भाई मुसलमान से डरता है। गुस्सा भी उसके अन्दर है और डरता भी है साथ ही साथ डर को छिपाता भी है। वह डर को ज़ाहिर नहीं करता कि लोग उसे कायर कहेंगे। ज़ाहिर तो नहीं करता लेकिन दिल में डर बैठा हुआ है आप दिल चीर करके देखिए। एक-एक शहरी (नागरिक) के दिल में डर बैठा हुआ है। साफ़ सुन लीजिए। मुझसे डरने की कोई बात नहीं है। हिन्दू मुसलमान से क्यों डर रहा है इसलिए कि उसने उसको पहचाना नहीं। वह नहीं जानता कि उसके अन्दर प्रेम की कितनी भावना है ख़ुदा के उसके अन्दर कितनी मुहब्बत रखी है

अगर इस मुहब्बत को अपनी हालत पर छोड़ दिया जाये और मुहब्बत करने का उसको मौका दिया जाये तो ऐसी मुहब्बत करेगा जैसे कि कोई माँ अपनी औलाद से करती है। लेकिन जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरे से परिचित ही नहीं हैं तो मुहब्बत का रिश्ता मज़बूत कैसे हो सकता है।

हमारा इतिहास, हमारा लिट्रेचर, हमारी सोसाइटी सब मुहब्बत के गीतों से भरी हुई है लेकिन प्रेम की भावना को अंकुरित तो होने दिया जाये। उस पर तो ऐसा ढ़क्कन लगाया गया है और उसको सील कर दिया गया है कि मुहब्बत निकलने नहीं पाती। सूराख जो किया जाता है वह नफ़रत के निकलने के लिए किया जाता है। मुहब्बत के सुराख सब बन्द और नफ़रत के सुराख सब खुले हुए है। नफ़रत का मौका हर जगह है और वही आदमी पापुलर होता है, लीडर बनता है, चुनाव जीतता है और वही आदमी फिर गद्दी पर आता है। जो नफ़रत करना सिखाता है जो डराता है और जो मुहब्बत की बात करता है उसको लोग कहते हैं कि आप अपने घर बैठिए। आपका काम नहीं है। आपकी हमें जरूरत नहीं है। आप अपने यह गीत वहीं अलापियेगा। मैं आपसे कहता हूँ कि हमारी

आपकी सबकी कमज़ोरी यही है। अभी एक आदमी आ जाए और जोशीली तक़रीर करे और कहे, देखो ! भाई मुसलमानों! देखो यह ज़ुल्म हो रहा है इस देश में और यह हो रहा है, वह हो रहा है, तुम्हारे हिन्दू भाई तो यह करना चाहते हैं और तुम्हें इज्जत के साथ रहने देना नहीं चाहते। तो मैं यहाँ से चिल्लाता रहूँगा। मेरे सब साथी मुँह देखते रहेंगे और सारा मजमा उधर ही चला जायेगा। फिर उसी के ज़िन्दाबाद के नारे लगने लगेंगे। ऐसे ही कोई भाई आ जाये और हिन्दू भाईयों के ज़ज़्बात से खेलने लगे और भड़काने लगे कि पाकिस्तान ने यह तैयारियाँ की हैं तो लोग हमारे अध्यक्ष जी को भी छोड़ देंगें और कोई बड़े से बड़ा लीडर आ जाये उसकी बात भी न सुनेगें। यह कमज़ोरी इस लिए है कि उन लोगों को मौक़ा दिया गया जो इन्सान से काम लेने को आसान रास्ता यह है कि उसके ज़ज़्बात को भड़काओं। उसमें नफ़रत और जोश पैदा करो और फिर अपना काम कर लो और जो मुहब्बत की बात करते हैं उनकी बात सुनने वाले थोड़े से हैं। चन्द आदमी बैठे रहेंगे। वह भी किसी को नींद आने लगेगी कोई सो जाएगा। यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है अगर यह धारा इसी तरह बहती रही तो यह मजमा भी न हो सकेगा जो इस समय हुआ है इस वीस साल के बाद भी आप न कर सकेंगे। अभी खुदा ने मौक़ा दिया है कुछ मेहनत कर लीजिए और मिलकर इस देश को बनाने की कोशिश कीजिए। इस देश में अल्लाह ने जो नेमतें (वरदान) पैदा की हैं उनकी क़दर कीजिए। इस देश की एक-एक चीज़ से मुहब्बत कीजिए और आदमी की तरह रहना सीखिये तो ज़िन्दगी का मज़ा आयेगा। आप देखेंगे कि ज़िन्दगी बे पैसे के भी कितनी मज़ेदार है। थोड़े खाने के साथ भी कितनी मज़ेदार है। जिस परिवार में मुहब्बत है वह खानदान, चाहे सूखी रोटी खाये लेकिन उस ख़ानदान के लोग कैसे बाँसुरी बजाते हैं, कैसी मीठी नींद सोते हैं कैसे सुखी होते हैं और जिस ख़ानदान में छोटा हो या बड़ा नफ़रत है, मुक़दमाबाज़ी है, भाई-भाई को नहीं देख सकता वहाँ हालत यह है कि रात को नींद नहीं आती कि मालूम नहीं कौन गला घोंट दे और कौन घर में घुस जाये और क्या कर दे। कौन हमारी इज़्ज़त खाक मे मिला दे। हमारी बेइज़्ज़ती करा दे। हमारे ख़िलाफ़ मुकदमा दायर कर दे और फंसवा दे। खानदान में सब कुछ है कमाने वाले बहुत हैं, बैंक बैलेन्स बहुत, घर में टी०वी०, फ्रीज़ भी है, ऐश व आराम का सामान भी है लेकिन ज़िन्दगी में कोई मज़ा नहीं। आराम से चार आदमी बैठकर बातें करें, इसको तरसते हैं और जहाँ कुछ नहीं है न रेडियो न टी०वी० है न अच्छे-अच्छे बर्तन हैं न फर्नीचर हैं न डेकोरेशन का कोई सामान हैं मगर मुहब्बत है। भाई-भाई से मुहब्बत करता है। एक माँ है। उसके चार बच्चें हैं दो बच्चियाँ हैं सब आपस में मिल जुलकर रह रहे हैं और एक दूसरे पर जान देते हैं और दूसरे चचेरे भाई वग़ैरह कभी जो आते हैं सब अदब से सलाम करते हैं। दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। बड़ी बूढ़ी औरतें प्यार करती हैं। बड़े बूढ़े सर पर हाथ रखते हैं। उस घर में मालूम होता है कि जीने का मजा और वहाँ की रूखी-सूखी रोटी में जो मज़ा है वह दूसरी जगह के हलवे पराठों में वह मज़ा नहीं।

> आपसे हमें यही कहना है कि यहाँ ऐसा माहौल बनाइये-मुहब्बत और विश्वास का माहौल कि एक दूसरे पर ऐतबार और भरोसा हो। देखिये कुरआन शरीफ़ में एक बात ऐसी कही गयी है जिससे एक आइडियल सोसाइटी की तस्वीर सामने आती है। एक मौक़ा ऐसा था कि किसी ने किसी पर आरोप लगाया तो कुरान कहता है कि जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने यह क्यों नहीं कह दिया कि यह बात ग़लत होगी। इसलिए कि हम नहीं कर सकते तो दूसरा भी नहीं कर सकता। हर आदमी दूसरे आदमी का आइना (दर्पण) है।

तो मेरे भाईयों ! मुहब्बत के साथ जीना सीखिये। आपको मालूम तो हो कि मुहब्बत के साथ जीने में ज़िन्दगी का क्या मज़ा है। यह भी कोई ज़िन्दगी है कि आदमी-आदमी से डर रहा है। मुहल्ले वाला मुहल्ले वाले से डर रहा है। एक ऑफिस में काम करने वाले को उसी ऑफिस में जो उसके साथ काम करता है मेज़ से मेज़ लगी हुई है उस पर भरोसा नहीं कि किस समय उसके खिलाफ फाइल दाखिल कर दे, शिकायत कर दे, रिश्वत खुद लेवे और उसको पकड़वा दे। आज यह हालत हो रही है दफ्तरों की, यह हालत हो रही है संस्थाओं की, जो आदमी बनाने का काम करती है। क्षमा करें प्रिंसिपल साहब, यहाँ का हाल अच्छा होगा। लेकिन हम शहरों को हाल जानते हैं। वहाँ की यूनिवर्सिटीज और कालेजेज़ में कहीं भी किसी को भरोसा नहीं है। विश्वास तो बिल्कुल समाप्त हो गया हैं। कोई किसी पर भरोसा करे और उससे उम्मीद रखे ऐसा नहीं है। विद्यार्थी अध्यापक का सम्मान नहीं करते। अदब नहीं करतें अध्यापक छात्रों से प्रेम (शफक़त) नहीं करते। दोनों एक दूसरे के विरोधी बने हुए हैं। एक दूसरे को उखाड़ना और बरबाद करना चाहते हैं।

मेरे भाईयों ! लम्बी तक़रीर की जरूरत नहीं। आप आदमीयत सीखिये। हमें आदमीयत की तालीम (शिक्षा) सबसे पहले हमारे पैग़म्बरों ने दी जो खुदा की तरफ़ से इसी काम के लिए भेजे गये थे। फिर बाद में जो उसके उत्तराधिकारी थे और उनकी तरह के काम करने वाले थे, जो बुजुर्ग थे, अल्लाह वाले लोग थे जैसा कि हमने अभी आपको दो किस्से सुनाये वह एक ही बुजुर्ग के दो किस्से हैं कि उनके पास कोई बहुत अच्छी बनी हुई कैंची भेंट देने लाये। उन्होंने कहा हमें कैंची की कोई जरूरत नहीं हमें तो सुई दो मैं फाड़ने का काम नहीं करता मैं तो दिलों को सीने का काम करता हूँ। यह कैसी सीधी बात है। सीधी सादी कहानी है कोई फिलास्फी नहीं है। मगर कैसी सच्ची बात है आज इस देश को सुई की जरूरत है। कैंची की कोई जरूरत नहीं। कैंची घर-घर चल चुकी। गाँव-गाँव चल चुकी। मुहल्ले-मुहल्ले चल चुकी। अब मुहब्बत की प्रेम की सुई की जरूरत है कि आदमी आदमी को

पहचाने। मुहब्बत करना सीखे। मदद करना सीखें और ऐसी बातों की हमारे देश में कमी नहीं। आज भी ऐसे लोग हैं जो इन्सानों से इन्सानियत के नाते से प्रेम करते हैं।

एक बार हम लोग उतरौला से आ रहे थे। हमारे डॉक्टर साहब भी मौजूद हैं यह ड्राइव कर रहे थे। हम अपने एक दोस्त की शादी में गये थे वहाँ से चले तो अचानक, होने वाली बात एक इक्का एक दम से सामने आ गया, इक्के में एक जवान और त थी जो शायद विदा होकर मैके आ रही थी या सुसराल जा रही थी घूंघट काढ़े हुए वह सामने आ गई। डॉक्टर साहब ने बहुत बचाया लेकिन ज़रा सा धक्का लगा और वह गिर गई। बेहोश हो गई। हमारे डॉक्टर साहब तो डॉक्टर हैं ही वह अपने साथ दवायें भी रखते हैं। खैर उसको थोड़ी देर के बाद होश आ गया। उधर सारा गाँव जमा हो गया वह नहीं देखते कि हम लोगों को क्या दिलचस्पी कि उसको मारें। हम तो सीधे जा रहे थे लखनऊ पहुँचने की जल्दी थी हम कोई दुश्मन तो थे नहीं। हम गाँव को जानते भी नहीं। लेकिन लोग जमा हो गये। लाठियाँ लेकर और कहा कि जाने नहीं देंगे। करीब था कोई कम्यूनल रायट हो जाये और हम सब की जानें जायें, कि इतनें में एक मास्टर साहब हिन्दू भाई खड़े हो गये कि यह नहीं हो सकता उन्होंने चारपाई बिछाई और कहा कि कोई बाल बीका नहीं कर सकता और किसी को बढ़ने नहीं दिया। वह हमें थाने ले गये और वह चाहते थे खुद ही पैसा खर्च करें। कहा गया कि हमारे पास पैसा है। उन्होंने कहा कि यह हमारा फर्ज़ है। लोगों ने कहा कि आप हिन्दू हैं। यह मुसलमान है। आपको ऐसी क्या हमदर्दी ? कहने लगे आदमी तो है। खुदा उनका भला करे उसके बाद कभी मुलाकात नहीं हुई। यह देश इसी से क़ायम है अबतक और क़ायम रहेगा। हम यह चाहते हैं कि इन्सानियत का यह सन्देश गाँव-गाँव पहुँचायें और हमारे सब हिन्दू भाई और मुसलमान भाई इस बात को सीखें। यही पयामे इन्सानियत का उद्देश्य है।

पुरानी मिसाल है - नक्क़ारखानों में तूती की आवाज़। इस नक्क़ारखाने में हम जैसे तूती की आवाज़ कौन सुनेगा। जहाँ इतने अख़बार निकलते हैं। इतने जलसे होते हैं। वहाँ हम एक तहसील के अपने इन कुछ भाईयों के सामने जिनकी संख्या कुछ सौ से अधिक न होगी, इनके सामने अपनी बात कहकर चले जायेंगे। क्या इससे कोई बड़ा इन्किलाब आ जायेगा। मगर नहीं दुनियाँ में सब काम इसी तरह से हो रहे हैं। अगर करने वाले शुरू में यह देखते और यह सोचते कि कितने आदमी सुनने वाले हैं कितने आदमी काम करने वाले हैं तो दुनियाँ में एक काम भी नहीं होता। यह देश भी आज़ाद न होता। इस देश को आज़ाद कराने के लिए जिन्होंने कोशिश की-गाँधी जी ने कोशिश की, अली बिरादरान ने कोशिश की और मोतीलाल जी ने कोशिश की, उस समय क्या उनके पास जमघट था क्या उनकी बात सुनने के लिये एक-एक लाख और दो-दो लाख आदमी जमा हुए थे ? यह तो बहुत बाद में हुआ है। इसी तरह एक कितना रंग लाता है। अगर किसान यह सोंचे कि यह मुट्ठी भर बीज क्या कर लेंगें ? इनको ज़मीन में डालकर बेकार समय गंवाना है तो भूखों मर जायें।

आपसे हमें यही कहना है कि यहाँ ऐसा माहौल बनाइये-मुहब्बत और विश्वास का माहौल कि एक दूसरे पर ऐतबार और भरोसा हो। देखिये कुरआन शरीफ़ में एक बात ऐसी कही गयी है जिससे एक आइडियल सोसाइटी की तस्वीर सामने आती है। एक मौक़ा ऐसा था कि किसी ने किसी पर आरोप लगाया तो कुरान कहता है कि जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने यह क्यों नहीं कह दिया कि यह बात ग़लत होगी। इसलिए कि हम नहीं कर सकते तो दूसरा भी नहीं कर सकता। हर आदमी दूसरे आदमी का आइना (दर्पण) है। ऐसी ही हमारी आइडियल सोसाइटी होनी चाहिए कि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति ने चोरी की तो यह सोचे कि क्या हम चोरी कर सकते हैं। यह बात ग़लत होगी। हम चोरी नहीं कर सकते तो वह हमारा भाई भी चोरी नहीं कर सकता तो कुरआन ऐसी सोसाइटी बनाना चाहता है।

यह भरोसा और यह कान्फीडेंस होना चाहिए कि आदमी सुनते ही न मान ले। आज तो यह है कि अगर किसी के ख़िलाफ कोई बात कहीं, सुनते ही मान ली जायेगी और अगर अच्छी बात कहीं तो हज़ार जिरह होंगी। साहब, आपने देखा क्या आप ने अपनी आँख से देखा था ? क्या आपने आज़माया था ? क्या आप उस समय जाग रहे थे ? दस बातें कहेंगे। कोई अच्छी बात कहके तो देखें और अगर कोई अभी आकर यूँ ही कह दे कि यह मोलवी साहब, आप इन्हें पहचानते हैं ? अरे यह मोलवी साहब बड़े तेज़ है। मालूम नहीं यह क्या करते हैं। बस पन्द्रह बीस आदमियों को यक़ीन आ जायेगा।

भाई ! आप दुकान पर जाते हैं। सौदा लाते हैं। सारा काम दुनियाँ में भरोसे पर चल रहा है। आप डॉक्टर के पास जाते हैं। इस भरोसे पर जाते हैं कि यह अपने फन से वाकिफ़ है। यह हमदर्दी करते हैं। यह अच्छी दवा देंगें विद्यार्थी अध्यापक से पढ़ता है तो वह भी इसी भरोसे पर कि आप हमसे जियादा जानते हैं। आप हमें ज्ञान दे सकते हैं। तो जो चीज़ एक दूसरे से मिलाती है, बाँधे हुए है वह विश्वास और भरोसा है। इसको आप काट दीजिए तो सब अलग अलग गिर जायेंगे। इकाइयाँ सब बिखर जायेंगी। दुनियाँ में इन इकाइयों को जो चीज़ मिलाये हुये हैं और उनको एक पुर्जा बनाये हुये हैं वह हैं विश्वास और भरोसा और अच्छी आशा है। इसको आप काट दीजिए सब बिखर कर रह जायेगा। एक समाज भी नहीं चल सकेगा एक गाँव नहीं चल सकेगा।

बस यही हमें कहना है आपसे और पूरे हिन्दुस्तान से यही हमारे सफ़र का मक़सद है और यही पयामे इन्सानियत का पैग़ाम (सन्देश) है। आप सब पढ़े लिखे लोग हैं जियादा लम्बी तकरीर की ज़रूरत नहीं।

प्रेम और विश्वास का वातावरण बनाइये ताकि भारत स्वर्ग का एक नमूना बने।

●●●

जहेज़

- अब्दुल करीम पारीख

लगभग हर क़ौम में यह रिवाज पाया जाता हैं कि रूख़्सती के वक़्त आप अपनी बेटी को पिदरी मुहब्बत के तहत नया घर बसाने के लिये ज़िन्दगी का सामान देता है, यह जज़्बा एक फ़ित्री जज़्बा है, जिस का ज़ुहूर साहिबे क़ुरआन जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़दस से भी हुआ, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ि० के निकाह के बाद कुछ सामाने ज़िन्दगी इनायत फ़र्माया, डोल चक्की वग़ैरह।

"हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाहते तो "उहद पहाड़" सोने का बन कर ख़ुदा के हुक़्म से हाज़िर होता, लेकिन ऐसा नहीं किया गया कि इस से ग़रीबों के दिल टूट जायेंगे कि हम अपनी बेटी को कुछ न दे सके, इसलिये कम से कम की ही मिक़्दार ज़ाहिर हुई अब रही ज़ियाद से ज़ियाद की बात तो इसके लिये भी दरवाज़े खुले हुये हैं लेकिन नाम व नमूद और दिखावा, समाज में अपनी नाक ऊँची रखने की तमन्ना से हम ने इस बेहतरीन काम को रस्म व रिवाज़ के चक्कर में घसीट लिया जहेज़ की मांगें होने लगीं, क्या दोगे? फ़ला चीज़ लेंगे, रेडिया, कार, मकान, नक़्द, वगैरह।

क्या एक बाप अपनी बेटी को पैदाइश से निकाह तक कुछ ख़र्च किये बिना ही पाला पोसा होगा, कि दामाद की तरफ़ से इतने सामान की मांग हो कि बेचारा बाप या तो क़र्ज़ लेकर मांग पूरी करे या लड़की को घर बिठाये रखे जिन भाइयों की पांच या सात या दस लड़कियाँ है, उनका क्या हाल होता होगा, इस का अन्दाज़ा बहुत से वाक़िआत से होता है कि कहीं बाप कुँए में छलांग लगा देता है कि एक बेटी के निकाह पर माँगें जाने वाले जहेज़ को वह अदा नहीं कर सकता तो बक़ीया लड़कियों के निकाह से वह कब और कैसे फ़ारिग़ होगा।

बाप ख़ुदकुशी (स्वयं हत्या) करता है, और हमारा समाज चुप है, कहीं लड़किया ज़रूरत से ज़ियादः ईसार (त्याग) का सुबूत पेश करती हैं कि हमारी वजह से हमारे माँ बाप की नीन्द हराम है, न तो निकाह द्वारा समस्या को हल कर सकते हैं कि जहेज़ की माँग पूरा करना उनके बस की बात नहीं, और निकाह न होने की सूरत में किस उम्र तक बाप की रोटियाँ तोड़ती रहें लिहाज़ा ऐसे मुआमलात में लड़कियों ने स्वयं डूब मरने का निर्णय लिया और माँ बाप को मुसीबत से बचा दिया, ख़ुदकूशी (आत्म हत्या) इस्लाम में हराम बताई गई है मगर यह भी देखिये कि ख़ुदकूशी करने के लिये ऐसे समय पर समाज के रस्म रिवाज़ ही मजबूर करते है और इल्ज़ाम आता है इस्लाम पर:-

"इक़ बार अगर सुन लें वह क़िस्स-ए-ग़म मेरा
आँखें ही नहीं उनके रुख़्सार भी नम होंगे।।"

> सिर्फ़ जहेज़ की इस्लाह नहीं पूरी ज़िन्दगी की इस्लाह दरकार है, जान रखों कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी नहीं, हम को अपनी इस्लाह ख़ुद करना है, और इसी तालीम पर हमें क़ायम होना है जो सरवरे क़ायनात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सुपुर्द की है हमारे सुधार का यही एक वाहिद रास्ता है।

जहेज़ की इस घमा-घमी में एक "तिलक" भी आ टूटा, ग़ैर मुस्लिम भाइयों के यहां चूंकि बेटी को बाप की जायदाद में हिस्सा नहीं मिलता है, इस लिये बाप ज़ियादा से ज़ियादा सामान और रक़्म बेटी को दे देना चाहता है कि मेरे मरने के बाद मेरी ज़ायदाद से इसे कुछ मिलने वाला तो है नहीं। मगर इस्लाम ने तो निकाह के बाद भी बाप की जायदाद में (उस के मरने के पश्चात) हिस्सा रखा है, फिर एक मुस्लिम बाप को क्या ज़रूरत है कि वह आज ही अपनी मआशी (आर्थिक) हालत तबाह करके अपनी बेटी के लिये ऐसा सामान जुटा दे जो दो चार साल के बाद कबाड़ी बाज़ार में बिकने जाय, उस पर अपनी गाढ़ी कमाई को ख़र्च कर दे आम तौर पर अल्मारी, रेडिया, फर्नीचर, और सजावट के सिंगारदान और ऐसी चीज़ें लोग ज़ियादा ख़रीद कर देते है जिन में दिखावा ख़ूब हो, हालांकि सिलाई मशीन जैसी दूसरी चीज़ें मआशी तआवुन (आर्थिक सहयोग) का सबब भी बन सकती हैं मुनासिब मिक़्दार में यह चीज़ें मुफ़ीद हो सकती है बहरहाल इस मुआमले में अब मुसलमान चौंक जाय वरना वह दिन तो आ ही गये है कि तिलक और जहेज़ की लानत से इस समाज की मुस्लिम बेटियाँ ग़ैरों से शादियाँ करने लगी हैं, अगर अब भी आँख न खुली तो ख़ैर मनाइये अपने परसनल ला की।

इस लानत का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) भी ख़ूब होता है, निकाह के बाद पहली रात को दूल्हा मियाँ घोड़े पर सवार हैं, बने संवरे सेहरे और फूलों से ऐसे लदे कि सूरत भी नहीं दिखाई देती कि कौन साहिब है, साथ में बाजे गाजे के साथ बारात है, पीछे डोली में दुल्हन भी, और जहेज़ का सामान मज़दूर उठाये हुये पूरे शहर में बताते फिरते है कि यह वसूल कर लाये है, इस बारात को सड़कों पर हज़ारों लोग देखते है, शायद कोई बूढ़ा भीख मांगता हुआ, इस बनी संवरी बारात को देखकर अपनी बेटी का निकाह याद करता हो जिस की वजह से आज वह इस मुसीबत में मुबतला है अगर ऐसे किसी देखने वाले के जज़बात अलफ़ाज़ की शक़्ल में आयें तो यह शेर

मुनासिब होगाः-

"बहार आई है और मेरी निगाहें कांप उठी हैं।
यही तेवर थे मौसिम के जब उजड़ा था चमन मेरा।।"

मुझे सब से ज़ियादा दुख उस वक़्त हुआ जब बारात के साथ जुलूस में पलंग भी देखा और मज़ीद बे शर्मी की तकमील यह कि पलंग पर बिस्तर लिहाफ़, और दो तकिया भी सजा कर दिखाये गये, तौबा-तौबा बाप का दिल क्या कहता होगा कि सारे शहर में उस की लड़की की डोली तांगा या मोटर पर बिठा कर घुमाई जा रही है, बीच में सजा सजाया पलंग बिस्तर समेत, तकिया व लिहाफ़ के साथ, सामने दूल्हा मियाँ फ़ातिहे आज़म (महान विजयी) की हैसियत से जल्वा फ़र्मा हैं जब कि यह सवारी किराये की है, यह सबको मालूम है।

भाइयों ! यह शर्म की बात नहीं तो और क्या कहोगे, कितने ग़रीब बाप इस जुलूस को देख कर बेटी के निकाहों से कांप जाते होंगे इस का अन्दाज़ा किसी मुस्लेह (सुधारक) को ख़ूब होता है, अलबत्ता अगर मुस्लिम अवाम ध्यान करें तो उन की भी अ़क़्ल ठिकाने आ जाये कि यह क्या हो रहा है।

"गदाई से भी बत्तर हो गया है ख़ाली घर अपना।
दिमाग़ो से मगर वह ख़ूए सुल्तानी नहीं जाती।।"

बारात में यह बाजे गाजे! चाहे मस्जिद का पड़ोस हो, कोई परवाह नहीं, ज़रा सोचो तो कि मस्जिद के सामने बाजा बजाने की लड़ाई में कितने शहीद हुए, अगर हमारे मज़हब में बाजा गाजा और नाच जायज़ था तो यह झगड़े बखेड़े क्यों खड़े किये गये, हाँ मैं जानता हूँ कि मस्जिद के सामने गाने बजाने पर मज़हबी लोगो ने या उलमा-ए-किराम ने कुछ ज़ियादह तवज्जुह नहीं कि अलबत्ता सियासी लोगों ने इस का ख़ूब-ख़ूब नफ़ा उठाया।

दूसरे लोग सड़कों पर कुछ भी करें हमें क्या वास्ता, मगर यह जान लेना चाहिये कि हमारे दीन इस्लाम में इस लहव लअ़िब (खेल तमाशा) की कुछ भी गुंजाइश नहीं है, यह दीन तो बहुत ही ज़िम्मेदार और समझदार लोगों का है यहाँ इस तुफ़ाने बत्तमीज़ी की गुंजाइश कहां, मगर भाइयो ! क्या किया जाय कि हमारे कुछ ना समझ जाहिल भाई बुज़ूर्गो के मज़ारों पर हिजड़ों के नाच और बाजे गाजों के साथ जाते हैं तो बारात के बाजे गाजों का रोना कौन रोये, यहाँ भी इस्लाह की बड़ी ज़रूरत है।

सिर्फ़ जहेज़ की इस्लाह नहीं पूरी जिन्दगी की इस्लाह दरकार है, जान रखों कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ललम के बाद कोई नबी नहीं, हम को अपनी इस्लाह खुद करना है, और इसी तालीम पर हमें क़ायम होना है जो सरवरे कायनात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें सुपुर्द की है हमारे सुधार का यही एक वाहिद रास्ता है।

बस ख़ुशख़बरी सुना दो मेरे उन बन्दों को जो मेरी बात ध्यान से सुनते है और हर अच्छे पहलू पर अमल करते हैं (39:17,18 क़ुर्आन)

हमारे बुज़ुर्ग हमारे बहुत से रहनुमा खुद क़ुर्आन पर अ़मल करके कामयाब हुए और हमको सीधा रास्ता दिखाकर इस दुनिया से चले गये अब वह वापस आने के नही ! हम चाहें तो उन की राह पर चल सकते हैं।

सहाब-ए-किराम, औलया-ए-इज़ाम, सुलहाए उम्मत और उलमाए दीन अगर बिना शादी विवाह किये दुन्या से रूख़्सत होते तो हम मजबूर थे कि इस मुआमले में उन का नमूना मौजूद नहीं तो क्या करें, मगर यहाँ तो शादी बियाह का मुकम्मल नमूना (सम्पूर्ण आदर्श) मौजूद है, लेकिन हमें ज़िद है कि कोई काम ठीक तरीक़े से नहीं करेंगे और बे तरीक़ा काम करने पर जो दुरगत बनेगी उस के लिये दीने इस्लाम की चौखट पर नुक़सान की भरपाई का वावीला मचायेंगे। ●●●

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी पर

आसान हिन्दी में किताब

"हमारे हुज़ूर"

द्वारा

अमतुल्लाह तसनीम

बच्चों और बड़ों सब के लिये सर्वोत्तम तथा लाभदायक पुस्तक,

सुन्दर छपाई मूल्य (रु० 20)

मकतब-ए-इस्लाम 172/54, मुहम्मद अली लैन, गुइन रोड, लखनऊ

दीनी, इल्मी, पठित व अपठित और तारीख़ी किताबों का एक अहम मर्कज़

लखनऊ, देवबन्द, देहली, सहारनपुर वग़ैरह की अक्सर किताबें हर समय उपलब्ध

ख़ास तौर पर हज़रत मौलाना अली मियाँ रह० की तमाम हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू,

अरबी किताबों के विक्रेता

उर्दू बुक सेन्टर

नदवा मार्केट, हरदोई रोड, सिक्रौरी लखनऊ।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों का ख़मीर

— शमशुल हक़ नदवी

हमारे देश में हिन्दू मुस्लिम तनाव और एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना बहुत दिनों से चली आ रही है। इसके बहुत से कारण हैं जिनको दूर करने की कोशिश नहीं की गई। एक ग़लत विचार जो हिन्दुओं के दिमाग़ में पैदी किया गया है कि मुसलमान बाहर से आ गए और उनको हिन्दुस्तान से वह दिली लगाव नहीं है जो अस्ल बाशिन्दों को होता है। मुसलमानों ने इस देश की विभिन्न तरीक़ों से सेवाएं की हैं वह इतिहास के पन्नों पर प्रमाण के रूप में बिखरी हुई हैं। मुसलमानों ने इस देश में सत्यता और सच्चाई, न्याय, प्रेम व बराबरी के चिराग़ रौशन किये हैं और इन सबका स्रोत एकेश्वरवाद (तौहीद) और ईश संदेश वाहक का पैग़ाम है। इनके शासक यदि शासन व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था को बढ़ावा देते रहे तो उनके उलमा (धार्मिक गुरु) विद्या और ज्ञान की नदी बहाते रहे। सूफ़ी लोग और ख़ानकाहें (आश्रम) अपनी मीठी वाणी से दिलों को इस तरह मोहती रहीं कि उनको अपनी बीती हुई ज़िन्दगी पर शर्म आती और वह उन नैतिक मूल्यों को सीने से लगाते जो उन्हें इंसानियत का पाठ पढ़ाए और उनको सम्मान और बड़ाई का ताज पहनातीं, साफ़ शब्दो में यह कि वह इस्लाम के हो रहते। इस समय हिन्दुस्तान में जो मुसलमान मौजूद हैं उनमें अधिकांश बाहर से आए हुए नहीं हैं बल्कि वह हिन्दुस्तानी हैं और उनके पुरखों ने इस्लाम की साफ़ सुथरी शिक्षा को देखकर अपने पुराने विचारों का लिबादा उतार फेंका और इस्लाम का सुन्दर हार अपने गले में डाल लिया था। अतः यह विचार कि वह बाहर से आकर काबिज़ हो गए हैं बिल्कुल निराधार है और पक्षपात पर निर्भर है। उनका ख़मीर इसी देश की मिट्टी से बना है और वह इस देश के वासी और इसको बनाने वाले हैं। हां समय के साथ इन मुसलमानों से सार्वजनिक स्तर पर यह ग़लती हुई कि उन्होंने इस्लाम की जिन शिक्षाओं को खुद ग्रहण किया मेहनत और ध्यानपूर्वक अपने दूसरे भाईयों तक नहीं पहुंचाया, इसकी अस्लियत लोगों को नहीं समझाया और इस्लाम की जीती जागती तस्वीर अपने कर्म और व्यवहार से नहीं पेश किया जिस के फलस्वरूप हमारे हिन्दू भाईयों के ज़ेहन पर यह प्रभाव क़ायम रहा कि यह बाहर के लोग हैं जो हमारे देश पर क़ाबिज़ हैं। इस विचार को कुछ ऐसी अप्रिय घटनाओं से भी बल मिला जो बाज़ बादशाहों और विजयी लोगों से पेश आए और उनमें इस्लामी मूल्यों का प्रदर्शन नहीं हो सका जिससे लाभ उठाकर अंग्रेजों ने ऐसा इतिहास लिखवाया जिसमें ऐसी गढ़ी हुई घटनाएं भर दीं जो हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव को बढ़ावा देकर अंग्रेज़ों को शासन करने का अवसर देते रहें।

> *अपने सामने एक ऐसी मुकम्मल इमारत देखता हूं जिसको पूरी दक्षता के साथ बनाया गया है जिसके सारे अंग सन्तुलित, एक दूसरे से मेल खाते हुए जुड़े हैं न इसमें कोई चीज़ अधिक है, न कम, एक समानुपात जिसको देखकर आदमी में यह आभास पैदा हो कि इस्लाम की तालीम में जो कुछ भी है बरमहल (परिस्थितिनुसार) है।'*

यह एक सच्चाई है कि हर शासन के इतिहास में अच्छी, बुरी, न्याय और अत्याचार दोनों प्रकार की घटनाएं मिलती हैं ऐसी घटनाओं से मुसलमान शासकों का भी इतिहास ख़ाली नहीं मगर देश की भलाई इसमें नहीं है कि ढूंढ ढूंढ कर मुस्लिम शासन काल की कुछ वास्तविक बुराईयां और कुछ गढ़कर फर्जी कहानियां एकत्र की जाएं और वह समितियों के समारोहों और तमाशे के नाटकों में इस तरह बार बार दुहरायी जाएं कि वह बच्चे बच्चे की ज़ुबान पर चढ़ जाएं और दोनों क़ौमों के बीच न समाप्त होने वाली कड़वाहट, अविश्वास, दरार और दुश्मनी बढ़ती जाए।

हमारे हिन्दू भाई अंग्रेज़ों के षडयन्त्र के बुरी तरह शिकार हुए और उनका मुसलमानें के बारे में यह विचार बन गया कि यह लोग केवल गोश्तख़ोर और खूंखार होते हैं। हम अपने पढ़े लिखे न्यायप्रिय लेखकों से प्रार्थना करते हैं कि इतिहास की घटनाओं और इस्लामी शिक्षा और मुसलमानों की सज्जनता और उदारवादी तथ्यों को उजागर करें ताकि नफ़रत की खाई को पाटा जा सके और तमाम देशवासी मिल जुल कर देश की भलाई और देशवासियों के साथ प्रेम और भाईचारगी की भावना पैदा कर सकें और हर समुदाय के लोग अपने अपने धर्म पर उसी तरह अमल करें कि एक दूसरे को कोई दिली कष्ट न हो। हमारे देश में अनेक धर्म के मानने वाले सैकड़ों साल से एक दूसरे के साथ रहते चले आ रहे हैं। आज़ादी के बाद सेक्यूलर कानून ने भी किसी के धार्मिक मामले में दख़लअन्दाज़ी की इजाज़त नहीं दी है। अतः एक दूसरे को छेड़ने और उत्तेजित करने के माहौल को समाप्त करना चाहिये।

हम अपने मुसलमान भाईयों से इस सच्चाई

को बताने में कोइ संकोच नहीं करेंगे कि हमने अपने ग़ैरमुस्लिम भाईयों से अपना सही परिचय नहीं कराया। हमने समाज और सोसाइटी में अपनी इस विशिष्ट शान का प्रदर्शन नहीं किया जो इस्लाम ने हमको प्रदान किया है और जिसको खुलफ़ाए राशदीन (हज़रत अबू बक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०) ने अपने शासनकाल में दूसरी क़ौमों के साथ बरता है। उनके अधिकारों की सुरक्षा की है, उनके साथ न्याय और इंसाफ़ का मामला किया है, उनकी हर प्रकार से रक्षा की है और जब कभी ऐसा अवसर आया कि वह उनकी रक्षा करने की दशा में नहीं थे तो उन्होंने जज़िये की धनराशि यह कहकर वापस कर दी कि यह रक़म हमने तुम्हारी रक्षा के लिए ली थी अब हम रक्षा नहीं कर सकते हमको यहां से जाना है अतः तुम अपनी रक़म वापस ले लो। इस अच्छे व्यवहार से ग़ैर मुस्लिम (हिन्दू) रो-रो कर कहते थे जाओ ईश्वर तुम्हें वापस फिर बुलाए।

हमको चाहिये था कि हम मामलात में, लेन-देन में, कारोबार व व्यापार में, कार्यालयों और साथ काम करने वाले देशवासियों के सामने इस्लामी शिक्षा की सच्ची तस्वीर पेश करते जो धोखाधड़ी, वादा का उल्लंघन, झूठ, कामचोरी की इजाज़त नहीं देती और दूसरों के साथ अच्छे आचरण, प्रेम, इंसानियत, दोस्ती, दूसरे के दुःख दर्द में काम आने और सहारा देने की तालीम देते हैं, दूसरों की बहिन बेटियों की इज़्ज़त और आबरू और जान व माल की सुरक्षा ही नहीं बल्कि यदि वह परेशान हाल हैं और भूखे प्यासे हैं तो उनकी सहायता और सेवा की शिक्षा देती है।

इस्लामी शिक्षा क्या हमको यह पाठ नहीं देती कि हम अपने पास-पड़ोस में रहने वाले भाईयों के साथ सद्व्यवहार का प्रदर्शन करें और उनको अपने अमल से यह विश्वास दिलाएं कि हमारे गाँव, मुहल्ला और नगर में रहने वाले मुसलमान भाई हमारे लिए वरदान हैं और उनके होते हुए हमें कोई हमारी बहू, बेटियों की तरफ़ ग़लत निगाह नहीं उठा सकता। हम मुसलमानों को यह तालीम दी गई है कि कोई भी कमज़ोर, परेशान हाल हो, हम जितना कुछ कर सकते हैं उसकी सेवा करें चाहे वह किसी क़ौम से सम्बन्ध रखता हो।

इस्लाम स्वाभाविक धर्म (दीने-फ़ितरत) है, एक परिपूर्ण दीन है और स्थाई सभ्यता है इसकी इमारत मुकम्मल है इसमें कोई चीज़ कम या अधिक नहीं है। नव मुस्लिम (नए मुसलमान हुए) यूरोपियन मुहम्मद असद के शब्दों में *"अपने सामने एक ऐसी मुकम्मल इमारत देखता हूं जिसको पूरी दक्षता के साथ बनाया गया है जिसके सारे अंग सन्तुलित, एक दूसरे से मेल खाते हुए जुड़े हैं न इसमें कोई चीज़ अधिक है, न कम, एक समानुपात जिसको देखकर आदमी में यह आभास पैदा हो कि इस्लाम की तालीम में जो कुछ भी है बरमहल (परिस्थितिनुसार) है।"*

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

खुशख़बरी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है : - अनुवाद : *"जो हज का इरादा रखता है, जल्दी करे।"*
कुर्आने करीम में हज के बारे में इर्शाद है : - अनुवाद : *"और ख़ुदा की ख़ुशनूदी के लिये हज और उम्रे को पूरा करो"*

हज्जे बैतुल्लाह 2003 ई० का सफ़र ख़र्च क़ुर्बानी के बिग़ैर

कुल ख़र्च फ़ीकस	इण्डियन रु०	72,500/-
2 साल से 12 साल के बच्चे का	इण्डियन रु०	53,000/-
1 दिन से 2 साल के बच्चे का	इण्डियन रु०	10,000/-

नोट : अधिक जानकारी के लिये आफ़िस से सम्पर्क करें -

आपका यह सफ़र हिन्दुस्तान से लेकर सऊदी अरब तक मुकम्मल, टूर की तरफ़ से मुक़र्रर किये हुये बा सलाहियत, तजरिबेकार आलिमे दीन की रहनुमाई में पूरा होगा, जो हुज्जाजे किराम को हर हर क़दम पर मनासिके हज्ज की तालीम से रू शिनास करायेंगे।

अहमद टूर एण्ड ट्रावल, हज एण्ड उम्रा सैर व सफ़र

उस्मानिया मस्जिद के सामने, अकबरी गेट, लखनऊ 226003 फोन : 241317

अध्यापिकाएँ और छात्राएँ

- अशरफ़ सुलताना एम.ए., बी.एड.

अध्यापिकाओं की जितनी हमारे समाज में आवश्यकता है शायद ही और कोई महसूस करता हो क्योंकि अल्लाहतआला ने इल्म को हासिल करना, मर्द और औरत दोनों पर फर्ज़ किया है और इस्लामी समाज में लड़कियों की तालीम अध्यापिकाओं की ही जिम्मेदारी है। सोचना यह है कि क्या हमारी अध्यापिकाओं को इस जिम्मेदारी का एहसास है कि नहीं। आधी से अधिक आबादी की शिक्षा और आचरण सुधार की ज़िम्मेदारी उनके कंधे पर है। मुसलमान होने की हैसियत से हर अध्यापिका को ईमानदारी और इंसाफ के साथ काम न करने पर अल्लाहतआला के यहाँ जवाब देना पड़ेगा और इस्लाम की राह से मुसलमान औरत को सुशील, सब्र करने वाली, हमदर्द और दयालु होना आवश्यक है। इसी तरह स्कूल सरकारी हो या निजी हो, हर जगह जिम्मेदारी यकसां अध्यापक पर होती है।

दुर्भाग्य बस स्कूल सरकारी हाथों में चले जाने से दुर्दशा को पहुंच गये हैं और जहाँ आनेवाली पीढ़ी को परवान चढ़ाना है, वहां वह बुनियादी ज़रूरतों जैसे श्याम पट, चाक, डस्टर, डेस्क आदि की कमी है। इस पर तुर्रः यह कि अध्यापकों का रवय्या भी ख़राब और लापरवाह हो गया है तालीम की वही प्राचीन व्यवस्था चली आ रही है जो कि अंग्रेजों के ज़माने में थी कि शिक्षा का उद्देश्य केवल कल्र्क पैदा करना था और विद्यार्थियों के चाल चलन और व्यवहार से कोई सरोकार नहीं था। अंग्रेजों को तो पूरी कौम की ट्रेनिंग इस प्रकास करनी थी कि उनकी गुलामी आसानी से कर सकें चुनानचः अध्यापक विद्यार्थी के बीच कोई रिश्ता नहीं था बल्कि एक प्रकार की दूरी और फ़ासला रखा जाता था। यदि गौर करें तो आज के अध्यापक की बिल्कुल वही दशा है। विद्यार्थी की इज़्ज़त और उससे मुहब्बत और हमदर्दी से हर अध्यापक बेतअ़ल्लुक़ है और इसमें गर्व महसूस करता है कि हमारे सामने बच्चे किसने ख़ामोश रहते है।

महिलायें स्वाभाविक तौर से नर्म मिज़ाज और दयालु होती हैं। इसी तरह बच्चियाँ भी भोली और मासूम होती हैं और ख़ास तौश्र से अपनी अध्यापिकाओं को ही अपना सब कुछ समझ कर उनसे मुहब्बत करती हैं और उनक व्यक्तित्व को अपने अन्दर समा लेना चाहती है। अब इन मासूम बच्चियों के जज़्बात को प्रगतिशील बनाना अध्यापिकाओं के लिए अनिवार्य हो जाता है क्योंकि लड़कियों का व्यवहारिक जीवन समाज में सीमित होता है। घर और घर से स्कूल। अतः उनकी पूरी दुनियां ही यही दो ट्रेनिंग सेन्टर होते हैं। वर्तमान युग की कोई तालीमी किताब उठाकर देखें, हर जगह तमाम शिक्षा विशेषज्ञ निर्विरोध कहते हैं कि बच्चियों की तरबियत और तालीम प्रेम और हमदर्दी से करना चाहिए। मुख्यकर उनके जज़्बात उनकी छमता और उनके माहोल को सामने रख कर उनको शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षा के दरमियान बच्चों के साथ गुस्सा या सख्ती बरतना बच्चों के ज़ेहन को घायल करना हैं, क्योंकि जब अध्यापक का रवय्या हमदर्दना न होगा तो विद्यार्थी विद्या हासिल करने में रुचि न लेगा। मुझे हैरत इस बात पर है तमाम शिक्षा विशेषज्ञ पढ़ाई के दौरान कठोरता से पेश आने के अति अधिक खिलाफ हैं और यह बात सभी देशों के बच्चों के एक जैसे जज़्बात और रुजहान का सामने रखकर तय की गई है। परंतु इस के बावजूद अनुशासन, व्यवस्थाा, नियंत्रण की आड़ में हमारी बच्चियों के साथ रोक टोक अधिक से अधिक रखी जाती है जो कि बच्चों के जेहन को कुंठित करके रख देती है। किसी भी अध्यापिका से पूछा जाये तो तुरन्त उत्तर मिलेगा कि सख़्ती के बिना बच्चा कैसे पढ़ेगा जबकि यदि शिक्षा को मनोरंजन बना कर सामने रखा जाये तो कोई वजह नहीं कि बच्चा दिलचस्पी न ले। दूसरे देशों में तो सहायक सामग्री का प्रयोग करके शिक्षा को मनोरंजक बनाया जाता है।

हमारा देश इन बुनियादी चीज़ों से वंचित है जबकि प्यार और मुहब्बत मुफ़्त है और अधिकता से प्रयोग की जा सकती है। इस को शिक्षा ग्रहण करने के लिए इस्तेमाल किया जाये तो अवश्य सफलता मिलेगी। मिसाल के तौर पर एक बच्ची को अच्छा काम करने पर शाबाशी ही दे दी जाये या तारीफ़ के अन्य शब्द कह दिये जायें तो उसका दिल बढ़ जायेगा और अध्यापिका का कोई नुकसान न होगा। यदि आप किसी मनौवैज्ञानिक से पूछे तो वह भी आप को यही परामर्श देगा कि बच्चों की शिक्षा के मामले में डांट डपट बच्चों के जेहन को ख़राब कर देती है, और बच्चों के अन्दर जो जिज्ञासा और प्रयत्न करने की क्षमता होती है, बच्चों के साथ सख़्ती करने के कारण एक डर पैदा कर देती है और इस तरह सोचने और समझने की क्षमता प्रभावित होती है। मैं समझती हूं कि अध्यापिकाओं को यह चाहिए कि बच्चों की तालीम के लिए मोहब्बत और हमदर्दी से पेश आने की कोशिश करें और अपने ज्ञान को नये युग के अनुकूल बनाएँ और इसके लिए विस्तार पूर्वक अध्ययन करें ताकि बच्चों की क्षमता और उम्र के अुनसार उनके प्रश्नों का उत्तर दे सकें। कभी यह कह कर न डाटें कि क्या उटपटांग सवाल है क्योंकि यह इस बात की दलील है कि अध्यापक के पास इसका जवाब नहीं है। जवाब जरूर दें और यदि सही उत्तर तुरन्त संभव न हो तो बच्चे को साफ़ साफ़ बता दें कि यह बात

मालूम नहीं है ताकि बच्चे को यह मालूम हो जाये कि केवल अध्यापक ही ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है बल्कि और भी साधन हैं जिनसे अध्यापक सहायता लेते हैं बच्चों को भी वह साधन बताएं जैसे पुस्तकों के नाम, पुस्तकालय और निजी अनुभव आदि। इस बात से किसी अध्यापक की इज़्ज़त में कोई कमी नहीं आएगी क्योंकि किसी भी अध्यापक के पास सब सवालों का जवाब होना असम्भव है और यह बात बच्चों को मालूम होना आवश्यक है।

किसी काम पर बच्चों से अमल कराने से पहले खुद उस बात पर अमल करके दिखाएं और कोई पाबन्दी या रोक टोक करने से पहले बच्चों की ज़ेहनी क्षमता के अनुसार उनके लाभ बयान करें और जब बच्चों की समझ में आ जाये तो अमल करायें जैसे बच्चियों से कहा जाये कि फ़ैशन करके न आयें। यदि छोटे पाइचो का फ़ैशन है तो उन्हें मजबूर किया जाता है कि पाइचें छोटे न हों या नाखून न बढ़ाए, बालों को दो चोटियां बनाकर न रखें या सैंडिल न पहनें, चूड़ियां न पहनें आदि आदि। प्रश्न यह है कि इन चीज़ों में क्या ख़राबी है और आप खुद इन बातों पर अमल करती हैं या इन पाबन्दियों का कोई माकूल शरई (उचित धार्मिक) या जिसमानी स्वास्थ्य के लिहाज़ से हानिकारक है कि नहीं। यदि यह सब बातें नहीं है तो बच्चियों को जबरदस्ती स्वाभाविक परवान चढ़ने से न रोकें जबतक इन हानियों में से कोई उनके व्यक्तित्व को प्रभावित न करती हो। यह ऐसी छोटी-छोटी बातें है। जो बच्चियों को असल शिक्षा ग्रहण करने से रोक देती है और शिक्षा की तरफ़ से ध्यान हटता है और वह इस खोज और विचार में लगी रहती हैं कि कहीं हमारी शलवार के पाईचें छोटे न हों या चोटियां ऊपर नीचे न हो गई हों, कोई लट बाहर या अन्दर न रह गई हो और इस प्रकार की बहुत सी छोटी-छोटी बातें। घंटों इसी फ़िक्र और डर में गुज़र जाते हैं और आज़ाद और खुशगवार माहोल को प्रभावित करती हैं और इनके शौक और मुशहिदे की क्षमता कम हो जाती है। बच्चियां यदि देर से कोई बात सीखती हैं तो वह इतनी ख़तरनाक नहीं जितना अध्यापिकाओं का यह ख़ौफ और बेचैनी कि बच्चा अबतक इस पाठ को क्यों नहीं याद कर सका और इस घबराहट में बच्चों के साथ सख़्ती का बरताव शुरू कर दिया जाये। अगर यह अन्दाज़ा अध्यापिका को है कि बच्ची पाठ को एक दिन मे याद कर लेती है और दूसरी दो दिन में भी याद नहीं कर पाती तो हमेशा याद रखें कि हर बच्चें की स्वभाविक क्षमताएं भिन्न-भिन्न होती हैं और उनकी दिलचस्पियां भी भिन्न हो सकती है। यह सम्भव है कि इस बच्ची की परिस्थितयां उसको परेशान करती हों। बाप का बरताव कठोर हो या घर में ग़रीबी होने के कारण दूसरे विद्यार्थी से पढ़ने के कम अवसर हो। इन कारणों का पता लगाना ज़रूरी है और इन सब बातों को मद्देनज़र रखते हुए शिक्षा को प्रभावी और दिलचस्प बनाया जा सकता है।

बच्चियां आनेवाली नस्ल को परवान चढ़ाने और उन की तरबियत की जिम्मेदार होती हैं। हमारी अध्यापिकाओं को चाहिए कि इन बच्चियों के व्यक्तित्व को पारा पारा न करें बल्कि उनके आचरण को परवान चढ़ाने और उन्हें एक मज़बूत और योग्य स्त्री, जिसमें आत्मविश्वास, हिम्मत, सदव्यवहार जैसी खूबियां हों, बनाने में सहायता करनी चाहिए।

●●●

"काश हम अब भी जाग जायें"

इस दारुलउलूम की स्थापना को लगभग सौ साल हो चुके हैं। यदि क़ौम ने इसके सुधारवादी कार्यक्रमों पर सही ढंग से अमल करने का प्रयास किया होता, तो पाठयक्रम शैक्षिक प्रशासन में उचित परिवर्तन हो गया होता, उस पर कार्य करने को अवसर मिल जाता और उच्च उद्देश्यों के अनुसार अध्यापकों और साज सज्जा का प्रबन्ध हो जाता तो आज क़ौम के पिछड़ेपन का यह हाल न होता जो हमारे सामने है, व दीन ऐसी दुर्दशा में होता जैसा कि हम आज देख रहे हैं। बल्कि मज़हब एक जीता जागता सत्य होता और मुसलमान इस्लाम का प्रकाश लेकर आगे बढ़ते और जीवन का अन्धकार दूर हो जाता और उनके प्रभाव से उजड़े चमन में फिर बहार आ जाती, मुरझाए हुए फूल लहलहा उठते, गुलोलाला पर निखार आ जाता, सभ्यता एवं संस्कृति को नयी चमक-दमक प्राप्त होती, राजनीति नई करवट लेती, अर्थिक उलझनें दूर होतीं, समाज एक नया रंगरूप लेता और इन्सानियत का भटका हुआ क़ाफ़िला इस्लाम के प्रकाश में भलाई एवं कल्याण की ओर अग्रसर होता।

मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

रिश्वत की लानत और हमारा इस्लामी समाज

- अबू अब्दुल्लाह

इस्लामी इतिहास गवाह है कि एक दौर में मुसलमानों को अपने स्वच्छ समाज और सद व्यवहार की बिना पर तमाम कौमों पर श्रेष्ठता प्राप्त थी परंतु अब बहुत से मुसलमान दूसरों की नक़्क़ाली में अपनी तमाम विशेषताएँ खो बैठे हैं और अब उनमें बहुत से भ्रष्टाचार प्रवेश कर आये हैं उनमें से एक रिश्वत की लानत भी है।

यह पूरी इन्सानी बिरादरी का एक ऐसा घुन है जों अन्दर ही अन्दर तबाह व बर्बाद कर देता है और यह रिश्वत एक ऐसा कीड़ा तथा दीमक है जिसने समाज को बिल्कुल खोखला करके रख दिया है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया :-

"लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जब आदमी परवाह नही करेगा कि जो माल वह हासिल कर रहा है वह हलाल है या हराम"।

आज यह बात नये-नये रूप में हमारे सामने आ रहा है। आज हर शख्स दिन रात माल समेटने की कोशिश में लगा है और हर समय इसी फिक्र में बेचैन रहता है कि किस तरह ज़ियादा से ज़ियादा माल उसे हासिल हो जाए कभी भूलकर भी यह ख्याल उसके दिमाग़ में नही आता है कि माल को हासिल करने का तरीक़ा और ज़रिआ शरीअत के मुताबिक भी है या नही जाइज़ है या ना जाइज़ ? यही वजह है कि उन नाजाइज़ ज़रिए से कमाई हुई आमदनी का इन्सानी समाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है। रिश्वत भी कमाई का एक जरिआ है जो शरीअत में हराम है और खुद अकली तौर से भी रिश्वत का लेन देन, अच्छे समाज को नुकसान पहुंचाता है बल्कि यह देश के ख़िलाफ गद्दारी की तरह है। इस लिए कि किसी कौम के अच्छे समाज की इमारत उसी समय मजबूत हो सकती है जब उसकी बुनयाद में हमदर्दी और भाई चारे का जज़्बा हो लेकिन जब किसी कौम में रिश्वत लेने और देने का रिवाज बढ़ जाए तो यह इस बात की निशानी है कि उनमें आपस में हमदर्दी और प्रेम की भावना खत्म हो चुकी है और लालच, पूंजीवाद, स्वार्थपरता का घुन लग चुका है। यद्यपि रिश्वत का वजूद हर ज़माने में कुछ न कुछ रहा है परंतु आज कल रिश्वत का जितना मर्ज़ बढ़ चुका है उसकी तो मिसाल ही नहीं मिलती और अब तो किसी काम को करने के लिए जो फीस अदा करनी होती है उस फीस से दो गुना ज़ियादा तो रिश्वत की मांग होती है। इस पर भी जब यह कहा जाता है कि रिश्वत अच्छी चीज़ नहीं है। तो लोग जवाब देते है कि जनाब यह तो मेरा हक़ हैं मैंने आप का काम करवाया है।

इस सिलसिले में एक ऐतिहासिक वाकिया इमाम बुखारी (रह०) ने इस प्रकार लिखा है जिसका मतलब यह है कि अबूहुमैद साअदी (रह०) से रिवायत है कि ज़कात का माल वसूल करने पर एक व्यक्ति को नियुक्त किया और लोगों ने अपने मालों की ज़कात भी उसको दी और उसके अलावह उसको कुछ हदियों और तोहफे भी पेश किये लेकिन वह ईमानदारी का दौर था इसलिए उसने उन दोनों मालों को अलग-अलग रखा और आप की खिदमत में हाजिर हो कर साफ-साफ बात कह दी कि यह माल ज़कात का हैं और यह मुझकों बतौर हदिया पेश किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलौहिवसल्लम को इसकी इतनी अहमितय महसूस हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इस वाकियें का जिक्र मिम्बर पर तशरीफ ला कर फरमाया और बड़ी नागवारी के साथ यह बात फरमाई कि मैं लोगों को ज़कात वसूल करने के लिए भेजता हूँ और वापस आकर वह मुझसे यह कहते है कि यह ज़कात का माल है और यह हम को मिला है अगर यह अपने माँ बाप के घर बैठे रहते तो फिर देखते कि कौन आकर इनको हदिया पेश करता। इस रिवायत की रोशनी में जो लोग तरह तरह के हीले बहाने बना कर हराम रिश्वत को हलाल बनाना चाहते है वह अपने दिल में खुद ही इस का फैसला कर लें अल्लाह तआला हम सब को रिश्वत की लानत से सुरक्षित रख कर एक अच्छे समाज को बनाने की तौफीक अता फरमाए।

●●●

यह अल्लामा शिबूली ही का कारनामा था कि उन्होंने इस्लाम के महापुरुषों की सीरत (जीवनी) ऐसी विशिष्ट ज्ञानवर्धक शैली में लिखना प्रारम्भ की जो उनसे पहले किसी ने भी नहीं अपनाई थी। चुनांचि उन्होंने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ी की जीवनी "अलफारुक़" के नाम से लिखी जो अपने विषय में बेहतरीन किताब समझी जाती है, बल्कि इस्लामी इतिहास और इस्लामी महापुरुषों पर लिखी जाने वाली पुस्तकों में भी अपना विशेष स्थान रखती है। इसी प्रकार "अलगज़ाली" में उन्होंने इमाम ग़ज़ाली के कारनामों, उनके फ़लसफ़ें (दर्शन) उनकी इस्लाम के पक्ष में दलीलें और उनके ज्ञान व ज़ेहनी मर्तबे का परिचय कराया है, मौलाना रुम की जीवनी में उनके फ़लसफ़े और इस्लामी दर्शन का इतिहास और दीनी सुधार के सिलसिले में उनकी बहुमूल्य सेवाओं का वर्णन किया है। महापुरुषों की जीवनीयों की बहुमूल्य पुस्तकें के अतिरिक्त फ़ारसी शाएरी और ईरानी कवियों पर उनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक "शेरुलअजम" मदरसों और महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में दाख़िल है। इन शैक्षिक कार्यों के अतिरिक्त अल्लामा शिबली रह० का संबंध अपने युग के सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों से बहुत गहरा था।

(मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी)

समाजी बुराईयों के कारण और समाजसुधार के तक़ाज़े

विषय के विस्तार का तक़ाजा है कि इस पर किताबें लिखी जाएं परन्तु शब्दों और पृष्ठों की सीमा ने हमें मजबूर किया कि हम अपने हृदय की बात को केवल संकेतों में प्रकट करें।

नित नई-नई समस्याओं से भरी वर्तमान दुनियां ने जहाँ हमें सुख-सुविधा प्रदान किया वहीं अनगिनत भयानक समस्याओं से दो चार कर दिया। इन समस्याओं में असल सिरदर्द, यही समाजी बुराईयां हैं यदि नित नई समस्याओं का नाम ही समाजी बुराइयाँ रख दिया जाय तो अनुचित न होगा। यह समाजी बुराईयां क्यों, कैसे और कहां से पैदा हुईं ? यह खुद एक बड़ा विषय है। फिर भी समाजी बुराईयों की चन्द वजहें और उनसे छुटकारा पाने का इलाज यहां दिया जा रहा है कि यही समाज सुधार का तक़ाज़ा है और समय की पुकार।

1. इस्लामी तालीम से दूरी और लापरवाही

यह एक माना हुआ तथ्य है कि इस्लामी तालीम से दूरी ही वर्तमान बरबादी, गिरावट और बेराहरवी (दिशाहीनता) का कारण है। इतिहास गवाह है कि जिहालत के ज़माने के वह अरब जो बच्चियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे, मरा हुआ जानवर खाते, रात दिन शराब के नशें में धुत रहते और साधारण बातों पर चालीस-चालीस साल तक पुश्त दर पुश्त लड़ते। इस्लाम ही ने *केवल तेईस वर्षों* में उनकी काया ऐसी पलट दी कि संसार में उनको ऐसा सम्मान मिला कि वह एक बड़े क्षेत्र के बादशाह बन गए और परलोक का यह पुरस्कार कि खुदा उनको अपनी रज़ामन्दी और प्रसन्नता का प्रमाण पत्र दिया। चुनानचः वह अबूबक्र[रज़ि०] जो कपड़ा खरीदा और बेचा करते थे, लोगों के दिलों को ख़रीदने और बेचने वाले बने, इस प्रकार कि लोगों के दिल ख़रीद कर खुदा के वहां बेचते थे। वह उमर[रज़ि०] जो बकरियां चराना नहीं जानते थे, दुनिया के बादशाहों को चराने लगे। वह उस्मान[रज़ि०] जो एक गुमनाम व्यक्ति थे, शर्म, लज्जा पाकदामनी, मिलनसारी और बख्शिश और दान के इमाम (अगुवा) बने और वह अली[रज़ि०] जो एक साधारण बालक थे, हैदरे कर्रार बने।

इस्लामी तालीमात (शिक्षा) ने उस समय दुनिया की दिशा बदल दी थी। आज हम समाजी बुराईयों से इसलिए दो-चार हैं कि हमने इस्लामी तालीमात को छोड़ दिया है। इसके आदेशों को पीठ पीछे छोड़ दिया। चुनानचः तमाम समाजी बुराईयां, झूठ, धोखाबाज़ी, मक्र फ़रेब, चोरी, क़त्ल, डाकाज़नी, गालीगलौज, बेराहरवी का असल कारण केवल इस्लाम से दूरी है और लापरवाही है। चौदह सौ साल बाद भी यदि हम इस्लाम को गले से लगा लें तो इस्लाम आज भी वहीं हैं, बदले हैं तो हम बदले हैं कि -

आज भी हो जो ब्राहीम का इमां पैदा।
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा।।

2. बेजा साम्प्रदायिकता

इस्लाम खुदा-ए-पाक (पवित्र परमेश्वर) के यहां से आया है और एक सूत्र में बांधने के लिए आया है। इस्लाम से पहले लोग समुदाय, कौमों, क़बीलों में बंटे हुए थे। इनके यहां शराफ़त और बड़ाई का पैमाना माल व दौलत, ज़ात-पात और शक्ति था। इस्लाम ने आकर एलान किया कि यह ज़ात-पात, हसब नसब और रंग भेद इंसानियत की बड़ाई का पैमाना नहीं। यह चीज़ें नसब तो केवल आपस की पहचान के साधन हैं और इंसानी शराफ़त और बड़ाई का पैमाना एक परिपूर्ण और उच्च-सिद्धांत बताया और वह है तुम सब से श्रेष्ठ वह है जो सबसे अधिक संयमी है।

अब बहुत बुरा होगा यदि हम तौहीद (एकेश्वरवाद) को लेकर दीन में अलगाव पर अमल करने वाले और प्रचारक बन जाएं फिरक़ावारियत (साम्प्रदायकिता) चाहे धार्मिक हो या खानदानी या कोई, इस्लाम ओर इंसानियत दोनों के लिए हानिकारक है।

अफ़सोस कि दीने-इस्लाम जिसने अरब के क़बीलों को एकजा किया था, संसार को मिलाप का सन्देश दिया था और बादशाह और ग़ुलाम को एक सफ़ (पंक्ति) में खड़ा किया था खुद टूट-फूट और विघटन का शिकार है। एक मुसलमान उठकर दूसरे को काफ़िर (इन्कारी) कहता है, दूसरा उसे ख़ानदानी मुशरिक (ईश्वर की सत्ता में साझीदारी को मानने वाला)। एक दूसरे पर आवाज़े कसे जाते हैं और बयानबाज़ियां होती हैं। तनिक सोचिये अफ़ग़ानिस्तान का क्या हाल है, फ़िलिस्तीन में क्या हो रहा है और हिन्दुस्तान और फ़ीलापाईन के मुसलमानों ने क्या अपराध किया है? ऐ मुसलमान! अपनी आत्मा को झिझोड़, कल खुदा को क्या मुंह दिखाएगा ? अपनी इस ताक़त को खुदा का वर्दान समझ कर असत्य के ख़िलाफ़ निकल आ। फिरक़ावरियत और ज़ात-पात को लात मार कर पैग़म्बरे इत्तिहाद (एकता का सन्देश देने वाले सन्देश वाहक) के इन शब्दों की क़द्र कर - एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए सीसा पिलाई दीवार की तरह है जो आपस के टुकड़े को एक दूसरे से जोड़े रखती है। अतः सम्प्रदायिकता के समाप्त होने से ही समाजी बुराईयां समाप्त हो सकती हैं ओर समाज सुधार हो सकता है।

3. दुनिया से प्रेम और परलोक से लापरवाही

समाजी बुराईयों का मुख्य कारण यह है कि इंसान परलोक को भुलाकर दुनिया से प्रेम करने लगा है और दुनियां में दौलत और शान को बाइज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने का पैमाना बना लिया है। जिसको प्राप्त करने के लिए हर वह तरीक़ा अपनाता है जो उसके बस में होता है। परलोक पर विश्वास का समाजी जीवन में ख़ास दख़ल है। यदि इंसान इस बात को मद्देनज़र रखे कि कल ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है और उसे अपने तमाम कार्यों का हिसाब देना है और फिर अच्छे काम अधिक होने की दशा में सुख चैन की ज़िन्दगी हासिल होना और इसके विपरीत बुराई अधिक होने की दशा में हमेशा का कष्ट भोगना है तो फिर इंसान तमाम समाजी बुराईयों से न केवल ख़ुद बचेगा बल्कि दूसरों को भी इसकी नसीहत करेगा। पवित्र क़ुरआन में इसकी ओर संकेत है :-

अनुवाद -

'ख़बरदार ! तुम दुनिया और उसकी सजावट को प्रिय रखते हो और परलोक को पीठ पीछे डाल देते हो।' (75:20,21)

अतः इंसान को चाहिये कि दुनिया के मालो दौलत को मिटाने वाली और नापाएदार समझ कर परलोक के जीवन और वहां के हिसाब को नज़र के सामने रखे और इस बात का दूसरों को भी निर्देश दे। इसी प्रकार बहुत सी समाजी बुराईयों का ख़ात्मा होगा और एक सबसे अच्छे और पवित्र समाज का निर्माण होगा।

4. नैतिक और रुहानी गिरावट

नैतिक और रुहानी पस्ती बुराईयों को जन्म देने की ख़ास वजह है। इतिहास हमें बताता है कि जब तक इंसान नैतिक सिद्धान्तों का पास रखता है और आत्मा को बुराईयों से पाक रखता है, समाजी बुराईयां सिर नहीं उठा सकतीं परन्तु ज्यों-ज्यों नैतिक सिद्धान्त गिरते जाते हैं और आत्मा पर बुराईयां हावी होती जाती हैं त्यों-त्यों समाजी बुराईयां जन्म लेती हैं और इंसान केवल पशु बन कर रह जाता है। फिर उसे बुराई करना बुरा नज़र नहीं आता और अपने बुरे उद्देश्य के लिए जो हथकंडे वह प्रयोग कर सकता है उससे बाज़ नहीं आता। अतः नैतिक मूल्य और रूहानियत को प्राप्त और उसको तमाम इंसानों में ज़िन्दा करने के लिये बराबर कोशिश करते रहने की आवश्यकता है क्योंकि इंसान जब तक रुहानी और नैतिक मूल्यों की प्राप्ति के लिए स्थायी कोशिश न हो यह चीज़ें बस में नहीं होतीं और समाजी बुराईयां समाप्त नहीं हो सकतीं।

5. क़ौमी पहचान की कमी और दूसरों की ज़ेहनी ग़ुलामी

इंसान स्वाभाविक तौर से आज़ाद है और ग़ुलामी की ज़िन्दगी पसन्द नहीं करता परन्तु कभी-कभी वह दीर्घ काल तक ग़ुलाम रह जाने के बाद अपना स्वभाव भूल जाता है और न केवल ग़ुलामी उसका अंग बन जाती है बल्कि वह ग़ुलामी पर गर्व करना प्रारम्भ कर देता है और ग़ुलामी की क़ैद और पाबन्दियों के अपमान को गर्व की दौलत समझने लगता है।

भारत उपमहाद्वीप का मुसलमान हमेशा आज़ाद रहा है यह विजयी तो था पर कभी पराजित नहीं हुआ था। यह केवल ख़ुदा के आगे सिर झुकाने वाला किसी के आगे न झुका था बल्कि दूसरा उसके पांव चूमता था। इसके अतिरिक्त भारत उपमहाद्वीप के मुसलमानों को ख़ुदा ने बेहिसाब मालो-दौलत और नेमतें प्रदान की थीं और स्वर्ग जैसे देश भारत को उस समय सोने की चिड़िया कहा जाता था।

सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में अंग्रेजों ने अपने अपवित्र खड़यंत्र से भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी कायम की और धीरे-धीरे पूरे भारत में क़दम जमाया यहां तक कि तमाम प्रमुख पदों तक जा पहुँचे। इस दरमियान एक "मुसलमान लीडर' जो ज़ाहिर में बड़ा ख़ैर ख़ाह था अंग्रेजों के देश का दौरा किया वहां की शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन किया और मुसलमानों की उन्नति के लिए इस शिक्षा प्रणाली को ज़रूरी क़रार देकर उसे भारत में राएज किया और इस तरह मुसलमान अंग्रेजों का अमली व ज़ेहनी ग़ुलाम बना। कुछ नेक और क़ौम की भलाई चाहने वालों ने उठकर अंग्रेजों को देश से मार भगाया और फिर अपने इस्लामी और क़ौमी पहचान को दोबारा ज़िन्दा करने के लिए लाखों ख़ुदा के बन्दों के ख़ून की भेंट देकर क़ौम को ज़ेहनी ग़ुलामी से बचाया।

हमें यह बात याद रखनी चाहिये कि हमारी अपनी एक मुकम्मल क़ौम व इस्लामी सभ्यता है जिसके होते हुए हमें किसी दूसरी सभ्यता की कोई ज़रूरत नहीं, हमारे लिए हमारा दीन काफ़ी है।

- नूरुलहुदा
(प्रधानाचार्य मदरस्तुल बनात)

●●●

विधवा का दूसरा विवाह

विधवा का दूसरा विवाह मुसलमानों के यहाँ कभी दोषपूर्ण और आपत्तिजनक कार्य नहीं समझा जाता था। यह उनके नबी की सुन्नत थी, और हर युग में महान विद्वान, ईश्वर के परम भक्त, और वैभवशाली राजा बिना हिचक विधवा नारी से स्वयं शादी करते थे, और अपनी विधवा बहनों और बेटियों का दूसरा विवाह कराते थे। अब भी बहुत सी मुस्लिम विधवाएँ अपनी मर्ज़ी या किसी मज़बूरी से दोबारा शादी के बिना रहती हैं। किन्तु विधवा की दोबारा शादी का चलन होना चाहिए। अन्य देशों में यह चलन अब भी पाया जाता है और विधवा से शादी कदापि ख़राब बात नहीं।

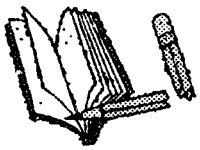

शिक्षा और हुनर की उन्नति में इस्लाम की भागीदारी

— शैख़ अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ आले मुबारक

बा ज़ वह लोग जो इस्लाम और इस्लामी शिक्षा की जानकारी नहीं रखते और उन्हें इस्लाम से केवल नाम मात्र सम्बन्ध रखते हैं उनका विचार कि वर्तमान काल में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो नई-नई उन्नतियां हुई हैं इस्लाम उनका साथ नहीं दे सकता जैसा कि ऐसे ही कुछ लोगों का विचार है कि इस्लाम का क्षेत्र शिक्षा, जानकारी, अख़लाक़ (नैतिकता) और इबादत (उपासनाओं) तक सीमित है। वह इस सीमा से निकल कर दुनिया के मामलात में चाहे वह नये हों या पुराने कोई भाग नहीं ले सकता न वर्तमान काल की वैज्ञानिक व संस्कृतिक उन्नति ही में कोई भाग ले सकता है। इसी में वह लोग भी शमिल हैं जो इस्लाम के नाम पर लोगों से माल हासिल करने के लिए झूट तथा धोखा धड़ी का तरीक़ा अपनाते है। इस्लाम का इन जैसे लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार के लोग इस्लाम के दुश्मन हैं जो साम्राज्यों और ईसाइयों के शब्द दुहराते रहते हैं कि मुसलमान इस्लाम की वजह से पीछे रह गये हैं और आख़री ज़माने में अरबों में ज्ञान का ठहराव और रूकावट का कारण कुर्आन और उस की शिक्षा बनी हालांकि वह अच्छी तरह समझते हैं कि इन का यह कहना ग़लत है, लेकिन इनके दिलों में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ जो ईर्ष्या और जलन है उसकी वजह से वह इस्लाम को बिगाड़ कर पेश करने का कुकर्म करते हैं, हालाकि वास्तविकता इसके ख़िलाफ है। पिछली, सदियों में मुसलमानों के पीछे रह जाने का मुख्य कारण उन का दीन से दूर हो जाना है। जिस समय इस्लामी हुकूमत अपने सांविधान (कुर्आन करीम) पर अमल करती थी तो उस समय वह ज़मीन की बेहतरीन उम्मत (सम्प्रदाय) थी जो लोगों के मार्ग-दर्शन के लिए पैदा की गई थी। इस्लामी सभ्यता व संस्कृति का प्रकाश के अन्धकारमय काल में एशिया, अफ्रीका और यूरोप मुसलमानों के उलूम व फुनून (ज्ञान व कला) का मुहताज था और उसने यूरोप को सभ्य बनाने में योगदान दिया और उसे उन्नति का मार्ग दिखाया और यूरोप ने अपने यहां के लोगों को हर ज्ञान और हुनर को मुसलमानों से सीखने के लिए भेजा चाहे वह स्वास्थ ज्ञान हो कि कीमिया (रसायन) खगोलशास्त्र हो कि वनस्पति विज्ञान, फलसफ़ा व तारीख (दर्शनशास्त्र व इतिहास) हो कि भौतिक विज्ञान या भूगोल हो।

मसलन इमाम राज़ी, इबने सीना, इबने रुश्द, इबन ख़तलदून, इबने हैय्यान, इब्ने बतूता इन के अतिरिक्त और बहुत से लोगों ने फायदा उठाया जिन का ज़िक्र इतिहास में प्रमुख रूप से किया गया है। जो व्यक्ति इस्लामी तालीम का जानकार नहीं है यदि इससे ज़रा भी वाक़िफ़ हो जाए तो अपने विचारों में अवश्य संशोधन करेगा और मालूम हो जाएगा कि दीने इस्लाम ज्ञान व कर्म का दीन है। इस का बयान विस्तार रूप से इस समय करना तो कठिन होगा परन्तु मिसाल के तौर पर कुर्आन मजीद की चन्द आयतें (श्लोक) पेश है:-

अनुवाद- "जो लोग तुम में से ईमान लाये हैं और जिन को इल्म (ज्ञान) दिया गया है खुदा उनके दर्जे बुलन्द करेगा (मुजादिला- 11) दूसरी जगह अल्लाहतआला फर्माता है:-

अनुवाद- कहो जो लोग इल्म (ज्ञान) रखते हैं और जो इल्म नहीं रखते क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? (जुमर-9)

> जो दुनिया हासिल करना चाहता है उस को भी इल्म (शिक्षा) हासिल करना ज़रूरी है और जो परलोक का इच्छुक है उस को भी और जो लोक परलोक दोनों का इच्छुक है उस को भी।
>
> सबसे अच्छा जहेज़ वह है जिसमें लोग कम खर्च का लिहाज़ रखें। उसमें सजावट, घमण्ड, टीप–टाप से बचा जाय। जहाँ तक शादी की के खाने का सम्बन्ध है उस को हुज़ूर सल्ल० ने आदमी की हैसियत के अनुसार करने का नमूना छोड़ा है और वलीमा (शादी के बाद दूल्हे की तरफ़ से दावत करना) करना सुन्नत है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से कहा कि वलीमा करो चाहे एक बकरी ही से हो।

एक जगह और फ़रमाया:-

अनुवाद- "तो उसके बन्दों में से वही लोग डरते हैं जो साहिबे इल्म (ज्ञानी) हैं" (फ़ातिर-28)

फ़रमाया-जो मिसालें हम बयान करते है उनको उलमा (ज्ञानी) ही समझते हैं। कुर्आन के शब्दों को पढ़िये-

अनुवाद- "हम यह मिसालें लोगों को समझाने के लिए बयान करते हैं और उसे तो बुद्धिमान ही समझते है।" (अनकबूत-43) और फ़रमाया

अनुवाद-"उसने इंसान को पैदा किया और उसी ने उसे बोलना सिखायाा" (रहमान-3, 4)

कुर्आन करीम ने लोक व परलोक हर प्रकार के ज्ञान को बयान किया है। हर छोटी बड़ी चीज़

का ज़िक्र किया है जो व्यक्ति ध्यान और समझ कर कुर्आन मजीद को पढ़ेगा वही उसको समझ सकता है-फ़रमाया-अनुवाद-"क्या वह कुर्आन में गौर नहीं करते" (अन्निसा-82)

यूरोप ने जिस ज़र्रे (Atom) के बारे में यह विचार पेश किया है कि वह ऐसा अंश है जिसको और विभाजित नहीं किया जा सकता। कुर्आन करीम ने इस ज़र्रे (Atom) का आज से चौदह सौ साल पहले ज़िक्र किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

अनुवाद-"ज़र्रा बराबर चीज़ भी उससे छुपी नही (न) आसमानों में न ज़मीन में और कोई चीज़ ज़र्रा से छोटी या बड़ी ऐसी नहीं है मगर रोशन किताब में लिखी गयी है" (सबा-3)

यदि हम इन तमाम चीज़ो का ज़िक्र करें जिन्हें कुर्आन करीम ने बयान कर दिया था और इंसान उनसे परिचित नहीं था अब चौदह सौ साल बाद उसको इसका ज्ञान हो रहा है तो बात बहुत लंबी हो जाएगी। जो लोग हमारे पूर्वजो के कारनामों को पढ़ेगे व अच्छी तरह समझ जायेंगे कि हमारे असलाफ (पूर्वज) कैसे थे। हज़रत आएशा रज़ि० फ़रमाती हैं -

अनुवाद-औरतों के हाथों में सूत कातने के यंत्र (तकली) का होना उस आले से बेहतर है जो जिहाद करने वाले के हाथ में होता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़र्माते है कि:-

अनुवाद-हमारे नज़दीक इबादत यह नहीं है कि तुम हर समय इबादत में लगे रहो और दूसरा तुम को खिलाए। पहले अपनी रोटी का प्रबन्ध करो फिर इबादत करो।

इस्लाम की इन तालीमात से मालूम होता है कि इस्लामी क़ानून दूसरे तमाम क़ानूनों से बरतर है। यह दीन और दुनिया दोनों को साथ लेकर चलता है। कुर्आन मजीद इस का प्रमाण है कि इस्लामी कानून दीन व दुनिया को एक दूसरे से अलग नहीं करता। जो कोई भी कुर्आन मजीद का ध्यान पूर्वक अध्ययन करेगा उसको इसमें फ़िक्ह और क़ानून का ऐसा ज़ख़ीरा मिलेगा जो रोम, यूनान और अन्य लोगों की किताबों से बहुत उच्च है। जो कोई इस्लामी सिद्धांतों को पढ़ेगा उस पर यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाएगी कि इस्लाम अज्ञानता और अनपढ़ होने का विरोधी है। हदीस में आता है हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया:-

अुनवाद- जो दुनिया हासिल करना चाहता है उस को भी इल्म (शिक्षा) हासिल करना ज़रूरी है और जो परलोक का इच्छुक है उस को भी और जो लोक परलोक दोनों का इच्छुक है उस को भी।

इस्लाम ने मालदारों पर ज़कात फ़र्ज़ कर के निर्धन्ता का उनमूलन किया है। स्वास्थ और तन्दरूस्ती पर ज़ोर देते हुए हुज़ूर ने फ़र्माया-

अनुवाद-तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है। एक और हदीस में फ़र्माते है-

अनुवाद-ताक़तवर मोमिन अल्लाह के नज़दीक कमज़ोर मोमिन से बेहतर है और अल्लाह को अधिक प्रिय है।

(पैग़ामे मेंम्बरों मेहराब पुस्तक से गृहीत)

इस्लाम में शादी का हुक्म और हिक्मतः

उस खुदा की बेहद व बेहिसाब तारीफ़ जिसने मर्द और औरत को पैदा किया ताकि एक को दूसरे से आराम मिले। पूज्जनीय वही है जो ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाला है। मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल (संदेशवाहक) है। खुदा के सामने पेशी के दिन आप सिफ़ारिश करेंगे। खुदा का दरुद व सलाम हो आप पर आप के आल अवलाद व असहाब पर।

इस्लाम के सारे नियमों में सुहूलत और आसानी है न कि पेचेदगी व कठिनाई। शादी भी हमेशा से चली आ रही है। यह भी एक हुक्म को बजालाना और उस की अदाएगी है जिस को अल्लाह तआला ने बन्दों पर फ़र्ज़ किया है। अब यदि महर की ज़ियादती और कोई चीज़ जो आसानी के ख़िलाफ़ हो, निकाह या शादी की इस आसानी व सुहूलत के विरुद्ध है जो अल्लाहतआला ने अपने इस कथन से बन्दों को उपलब्ध कराया है- **अनुवाद** - और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी (व मुश्किल) नहीं बनाई।

मामलात में इसी दृष्टिकोण से देखने के कारण इस्लाम ने महर के अन्दर सुगमता और दरमियानी रास्ता अपनाने की दावत दी है। हुज़ूर सल्लाहुअलैहे व सल्लम ने फर्माया

अनुवाद- सबसे बरकत वाला निकाह वह है जिस में सब से कम बोझ पड़े। दूसरी हदीस में फ़र्माया : **अनुवाद**- सबसे बेहतर वह महर है जो आसान हो।

हां आलिमों ने यह ज़रूर कहा है कि महर कि अधिकता की कोई सीमा नहीं है जितनी ज़्यादा भी कर दी जाए जाएज़ होगी मगर बरकत तो कम महर ही में है। इंसान बरकत ही का इच्छुक रहता है। जिस चीज़ में बरकत नहीं उस में कोई भलाई नहीं। हज़रत उमर रजि० फरमाया करते थे : औरतों का महर बहुत ज़्यादा न रखा करो। अगर महर देना कोई सम्मान की बात होती और यह परलोक में परहेज़गारी की चीज़ होती तो नबी सल्ल० तुम से अधिक इस के हक़दार थे।

एक बार हुज़ूर सल्ल० के पास एक गरीब नौजवान आया और कहने लगा कि मैंने एक सौ साठ दिरहम (अरबी सिक्का) महर पर शादी की है। हुज़ूर सल्ल० ने उस को ज़्यादा महसूस किया और उस से फ़र्माया "ऐसा मालूम होता है कि तुम लोग उस पहाड़ से चन्दी काटते हो" निकाह में युस्र (आसान्ति) की जो तालीम दी गई है उस की मिसाल हज़रत अबु-नईम की वह रिवायत है जिस में उन्हों ने फ़र्माया कि "हज़रत अबूतल्हा रज़ी० ने इस्लाम लाने से पहले उम्मे सलीम को शादी का पैग़ाम दिया तो उन्हों ने जवाब में कहा कि मैं आप से शादी करना पसन्द करती हूँ आप जैसे आदमी के पैग़ाम को रदद् नहीं किया जा सकता लेकिन आप काफ़िर (इनकारी) हैं और मैं मुसलमान हूँ आप से शादी करना मेरे लिए उचित नहीं।

अबूतल्हा ने उम्मेसलीम की बात सुन कर फरमाया तुम किस धोखे में हो ? उन्हों ने जवाब में कहा किसी धोखे में नहीं हूँ। अबूतलहा ने फ़र्माया-तुम सोना चाँदी छोड़ कर किस चक्कर

में हो? उस पर उममे सलीम ने कहा- मैं सोना चाँदी की भूखी नहीं, आप ऐसी चीज़ो की इबादत (पूजा) करते हैं जो न सुनती है न देखती है और न ही आप को कोई लाभ पहुंचाती है। आप को इससे शर्म नहीं आती कि आप ज़मीन की एक लकड़ी की इबादत करते हैं जिसको फुलां कबीले के हबशी ने तराश कर बनाया है। अगर आप इस्लाम ले आए तो इस्लाम के सिवा कोई महर न मांगूगी।

अबूतलहा ने यह सुन कर पूछा कि मै किस के हाथ पर इस्लाम लाऊ ? उम्मे सलीम ने कहा - वह नबी है आप उन के पास चले जाएँ। अबूतलहा हजूर सल्ल० के पास आये सहाबा रज़ी० के बीच इस तरह बैठे थे जैसे हालः के बीच चाँद होता है। हुज़ूर सल्ल० ने जब अबूतलहा को आते देखा तो फ़रमाया तुम्हारे पास अबूतलहा आ रहे हैं उनकी पेशानी (ललाट) पर इस्लाम का प्रकाश है। अबुतलहा रज़ि० आप की सेवा में हाज़िर हो कर इस्लाम लाए और उम्मे सलीम ने जो बात कही थी हुज़ूर सल्ल० को सूचित किया। हुज़ूर सल्ल० ने उम्मे सलीम की शर्त पर अबूतलहा से उनका निकाह फ़रमा दिया।

निकाह की इस घटना में कितनी सार्थक मिसाल मौजूद है। यह घटना एक नेक दिल और सच्ची मुसलमान औरत की खूबी को दर्शाती है। उन्हों ने माल आदि की कोई परवाह नहीं की बल्कि जवां मर्दी, अक़्ल की पुख़्तगी और दीनी जमाल (सुन्दरता) का लिहाज़ रखा।

महर औरत का अधिकार है। वह महर की ऐसी मालिक है जैसे किसी और माल की मालिक होती है। बाप, वली (अभिभावक) या कोई और सम्बन्धी इस महर का मालिक नहीं हो सकता सिवाए इसके कि वह खुद से दे दे। अल्लाहतआला फ़र्माता है:-

अनुवाद- "और औरतों को उसका महर खुशी से दे दिया करो हां यदि वह अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दे तो उसे शौक़ से खालो।" (निसा : 4)

सबसे अच्छा जहेज़ वह है जिसमें लोग कम खर्च का लिहाज़ रखें। उसमें सजावट, घमण्ड, टीप-टाप से बचा जाय। जहाँ तक शादी की के खाने का सम्बन्ध है उस को हुज़ूर सल्ल० ने आदमी की हैसियत के अनुसार करने का नमूना छोड़ा है और वलीमा (शादी के बाद दूल्हे की तरफ़ से दावत करना) करना सुन्नत है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से कहा कि वलीमा करो चाहे एक बकरी ही से हो।

रिवायतों में आता है कि जब हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत फ़तिमा रज़ि० को पैग़ाम दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया कि शादी के लिये वलीमा ज़रूरी है और वलीमा में अमीर गरीब सब को शरीक़ करे। फ़कीरों को छोड़ कर अमीरों ही को न बुलाए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया "सबसे बुरा खाना वह वलीमा है जिसमें अमीरों को बुलाया जाए और ग़रीबों को छोड़ दिया जाए।" यदि तुम में से किसी को वलीमे में बुलाया जाए तो उसको क़बूल करे और जाए। फर्माया- "जो वलीमे में न जाए उसने खुदा और रसूल के हुक्म को नहीं माना" हां यदि यह मालूम जा जाए की वलीमे के खाने में ऐसी चीज़े है जो जायज़ नहीं जैसा की बे दीन व बुरे आचरण वाले करते है जैसे शराब का होना, तवायफ़ो का होना तो इस वलीमे मे जाना उचित नहीं।

बाज़ लोग कहते है कि शादी में दफ़ बजाना और गाना गाना जाएज़ है। हाँ हुज़ूर सल्ल० ने सोहागरात में गाने और दफ़ बजाकर खुशी मनाने को पसन्द फ़र्माया। हज़रत आएशा रजी० ने अपनी किसी क़रीबी रिश्ते की लड़की की शादी में शिरकत की जो किसी अन्सारी रजी० से हुई थी। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत आएशा से फ़र्माया "आएशा ! तुम लोगों के साथ कुछ गाना बजाना नहीं था ? अन्सार इस को बहुत पसन्द करते हैं।"

हुज़ूर सल्ल० यह नापसन्द फर्माते थे कि शादी की मजलिस ख़ामोशी से गुज़र जाए उसका एलान न हो। मुसनद अहमद और अन्य पुस्तकों में लिखा है कि आप चुपके से निकाह करने को नापसन्द फ़र्माते थे और फ़र्माते कि दफ़ बजाया जाए।

इस पूरे वर्णन से ज़ाहिर होता है कि हूज़ूर सल्ल० ने शादी में दफ़ बजाने और अच्छी कविता पढ़ने को उचित ठहराया है। घटिया और गिरे हुए अशआर (पद्य) ज़िस से बुराईया पैदा हों, उन में शराब की प्रसंशा हो और जिस के सुन्ने से बदी व बुराई की इच्छा पैदा हो उन की अनुमति नहीं। जब हज़रत आएशा रज़ी० ने अपनी रिश्तेदार की शादी में शिरकत की जो अन्सार में हुई थी तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया था "तुम लोगों ने दुल्हन को सिखा पढ़ा दिया है ? हज़रत आएशा ने फ़र्माया नहीं, तो फिर आपने फर्माया कि उस के साथ किसी गाने वाली को भेजा है कि नहीं? हज़रत आएशा ने फ़र्माया नहीं। तब आप ने फ़र्माया कि "अन्सार ऐसे लोग हैं जो गाने को पसन्द करते हैं। तुम लोगों ने किसी लड़की को भेज दिया होता तो गाती और दफ़ बजाती"। हज़रत आएशा ने फ़र्माया वह गाने में क्या गाती ? आपने फ़र्माया कहतीः-

"हम तुम्हारे पास आए हैं, हम तुम्हारे पास आए हैं, तुम हम को सलाम करो, हम तुमको सलाम करेंगे। अगर खाने पीने की बात न होती तो हम तुम्हारी वादी में न आते।"

सहाब-ए-किराम रज़ी० ने हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम की इस अनुमति को बाकी रखा। हज़रत उमर बिन साद फ़र्माते हैं कि मैं अबू सअ़द अन्सारी और क़रज़ः बिन कअ़ब के पास एक शादी में गया था। क्या देखता हूँ कि कुछ लड़कियाँ गा रही हैं। मैंने उन दोनों हज़रात से कहा कि आप दोनों हुज़ूर सल्ल० के सहाबी हैं आपके यहाँ यह सब होता है ? तो उन दोनों हज़रात ने फर्माया कि हुज़ूर सल्ल० ने हमको शादी में इस की इजाज़त बुरे विचारों और बुरे जज़बात से बचे रहने के साथ दी है।

हम खुदा से पाक दामन रहने और अच्छे विचारों की दुआ करते हैं और उससे क्षमादान चाहते हैं। ●●●

ईदुल अज़हा का सन्देश

—मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी

ईद कुर्आन के उतरने की साल गिरह थी, ईदे कुर्बां (ईदुलअज़हा) काबे की बुन्याद की साल गिरह है, इब्राहीम मुवह्हिदों (एकेश्वरवादियों) के सरदार और एकेश्वरवादी थे, खुदा को एक मानने के जुर्म में आग में झोंके गये देश से निकाले गये, अतः अनिवार्य था कि इनकी क़ाइम की गई यादगार में तौहीद का रंग छाया रहे। आज सूरज ऊँचा हुआ कि लोग ईदगाह और मस्जिदों की ओर चलने लगे और चहुओर रब की बड़ाई के नारे बुलन्द हुए, तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के वलवले सीनों में और तकबीर (अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहम्द) के नग़मे जुबान पर ! ईद का दिन याद होगा आज तकबीरें केवल ईद के नमाज़ के साथ और जाने आने के रास्ते में नहीं बल्कि बक़रईद की तकबीरें शुरू होंगी नौ तारीख़ की फ़ज्र से और जारी हर नमाज़ के पीछे तेरह तारीख़ की अस्र तक। मक्का में आज मुसलमान उठते बैठते चलते फिरते पुकारेगा। "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक" (हाज़िर है, ऐ मेरे मालिक यह गुलाम हाज़िर है, यह शहादत देता हुआ हाज़िर है) यह आदाब हाज़िरी देने वालों के हुए, केन्द्र से दूर बाहर वाले नौ तारीख से तेरह की तीसरे पहर तक साढ़े चार दिन हर नमाज़ के बाद पुकारेंगे "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाह इल्लल्लाह वल्लाहुअकबर अल्लाहुअकबर व लिल्लाहिल हम्द"- बड़ाई तो आप में है केवल आप में है आपके सिवा कोई पूज्य नहीं बड़ाई आप में है, बड़ाई आप में है और वन्दना योग्य केवल आप हैं।

मुसलमान कुर्बानी के लिए तैयारी दिनों, हफ्तों, महीनों पहले से करेगा, पवित्र व स्वच्छ जानवर अच्छा, तन्दुरुस्त, बेऐब देखकर ख़रीदेगा पालेगा, खिलाएगा पिलाएगा अपने से खूब हिलाएगा और जब उससे प्रेम, मुहब्बत और लगाव क़ायम हो जाएगा, तो अपने और उसके दोनों के मालिक के हुक्म से इस रिश्ते पर अपने हाथ से छुरी फेर देगा, पाले हुए जानवर को प्यार से देखेगा, अन्तिम समय तक खिलाए पिलाएगा परन्तु, आदेश के पालन में ज़मीन पर गिराएगा तो मुंह काबे की ओर करके कहता जाएगा (अनुवाद) मैं इसे किसी देवी, देवता की भेंट नहीं चढ़ा रहा हूं मेरा सम्बन्ध तो उसी से जुड़ा हुआ है, मैं तो पुजारी केवल उसी का हूँ जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया, मेरे जीवन के तमाम सिद्धांत तो उसके नियमों का पालन करना है। मेरी दुआयें और मेरी उपासना, मेरी ज़िन्दगी और मौत न अपने स्वयं के लिए है न क़ौम और न इस देश के छोटे मोटे देवी देवता के लिए है। यह जीवन उसके आदेशों के अनुपालन के लिए है जो हर देश का हर क़ौम का सारे जगत, जनमानस, ब्रहमाण्ड की तमाम चीज़ों का पालन हार है।

डाक्टर जब मरीज़ को आपरेशन की मेज़ पर लेटाता है तो पहले आपरेशन वाले अंग को दवा लगाकर सुन कर देता है या मरीज़ को क्लोरोफ़ार्म सूंघा कर बेहोश, मुसलमान भी जब जानवर को ज़िबह के लिए काबे मुंह लिटाकर गले पर छुरी चलाता है तो रुह को एक संक्षेप दो शब्दों का नग़मा सुना कर मस्त और मदहोश कर देता है "बिसमिल्लाहि अल्लाहुअकबर" ऐ मिट्टी की मूरत मैं तुझकों मुर्दा अपनी तरफ से नहीं कर रहा हूं। मैं तो खुद तेरी तरह पैदा किया गया, तेरे ही तरह बेबस, तेरी ही तरह मिट्टी से पैदा हुआ, तेरी ही तरह मरने वाला हूं। मैं छुरी चला रहा हूं अपने और तेरे पैदा करने वाले का नाम लेकर, अपने और तेरे मालिक के क़ानून के अनुपालन में। जीवन का वरदान देने वाला भी वही उसे वापस लेने वाला भी वही। जान एक रोज़ डाली भी उसी ने और आज निकाली भी उसी ने। बड़ाई का अधिकारी, हुक्म चलाने वाला भी सिर्फ़ वही सुनते है कि फौज के सिपाही जंग के मैदान में फ़ौजी बैंड और देश भक्ति के तराने की आवाज़ सुनकर ऐसे मस्त हो जाते हैं कि जान की परवाह नहीं रह जाती और बन्दूक़ की गोलियों, तोप के गोलों, संगीनों के बार के लिए बिना झिझक अपने सिर व सीने को पेश कर देते हैं। अल्लाह के नाम का आकर्षण रूह के लिए क्या इतना भी नहीं ? जानने वाले तो यहां तक कह गए हैं कि रुह इस पवित्र नाम से ऐसी मस्त और बेचैन हो जाती है कि स्वंय प्रसन्नता से बेहाल होकर हंसी खुशी बाहर आ जाती है चाहे देखने वालों की नज़र में जिस्म तड़पता, लोटता रह जाए। आखिर क्लोरोफ़ार्म का इंजक्शन भी तो यही होता है कि रगों पर रगें जिस्म से कटती रहती हैं, खून पर खून बहता रहता है लेकिन मरीज़ की तकलीफ़ व कष्ट का अनुभव कम हो जाता है। अल्लाह ठंडा रखे हज़रत अकबर की क़ब्र को क्या ख़ूब कहा है-

एहसासे ही ईज़ा[2] का न हुआ फ़र्यादो फ़ुगाँ[3] में क्या करता
आँख अपनी लड़ी थी क़ातिल[4] से जिस वक़्त न ख़ंजर था न गला

कहते हैं कि एक बार यह क़ुर्बानी काबा के बनाने वाले, आग में कूद पड़ने वाले इब्राहिम अलै० ने भी पेश की थी। यह क़ुर्बानी बकरे की न थी न भेड़ की, ऊँट की भी न थी, चहेते लाडले, आंखों के तारे इस्माईल अलैहिस्सलाम

की थी। इब्राहिम अलै० को सपने में प्रियतम हस्ती की कुर्बानी का आदेश मिला।। पैग़म्बर के सपने भी खुदा की तरफ़ से होते हैं। सुबह उठे इस्माईल से सलाह किया, उससे कहा जो आँखों का तारा, बुढ़ापे का सहारा था मशवरा ख़ूद जिसके ज़िबह के बारे में था, उससे किया ! दुनिया के इतिहास में कब किसी सम्बन्धी ने अपने प्रिय सम्बन्धी से उसके ज़िबह और क़त्ल के बारे में मशवरा किया है ? कब कभी दयालु और आशिक़ बाप ने अपने कलेजे के टुकड़े (पुत्र) के सामने यह योजना पेश की है ? हर औलाद वाला ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर पूछो बेटा भी किस बाप का था ? तुरंत तैयार हो गया और प्रार्थना की, "अब्बा जान ! आँखों पर पट्‌टी बान्ध लिजिए, ऐसा न हो कि ठीक समय पर मेरा चेहरा देखकर आप की हिम्मत जवाब दे जाए। बाप ने आँखों पर पट्‌टी बान्ध ली, खुदा जाने दिल पर कौन सा पत्थर रख कर हलक़ पर छुरी चलाई। अचानक अल्लाह की कुदरत से आँख के तारे को स्थान एक भेंड़ ने लिया और छुरी के फेरने वाले ने छुरी फेरी इसमाईल के गले पर लेकिन चली वह इस ग़ैबी (अज्ञात) भेढ़े के गले पर और इसमाईल अलै० "ज़िब्हे अज़ीम" का परवाना पाकर ज़िन्द-ए-जावेद हो गए।

आज की कुर्बानी या यादगार हैं उसी "ज़िबहे अज़ीम" (महान कुर्बानी) की। इस्लाम के पूर्व काल को छोड़िये खुद इधर चौदह सौ वर्षो के भीतर जितनी कुर्बानियां हिन्दुस्तान, अफ़ग़निस्तान तुर्की ईरान मिस्त्र, अरब और सारी इस्लामी दुनिया में हो चुकी हैं उनका हिसाब किताब, हिसाब लगाने वाले और गिनती करने वालों के बस की बात नहीं लेकिन ज़िब्हे अज़ीम की शान ही निराली है, कि अल्लाह खुद जिसे "बड़ी" कुर्बानी कह कर पुकारे कौन उसकी बड़ाई की थाह पा सके कौन उसकी, उसके और महानता का आँकलन कर पाए ?

अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी

□□□

सुबहानल्लाह

(मौ० मु० सानी हसनी)

हम्द सरा हैं सुम्बलो रैहाँ ☆ अंजुमने माहो मेहरेताबाँ
शमए शबिस्तां सुबहे दरख़्शाँ ☆ जिन्नो मलाइक इंसां हैवाँ
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
सेहने गुलिस्तां की हरयाली ☆ पत्ता पत्ता डाली डाली
कुमरीव बुलबुल गुचलींमाली ☆ सबके लबों पर ज़िकरे जमाली
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
ज़िक्र यही है मुर्ग़े चमन का ☆ लाला व गुल का सर्व्व समन का
नील व फरात व गंग व जमन का ☆ साहिलो तूफां को हो दमन का
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
आंधी बारिश जिबली बादल ☆ दरया सहरा गुलशन जंगल
फूल कली फल गुंचा कोयल ☆ नगमा सरा हैं हरदम हर पल
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
महवे सना फ़िक्रो सुलतानी ☆ हाज़िर व गायब बाकी व फ़ानी
क़ौलो अ़मल अलफाज़ो मआनी ☆ आग व हवा और मिट्टी पानी
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
हम्द सरा और मस्तव ग़ज़लख़्वां ☆ तौरात इंजील और यह कुआँ
हूरो ग़िलमाँ मालिक व रिज़वाँ ☆ हर दिल शादाँ हर लब खन्दाँ
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
शिबली व राज़ी हाफ़िज़ो जामी ☆ हिन्दी व तुरकी मिस्री व शामी
बे कस व आजिज़ नामी गिरामी ☆ सबके लबों पर ज़िक्र दवामी
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला
उसकी बलन्दी उसकी पस्ती ☆ देन है उसकी कैफ़ो मस्ती
बज़्म है उसकी बज़्मे हस्ती ☆ ज़िक्र है उसका बस्ती बस्ती
अल्लाह अल्लाह सुबहानल्ला ☆ सुबहानल्ला सुबहानल्ला

□□□

आपकी समस्याएँ और उनका हल

- मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न- क्या गैर मुस्लिमों से खाने पीने की चीज़े अथवा क़र्ज़ आदि लेना जायज़ है?

उत्तर- गैर मुस्लिमों के साथ लेन देन का मामला करना जायज़ है।

प्रश्न- मैं एक ऑफिस मे नौकर हूँ और जब ऑफिस के काम के लिए फोटो कापी करवानी होती है तो चपरासी 2 कापी के बजाय 4 कापी की रसीद बनवा कर लाता है और मुझे एक फार्म पर इस रसीद के साथ बड़े अफसर से तस्दीक करवानी पड़ती है क्या इस गुनाह में मैं भी शामिल हूँ, जबकि मैं इसमें से एक पैसा भी नहीं लेता ?

उत्तर- गुनाह में मदद करने की वजह से आप भी गुनहगार है, दूसरों की दुनिया के लिए अपनी आखिरत बर्बाद करते है।

प्रश्न- एक व्यक्ति अपनी ज़मीन की नाप और नक्शा की सीमा से बढ़ कर अपने पड़ोसी की ज़मीन में जो कि उसकी नाप व नक्शा के मुताबिक हो उसमें घुस कर अपना मकान बना लेता है और इस तरह अपनी जमीन बढ़ा कर अपने पड़ोसी की जमीन कम कर देता है इस्लाम की नजर में यह व्यक्ति कैसा है?

उत्तर- हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया जिस व्यक्ति ने किसी की एक बालिश्त ज़मीन पर भी नाहक़ कब्ज़ा कर लिया तो क़ियामत के दिन सात परत ज़मीन को तौक बनाकर उसके गले में पहनाया जाएगा

(बुखारी)

इस्लाम के अनुसार ऐसा व्यक्ति खयानत करने वाला है।

प्रश्न- सरकारी ऑफिसों में यह एक रिवाज सा बन गया है कि जिस तरह भी अच्छा काम करें। लेकिन आफीसर साहिबान अपना कमीशन ज़रूर लेते है, बिना कमीशन आप का काम जितना भी सही हो और चाहे हुकूमत के शिड्यूल के मुताबिक हो फिर भी काम नामन्जूर हो जाता है और अगर कमीशन न दो तो ठेकेदारी छोड़नी होगी जबकि ठेकेदारी मेरी मजबूरी है इस सूरत में कमीशन देना कैसा है और मेरा ठेकेदारी का कमाया हुआ रुपया कैसा है ?

उत्तर- यह भी रिश्वत है अगर अत्याचार से बचने और अपना हक़ लेने के लिए रिश्वत दी जाए तो उम्मीद है कि देने वाले पर पकड़ न होगी लेकिन लेने वाला हर हाल में हराम खाएगा।

प्रश्न- ठेके में कुछ आफीसर उेकेदार से काम बढ़ाकर बिल बनवातें हैं, जैसे खुदाई 80 फिट हुई है और आफिसर 100 फिट का बिल बनवाकर उस के पैसे देते हैं यह 20 फिट के पैसे कैसे है ?

उत्तर- 20 फिट की जो रक़म ली गई है वह हराम है।

प्रश्न- किसी बिल्डिंग आदि के बनाने का या कोई चीज़ भी जिसमें फायदा नुकसान दोनों का अन्देशा हो ठेका करना जाइज़ है या नहीं इसलिए कि कभी-कभी इसमें बहुत फायदा हो जाता है, और कभी नुकसान।

उत्तर- ऐसा ठेका जाइज़ है।

प्रश्न- रेज़गारी बदलने में कम ज़ियादा करना जाइज़ है या नहीं ?

उत्तर- रेज़गारी बदलने में कम ज़ियादा करना जाइज़ नहीं।

प्रश्न- हम लोग सब्ज़ी का काम करते हैं आप को मालूम है कि सब्ज़ी पर पानी डाला जाता है उन में सब्ज़ियाँ ऐसी भी हैं जो बहुत पानी पीती है क्या ऐसा काम करना सही है ?

उत्तर- कुछ सब्जियाँ हकीकत में ऐसी है कि उन पर पानी न डाला जाए तो खराब हो जाती है इसलिए जरूरत की बिना पर पानी डालना तो सही है, और खरीदार देख रहा है कि सब्ज़ी पर पानी पड़ा है, लिहाज़ा उसके बेचने में कोई हरज नहीं।

●●●

बीते हुए 38 वर्षों से प्रकाशित होने वाला प्रिय उर्दू मासिक पत्र
नदवतुल उलमा का द्विभाषी,
अर्धमासिक "तामीरे हयात" लखनऊ।
वैज्ञानिक, साहित्यिक, धार्मिक लेख, वर्तमान स्थिति की समीक्षा तथा मार्गदर्शन।
वार्षिक अनुदान रु० 150/- मात्र
मैनेजर दफ़्तर तामीरे हयात पो०बा० नं० 93
नदवतुल उलमा, लखनऊ

बचपन से ही दाँतों की देखभाल जरूरी

दाँत का मानव स्वास्थ्य से गहर संबंध है। दाँत को "गेट वे ऑफ हेल्थ" अर्थात् "स्वास्थ्य का द्वार" भी कहा जाता है। हमारा स्वास्थ्य खान-पान पर निर्भर करता है और खान-पान, पाचन प्रक्रिया सीधा दाँतों पर आश्रित है।

स्वास्थ्य के साथ-साथ ये 32 दाँत मनुष्य की सुन्दरता और व्यक्तित्व को निखारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। सभी जानते हैं कि दाँत मानव शरीर के लिए बहुत उपयोगी है। उसके बावजूद भी ये अक्सर 'अपेक्षित भाग' में गिने जाते हैं। दाँत दर्द, कीड़ा लगने से पीक, खून, सूजन आने तक की सभी बीमारियों को इन्सान छोटी-छोटी बातें कहकर टालता रहता है सही समय पर यदि इनका इलाज न कराया जाये तो यही बिमारियाँ बढ़ जाती हैं और इलाज भी लम्बा चलता है। इसलिए दाँतों की देखभाल के प्रति देखभाल का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हम इस लेख के माध्यम से आपको दाँतों को स्वस्थ व निरोग बनाये रखने की पूर्ण जानकारी दे रहे हैं।

मानव शरीर में दाँतों की भूमिका

स्वस्थ और मजबूत दाँत मानव शरीर में एक अहम भूमिका निभाते हैं। अधिकतर लोग इस गलतफहमी का शिकार रहते हैं कि दाँत सिर्फ खाने-पीने में मदद करते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। दाँत भोजन संबंधी प्रक्रिया से लेकर मनुष्य के व्यक्तित्व तक अपनी छाप छोड़ते हैं। इसके महत्व को मोटे तौर पर चार भागों में बांटा जा सकता हैं

1. भोजन करने में
2. बातचीत में
3. खूबसूरत लगने में
4. अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में दाँतों का सहयोग।

भोजन का दाँतों से संबंध तथा इसके प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव

भोजन और दाँत का सीधा संबंध है। हम जैसा भोजन खायेंगे, दाँत भी वैसे ही बनेंगे। बचपन में बच्चे के दाँत पूरी तरह से माँ की खुराक पर निर्भर करते हैं। इसीलिये माँ को दूध, दही, हरी सब्जियाँ आदि पर्याप्त मात्रा में खानी चाहिए ताकि बच्चे में केल्शियम व फास्फोरस की कमी न हो। बच्चे को ऊपर का दूध व दही भी देना चाहिए। यदि बचपन में बच्चे की खुराक में कोई कमी रह जाती है तो दाँत निकलने में देरी हो सकती है, उनके टूटने के बाद पक्के दाँत निकलने होते हैं। इसीलिए बच्चे को हरी सब्जी फल, दालें आदि खिलानी चाहिए। बड़े होने पर सख्त भोजन लेना चाहिए। खाना अच्छी तरह से पचना चाहिए। खाने के बाद दाँत अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए। अन्यथा दाँत में कीड़ा लगने की पूरी आशंका बनी रहती है।

कुपोषण का असर

दंत स्वास्थ्य पर कुपोषण का असर धीरे-धीरे दिखाई देता है। विटामिन C व B कॉम्प्लैक्स की कमी से दाँतों से खून आने लगता है। मुँह और जीभ में छाले आ जाते हैं। मसूढ़े कमजोर होने लगते हैं। आयरन व खून की कमी भी दाँतों के लिए हानिकारक है। हड्डी कमजोर हो जाती है। दाँत हिलने लगते हैं और जल्दी ही गिरने लगते हैं। कुपोषण की कमी को दूर करने पर दाँत पहले जैसे स्वस्थ व मजबूत हो सकते हैं।

बचपन से ही दाँतों के प्रति सावधानी

दरअसल जो माँ-बाप बच्चे के दूध के दाँतों के प्रति लापरवाही बरतते हैं, उनके बच्चों को बड़े होकर दंत संबंधी कई बीमारियों का शिकार होना पड़ता है। इसीलिए बचपन से ही दाँतों के प्रति सावधान होना चाहिए। बचपन में बच्चा जो खाना चबाता है उससे हड्डी का व्यायाम शुरू हो जाता है। व्यायाम से हड्डी बढ़ती है और वह एक आकार ग्रहण करने लगती है।

दूध के दाँत पक्के दाँतों के लिए जगह बनाते हैं। अगर ये खराब हो जायें तो आने वाले दाँतों को बाहर निकलने के लिए सही स्थान नहीं मिलेगा। ऐसी स्थिति में पक्के दाँत टेढ़े-मेढ़े, आगे या पीछे निकल आते हैं।

मीठा हमेशा दाँतों के लिए नुकसानदायक है। कभी-कंभी बच्चों को टॉफी या दूसरी मीठी चीजों के स्थान पर च्विंगम, बबुलगम देना चाहिए। इसके खाने से मुँह में थूक बनता रहता है जोकि दाँत को साफ करता है। इसके अतिरिक्त मीटे पदार्थ से ग्लूकोज व शुगर होता है जोकि दाँतों के साथ चिपका रहता है। मुँह में कीटाणु होते हैं और ग्लूकोज व शुगर उन कीटाणुओं के साथ मिलकर तेजाब बनाते हैं। तेजाब दाँत को काटता है जिससे कीड़ा और छेद लगना शुरू हो जाता है।

इसीलिए बचपन से ही दाँतों के प्रति आँख बन्द नहीं कर लेनी चाहिए। बल्कि उनकी उचित देखभाल के लिए खासतौर पर ध्यान देना चाहिए।

दाँतों की बीमारियाँ

दाँतों की बीमारी को दो भागों में बाटा जा सकता है-

1. दाँतों का सड़ना
2. गलना तथा मसूढ़ों की सूजन

1. पहली बीमारी तब शुरू होती है, जब हम खाने के बाद दाँत साफ नहीं करते। ऐसी स्थिति में बचा हुआ खाना हमारे दाँतों में फँसा रह

जाता है। दाँतों में फँसा हुआ खाना और मीठा मुँह में कीटाणुओं के साथ मिलकर तेजाब पैदा करते हैं। वहीं तेजाब दाँतों की ऊपरी परत यानि इनेमल पर बुरा असर करता है। इससे एक छेद जिसे 'केविटी' भी कहते हैं बन जाता है और उसमें तेजाब इकट्ठा होना शुरू हो जाता है, और यह केविटी आगे बढ़ती जाती हैं और परत से डेन्टीन तक और फिर नर्व तक पहुंच जाती है। अगर वह केविटी जड़ तक पहुँच जाये तो दाँत निकालना पड़ सकता है।

2. मसूढ़ों की सूजन को "जीजेवाइट्स" भी कहा जाता है। यह एक आम बीमारी है। यह तीव्र या पुरानी भी हो सकती है। तीव्र होने की स्थिति में बहुत ज्यादा दर्द और छूने से भी खून आना शुरू हो जाता है। यही तीव्र दर्द कुछ दिनों बाद चिरंकालिक "जिजजेवाइकस" में बदल जाता है। इसमें मसूढ़े सूज जाते हैं और दाँत साफ पर भी खून आना शुरू हो जाता है। मुँह में बदबू आने लगती है।

मसूढ़ों से जुड़ी एक बीमारी "पायरिया" भी है। यह भी दाँत साफ न करने से होती है। भोजन करने के बाद दाँत साफ ने करने की स्थिति में बचा हुआ भोजन मुँह के कीटणु व दूसरे पदार्थ मिलकर एक ऐसी परत बनाते हैं जिसे "प्लाक" कहा जाता है। यही प्लाक जमनी शुरू हो जाती है। अगर इसे हटाया न जाए तो यह सख्त होकर मसूढ़ों के साथ-साथ दाँतों पर भी जम जाती है जिसे "टारटर" कहते हैं और यही बीमारी धीर-धीरे दाँत की हड्डी तक पहुँचना शुरू कर देती है, और उसमें से खून के साथ-साथ मवाद निकलना शुरू हो जाता है। इसे ही "पायरिया" कहा जाता है।

बीमारियों से बचाव

दाँतों की बीमारियों से बचने के लिए पाँच विशेष बातों का ध्यान रखना होगा-

1. विटामिन और खनिज युक्त भोजन करना चाहिए।
2. दो खानों के बीच में मीठी चिपकने वाली वस्तुएँ नहीं खानी चाहिए।
3. भोजन करने के बाद ब्रुश से दाँत साफ करने चाहिए।
4. दाँत साफ करने के लिए सही चीजें इस्तेमाल करनी चाहिए।
5. रोग होते ही दन्त चिकित्सक के पस अवश्य आना चाहिए।

अन्य सावधानियाँ

1. दाँत के दर्द में फिटकरी का कुल्ला और लौंग के तेल का इस्तेमाल करना चाहिए।
2. बसों व रेलों आदि में बिकने वाली दवाइयों का प्रयोग नहीं करना चाहिए यह खतरनाक एवं जानलेवा स्थिति है इससे बचना चाहिए।
3. दाँतों के ऊपर पीलेपन की, मशीन से सफाई करा लेनी चाहिए। कुछ लोगों को भ्रम है कि इससे दाँत कमजोर पड़ जाते हैं, लेकिन यह गलत धारणा है। सफाई कराने से तो दाँतों का इन्फैक्शन खत्म हो जाता है।
4. कई बार दाँत ऊँचे निकल आते हैं। ऐसी स्थिति में तार लगवा लेना चाहिए। इससे दाँत सही जगह पर आ जाते हैं। उनकी मजबूती भी पहले जैसी ही रहती है।
5. कुछ लोग नकली दाँत लगवाने से घबराते हैं। लेकिन नकली दाँत लगवाने से घबराना नहीं चाहिए। अगर एक दाँत टूट जाता है। डाक्टर की सलाह के बाद नया दाँत लगवा लेना चाहिए। दाँत न लगवाने से आस-पास के दाँत ढीले पड़ने शुरू हो जाते हैं। दाँतों के बीच की दूरी बढ़ने लगती हैं। बोलने मे बाधा पैदा होती हैं। नकली दाँत पूरे लगवाने में भी कोई हानि नहीं है।

इस प्रकार हमें दाँतों की पूर्ण देखभाल करनी चाहिए। लोगों को दन्त-स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना चाहिए। उसके लिए सार्वजनिक सभाएं होनी चाहिए। स्कूलों में बच्चों को बताना चाहिए। मीडिया भी इसमें एक बड़ी भूमिका निभाता है। बचपन से ही दाँतों की देखभाल बहुत आवश्यक है।

डॉ० राकेश अग्रवाल

प्रधान सम्पादक, आरोग्यधाम

●●●

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

यकीं मुहकम अमल पैहम महब्बत फातिहे आलम

दावते फिक्र व अमल, वसीयतें और हिदायात ताज़ियती पैग़ामात तब्सिरे और ख़िराजे अक़ीदत खूबसूरत अक्से तहरीर और मुसलसल सदाए हक़ के नमूने इजमाली ख़ाका और तसानीफ़ की मुकम्मल फ़िहरिस्त

अरबी, उर्दू, अंग्रेज़ी और हिन्दी

चारों ज़बानों में

ब्राह रास्त इन्टरनेट पर मुलाहज़ा फ़रमायें।

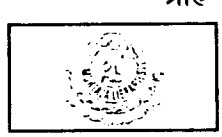

ww.nadwi.net

पेशकर्दा

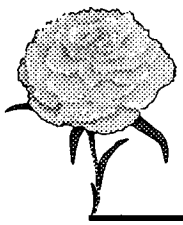

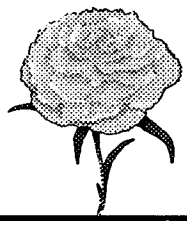

कुदरत का इनआम

गुलाब का फल

पतझड़ के मौसम के शुरु में या पहले पाले के बाद गुलाब के फूल की पत्तियाँ मुर्झा कर झड़ने लगती हैं उसके बाद गुलाब का पौधा अपने गोल-मोल सुन्दर चिकने फलों की वजह से और ज़्यादा सुन्दर मालूम होता है, यह फल पक कर तैयार हो जाते हैं, उसके फूलों की खुशबू बहुत भली होती है तो उसके फल जिंदगी बख़्श होते है एक औन्स गुलाब के फल में एक औन्स नारंगी के रस से 23 गुना ज़्यादा हयातीन (Vitamin C) होती है और इसमें इतनी ही हयातीन अ (Vitamin A) होती है जितनी गाजर में होती है और उसमें बड़ी मात्रा में बायूफ्लूनाइड होती है और हयातीन ब (Vitamin B) से मिली हुई दो अहम किस्में रायबे फिलेविन और फोलिट होती हैं।

केवल तीन दूसरे फल हयातीन ज (Vitamin C) की मात्रा के मामले में इसके मुक़ाबिल हो सकते हैं एक इकरौला चीरी दूसरे कामो-कामो फल जो आमेज़न दरिया के ऊपरी भाग में पाया जाता है और तीसरे केवी फ्रूट जो उत्तरी चीन और जापान में होता है चूंकि गुलाब के फल में नारंगी से कहीं ज्यादा मात्रा में विटामिन सी पायी जाती है इसलिए रूसियों ने इसकी खेती शुरू कर दी दूसरे विश्व युद्ध के समय जबकि नारंगी लेमू और टमाटर से लदे हुए जहाज बरतानिया भेजे जाते थे जंगी सामान के लिए प्रयोग किये जाने लगे तो इस्काट लैंड के लोगों ने 30 मिल्यन और उसका शरबत तैयार करके मेडिकल वालों के हाथ बेच दिया।

आजकल गुलाब का शरबत अस्ली शक़्ल में विटामिन सी (ज) के लिए बहुत कम प्रयोग किया जाता है। क्योंकि इस हालत में इस का इस्तेमाल मुश्किल है हयातीन (ज) के 500 मिलीग्राम जमीमे के लिए सुफूफ को जिस मात्रा में खाना पड़ता है उसका निगलना तकलीफ़ देह होता है लेकिन विटामिन बनाने वाले अब भी गुलाब के सुफूफ को विटामिन सी और दूसरी चीजों के लिए इस्तेमाल करते हैं अब भी गुलाब को दूसरी चीज़ों में इस्तेमाल किया जाता है। सुफूफ और शरबत के अलावह इससे शोरबा, जाम मुरब्बा, शराब, शहद, चाय, जूस, सिरका और दूसरी कई चीज़े तैयार की जाती है चूंकि गुलाब में विटामिन (अ) और विटामिन सी बड़ी मात्रा में पाई जाती है इसलिए यह दोनो बहुत लाभदायक है चुनांचि बुखार को तोड़ने और नज़ला, ज़ुकाम और खांसी के इलाज में यह बहुत फायदेमंद है।

विभिन्न शक़्लों के अन्दर साढ़े तीन औन्स गुलाब के फल में निम्नलिखित मिलीग्राम विटामिन सी पाई जाती है।

✤ सुफूफ	4.21 मिलीग्राम
✤ रस	448 मिलीग्राम
✤ शहद	225 मिलीग्राम
✤ जाम मुरब्बा	180 मिलीग्राम
✤ शोरबा	615 मिलीग्राम
✤ सूखा गुलाब	250 मिलीग्राम
✤ जेली	220 मिलीग्राम
✤ शोरबा	74 मिलीग्राम

पश्चिमी लोगों को विटामिन सी की खोज के बाद से गुलाब की कदर हुई है तिब्बे इस्लामी की यह हमेशा से बड़ी महबूब और अधिकाधिक प्रयोग की यह हमेशा से बड़ी महबूब और अधिकाधिक प्रयोग में आने वाली दवा है गुलाब के फल का प्रयोग तो तिब्ब में नही था मगर गुलाब का इस्तेमाल बहुत था और अब भी है इसको बहुत सी शक्लों में इस्तेमाल किया जाता है। गुलाब का निचोड़ा हुआ अर्क न केवल दवा के लिए बल्कि ग़िज़ा में भी प्रयोग होता है इसके प्रयोग करने की एक और शक़्ल बहुत आम है जिस को गुलकंद कहते हैं इसको आज की ज़बान में जाम या जेली कहा जा सकता है यह न तो मज़े में किसी जाम या जेली से कम है और न दिल व दिमाग़ को फ़रहत बख़्शने में। इसी तरह यह मेदा और कब्ज़ की बेहतरीन दवा है। इन तमाम खूबियों के साथ खुशबूदार भी है इसका इस्तेमाल कम होना आश्चर्य के साथ अफ़सोसनाक भी है हांलाकि इसकी तैयारी बहुत आसान है दवा में इस का बहुत इस्तेमाल होता है जिसके लिए पूरे लेख की जरूरत है इसका तिब्ब की बड़ी अहम दवाओं में इस्तेमाल होता है। अब हम कुछ दिनों से देखते है कि इसका इस्तेमाल बहुत कम होता जा रहा है हमारे हिसाब से यह कोई अच्छा रुजहान नहीं है अजीब बात है कि पश्चिमी देशों में बूटियों और पौधों के इस्तेमाल अस्ली और कुदरती हालत में जोशांदो और शीरा की शक्लों में बराबर होता है पिछले कुछ सालों से किमियाई दवाओं की बड़ी तारीफ़ की जाने लगी थी और उस पर बड़ा गर्व किया जाता था लेकिन नये-नये मर्जो की वजह से अब साइंस दानो की भी आखें खुलती जा रही है और इस्लामी तिब्ब की खूबियाँ उनको नज़र आने लगी है नहीं कहा जा सकता कि एक बार फिर कम से कम दवाओं के मामले में तिब्ब के नियमों को प्राथिमिकता दी जाने लगे, अस्ली बात यह है कि इस राह को अपनाने में तिजारती फ़ायदे तन आसानी और जल्दबाज़ी के साथ पेशावाराना नियतें रोक बनी हुई हैं।

●●●

मछलीवाले नबी

- अफ़ज़ल हुसैन

नाव देर से डाँवाडोल हो रही थी और अब विश्वास हो गया कि अवश्य डूब जाएगी। कोई उपाय सफल होता हुआ प्रतीत नहीं होता था। नाविकों को अनुभव था कि जब कोई अपराधी और पापी व्यक्ति नाव में सवार हो जाता था तब इसी तरह जीवन के लाले पड़ जाते थे। वे बोले 'हमारी नाव में अवश्य कोई अपराधी है।' सबने अपने-अपने मन में सोचा परंतु किसी को अपना कोई अपराध याद नहीं आया। सब चुप थे, और नाव के डूब जाने का विश्वास निरन्तर बढ़ता जा रहा था। नाव के एक यात्री ने कहा, "अपराधी मैं हूँ, मुझे नाव से नीचे पानी में फेंक दो, जिससे नाव बच जाए।"

"नहीं-नहीं, मल्लाहों ने कहा, "हम जानते हैं आप सज्जन हैं। हमने सुना है, आप बस्ती में लोगों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया करते हैं। आप तो ईश्वर के सन्देष्टा हैं, यहाँ और कोई व्यक्ति है जो अपराधी है।"

"अच्छा आओ, चिट्ठी डाल लें, "किसी ने कहा, "नहीं, अपराधी मैं ही हूँ," सन्देष्टा ने कहा, "नहीं-नहीं, हम चिट्ठी डालेंगे, हम ऐसे सज्जन को जल में नहीं डूबने देंगे।"

सबके विस्मय की सीमा न रही, चिट्ठी में सन्देष्टा का ही नाम निकला था।

सन्देष्टा ने कहा, "मैंने अपने स्वामी की आज्ञा और अनुमति के बिना बस्ती को छोड़ दिया है। मैं बस्तीवालों से निराश हो गया। मैंने उन्हें शाप दिया, मैं उन्हें छोड़कर चला आया। मैं ही ऐसा युवक हूँ, जो अपने स्वामी के बताए हुए कार्य को छोड़कर भाग आया हूँ, अवश्य ही मैं अपराधी हूँ।

सब एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। नाव बार-बार झोंके खा रही थी, हर झोंके पर जान पड़ता था, अब डूबी, अब डूबी। एक के लिए सबकों नहीं डूबोया जा सकता था। सबने यही निर्णय किया कि जिसके नाम चिट्ठी निकली है, उसे नदी में फेंक दिया जाए। सन्देष्टा को नदी में फेंक दिया गया। उनका नाम यूनुस (अलैहिस्सलाम) था।

नदी में फेंकते ही हज़रत यूनुस (अ०) को एक बड़ी मछली ने निगल लिया। वहाँ घोर अंधकार था। कदाचित्, ऐसा घना अन्धकार कभी किसी न देखा हो। एक तो अंधेरी रात, नदी का गहरा जल और फिर मछली का पेट। भला ऐसे समय मछली के पेट में प्रकाश का क्या काम, और फिर चिन्ता और पश्चाताप की काली घटाएँ तथा स्वामी की अप्रसन्नता का भय। इस घटाटोप अन्धकार में यूनुस (अ०) ने अपने स्वामी को पुकारा : "हे स्वामिन् ! तेरे अतिरिक्त और कोई ऐसा नहीं है जिसे विपत्ति में पुकारा जाए, जिससे कल्याण की आशा की जाए, जो कठिनाइयों को दूर कर सके, जो आवश्यकताओं की पूर्ति कर दे, तू दोष से सर्वथा मुक्त है। यह तेरा अनुग्रह ही है कि मछली ने मुझे निगल लिया और मैं जीवित हूँ, मैं जल में नही डूबा। मछली के पेट मे मेरा दम नहीं घुटा। इस अंधकार में भी मुझ में चेतना-शक्ति अवशिष्ट है। निःसन्देह मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया। मैंने ही तेरी आज्ञा की प्रतीक्षा किए बिना अपनी जाति का परित्याग कर दिया। मुझसे तेरी आज्ञा का बड़ा उल्लंघन हुआ। मैं लज्जित हूँ, अब तू ही कृपा करे तो मैं इस विपत्ति से छूट सकता हूँ।"

ईश्वर ने यूनुस (अ०) की प्रार्थना सुन ली उन्हें विपत्ति से मुक्त कर दिया। मछली ने उन्हें नदी के तट पर आकर उगल दिया। युनूस (अ०) पुनः सूर्य के प्रकाश में और उन्मुक्त वायु में आ गए। उन्होंने अपने स्वामी के प्रति कृतज्ञता का प्रकाशन किया। ईश्वर अपने भक्त जनों को इसी प्रकार विपत्ति से मुक्त करता है। सत्य तो यह है कि वह परम कृपालु है, उससे अधिक दयावान और कोई नहीं। ☐☐☐

दुआ

दिन और रात बनाने वाले।
हमको सच्ची राह दिखा दे।।
नील गगन में हँसते तारे।
झरने और नदियों के धारे।।
पर्वत हैं जितने ही ऊँचे।
सागर हैं उतने ही नीचे।।
तूने ही है धूप बनायी।
चाँद बनाकर रात सजायी।।
सुन्दर फूल खिलाने वाले।
हमको सच्ची राह दिखा दे।।
बादल से पानी बरसाया।
धरती से है अन्न उगाया।।
तू ही है बस सिरजनहारा।
तू ही है बस पालनहारा।।
दीन-दुखी का तू ही दाता।
जो माँगे वह तुझ से पाता।।
अपना कोष लुटाने वाले।
हमको सच्ची राह दिखा दे।।

-ज़फ़र अली ख़ाँ

☐☐☐

TAFI

अभिजीत सेन

IATA
Approved Agents

हॉलीवुड (इण्डिया) ट्रावल्स

29, हज़रतगंज, लखनऊ

टेलीफैक्स : 0522-201362 फोन : 226559, 275390

ई–मेल : hollywood@hotmail.com

अथोराइज्ड एजेन्ट :

✦ इन्डियन एअरलाईन्स ✦ जेट एअरवेज

✦ सहारा एअर लाईन्स

आल इन्टरनेशनल एअर लाईन्स, डोमेस्टिक इन्टरनेशनल पैकेज, वीज़ा और पासपोर्ट असिस्टेन्स